धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

नवम्बर–2015 | संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. | हिन्दी मासिक

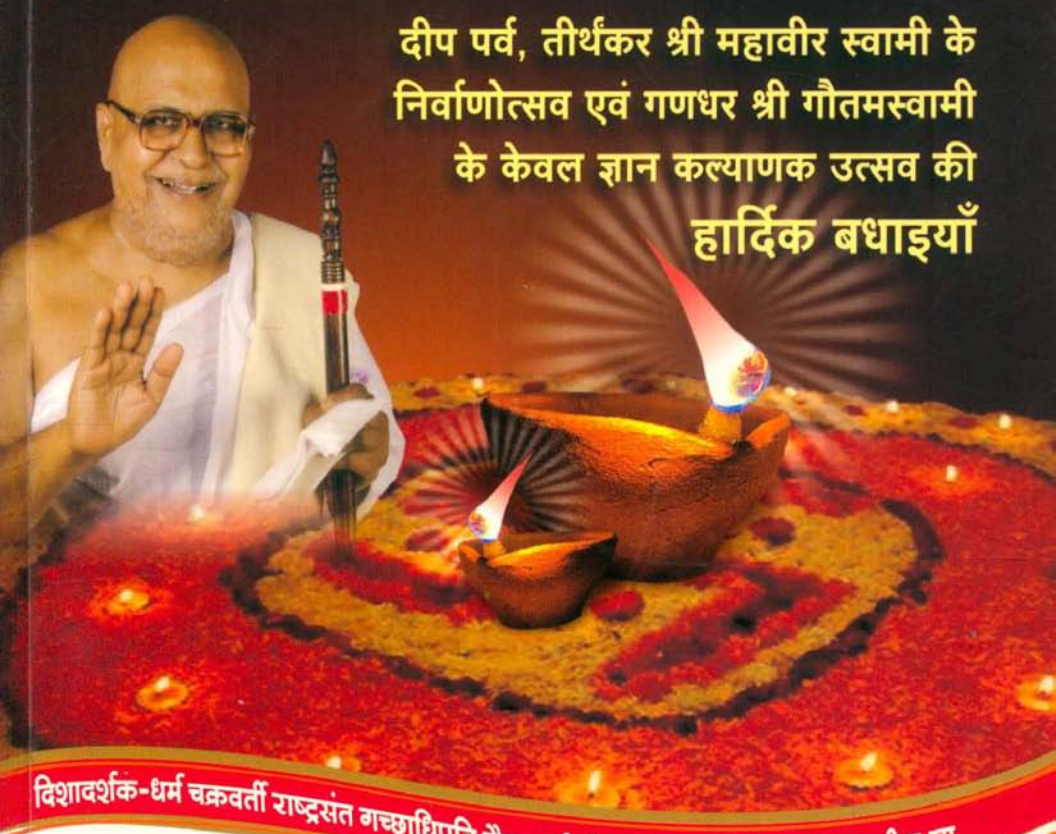

दीप पर्व, तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी के निर्वाणोत्सव एवं गणधर श्री गौतमस्वामी के केवल ज्ञान कल्याणक उत्सव की हार्दिक बधाइयाँ

दिशादर्शक-धर्म चक्रवर्ती राष्ट्रसंत गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.

युग प्रभावक सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के सानिध्य में शासन प्रभावना के कार्यक्रम

- पेपराल में गुरुदेव राष्ट्रसंत सा. के सान्निध्य में अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन तरूण परिषद का अधिवेशन दिनांक 21 नवम्बर तथा नवयुवक एवं महिला परिषद का 22 नवम्बर को वार्षिक सम्मेलन का आयोजन
- कार्तिक कृष्णा 30 बुधवार दिनांक 11 नवम्बर 2015 दीपावली
- कार्तिक शुक्ल 1 गुरूवार दिनांक 12 नवम्बर 2015 श्री गौतम गणधर केवल ज्ञान दिवस
- कार्तिक शुक्ल 2 शुक्रवार दिनांक 13 नवम्बर गुरूदेव श्रीमद् यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. का जन्म दिवस
- कार्तिक शुक्ल 5 सोमवार दिनांक 16 नवम्बर ज्ञान पंचमी
- कार्तिक शुक्ल 15 बुधवार दिनांक 25 नवम्बर-कार्तिक पूर्णिमा/चातुर्मास समाप्ति श्री सिद्धाचल, श्री लक्ष्मणीजी, श्री भांडवपुर, श्री तालनपुर, श्री राजेन्द्रनगर (नैल्लौर) आदि तीर्थों पर मेले

विशिष्ट सहयोगी

1. श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी जैन ट्रस्ट, चैन्नई (तमिलनाडु)
2. श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट मंडल, विजयवाड़ा (आंध्रप्रदेश)
3. श्री सांचा सुमतिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मदुराई (तमिलनाडु)
4. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, त्रिचनापल्ली (तमिलनाडु)
5. श्री सुविधिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मैसूर (कर्नाटक)
6. श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्र जैन श्वे. ट्रस्ट, गुंण्टुर (आंध्रप्रदेश)
7. श्री राजेन्द्र सूरि जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट, सायला (राजस्थान)
8. श्री सायला जैन श्रीसंघ, सायला (राजस्थान)
9. श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक संघ नारोली (ता. थराद, गुजरात)
10. श्री शंखेश्वर पार्श्व राजेन्द्र जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, दावणगेरे (कर्नाटक)

श्री राजेन्द्रसूरि कीर्ति मन्दिर तीर्थ ट्रस्ट

हमारे गौरव

ट्रस्टीगण महाप्रभावक गुम्मीलेरू तीर्थ

राजस्थान

राष्ट्रसंत श्री के पूज्य माता-पिता स्वरूपचंदजी धरू एवं पार्वतीदेवी

जैन रत्न श्री गगलदासभाई हालचंदभाई संघवी, अहमदाबाद

शा.तगराजजी जेठमलजी हिराणी रेवतड़ा, बैंगलोर

शा. किशोरचंदजी खिमावत खिमेल, मुम्बई

शा.जेठमलजी लादाजी चौधरी गदसिवाणा, बैंगलोर

शा. मिश्रीमलजी उकाजी सालेचा धाणसा, बैंगलोर

संघवी सांकलचंदजी इन्द्रजी वेदमुथा बैंगलोर

श्री शांतिलालजी रामाणी गुडाबालोतरा, नेल्लोर

शा. माणकचंदजी छोगाजी बालर बैंगलोर

शा. हजारीमलजी गजाजी बंदामुथा

मांगीलालजी शेषमलजी रामाणी गुडाबालोतरा, नेल्लोर

शंकरलालजी आईदानजी गांधी नेल्लोर

चंपालालजी बालचंदजी चरली

श्री धेवरचंदजी एल. जोगाणी, मुम्बई भीनमाल

श्री शेषमलजी गुलाबचंदजी जैन बागरा

श्री हीराचंदजी कानाजी गुंदर (सियाणावाला)

श्री लालचंदजी सोनाजी संघवी धाणसा (राज.) विजयवाड़ा

स्व. सोलंकी चन्दनमलजी हीराजी आहोर विजयवाड़ा

श्री शांतिलालजी सोलंकी जालोर विजयवाड़ा

श्रीमती मोतीबाई पति स्व.श्रीरामलालजी तलतगढ, मुम्बई

श्री बाबूलालजी गुण्दूर

कबदी जीतमलजी कुंदनमलजी सायला

भंडारी वस्तीमलजी खीमाजी विजयवाड़ा, आहोर

शा. रिखबचंदजी सरूपाजी सोफाडीया, रेवतडा

भंडारी पीरचंदजी केवलचंदजी बागरा

स्व. शा ओटमलजी गोराजी वेदमुथा, रेवतडा

शा. पारसमलजी हस्तीमलजी भंडारी, सायला

स्व. शा. गुमानमलजी धुकाजी मोदी, धानसा

मुथा उदयचंदजी जवाजी धाणसा

शा पुखराजजी फूलचंदजी दुगानी, मोदरा, विजयवाड़ा

शा. धेवरचंदजी हंजाजी संघवी, धाणसा

शा. सरेमलजी गेनाजी सियाणा, विजयवाड़ा

शा. छगनराजजी मांडोत गुन्दुर

शा मोहनलालजी गोवानी चोराय्

शा. नरसाजी आसाजी वाफणा कोरा (राज.)

शा प्रतापचंदजी किसनाजी कटारिया संघवी अमरसर, सरत

शा. कालूचंदजी हंजाजी सकलेचा

शा. दगचंदजी हस्काजी सकलेचा

स्व. श्री मिश्रीमलजी भंडारी

शा. उत्तमचंदजी दगाजी सकलेचा

हमारे गौरव

32038

शा. नरेन्द्रकुमारजी रायचंदजी पोरवाल
बागरा

श्री चंदनमलजी जेठमलजी
बागरा

श्री सुखाराजजी केसाजी
मेंगलवा

श्री रतनचंदजी कुन्दनमलजी
मेंगलवा

श्री नथमलजी खुमाजी
बागरा

श्री जेठमलजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री सांवलचंदजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री दूधमलजी मानकचंदजी
मेंगलवा

श्री बाबुलालजी सरेमलजी
मोदरा

श्री छगनराजजी भानाजी गांधी
सियाना

शा.सुमेरमलजी वरदीचंदजी वाणीगोता
आहोर (राज.)

श्री संघवी मानमलजी वीरमाजी
दादाल

श्री कांतिलालजी मूलचंदजी नानावत
आहोर

शा. उकचंदजी हिमताजी हिराणी
रेवतड़ा

शा. ओपचंदजी जवाजी ओस्तवाल
सायला

श्री एम. फूलचंदजी शाह
दावणगिरी

शा. मोडमलजी जोईताजी बाफना
थलवाड नेल्लोर

मुथा थानमलजी कानाजी
आहोर विजयवाड़ा

स्व. सुखराजजी पिताजी कटारिया
संघवी धाणवसा विजयवाड़ा

संघवी भेरमलजी जेठाजी
मारवाड में अमरसर (सरत) विजयवाड़ा

सेठ भगराजजी कुनणमलजी
सांचोर

शा. फुलचन्दजी सुखराजजी गांधी
सियाणा यादगीरी

श्री राणमलजी हिमताजी
दादाल

श्री पुखराजजी नेकाजी कटारिया
संघवी, धानसा

सा सांवलचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा तिलोकचन्दजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा नसींगमलजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा पुखराजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा परकचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता अमरसर (सरत)

संघवी ज्ञा. मिश्रीमलजी विनाजी
पटियाल धानसा/बैंगलोर

श्री फुलचन्दजी सांकलचन्दजी
कोशेताव

डूंगरचंदजी सोलंकी
सायला (राज.)

मीठालाल मनोहरलालजी झोरा
दाणाल-कोयम्बतूर

श्री उम्मेदमलजी हरकचंदजी
बाफना, पांथेड़ी

श्री भंवरलालजी कुन्दनमलजी
संघवी, मोदरा (राज.)

पातीबाई वस्तीमलजी
कबदी, सायला

श्री ओटमलजी वर्धन
सायला

श्री जुगराजजी नाथाजी कबदी
सायला

श्री हेमराजजी कबदी
सायला

श्री हस्तीमलजी गांधीमूथा
सायला

श्री घेवरचंदजी गांधीमूथा
सायला

श्री चम्पालालजी गांधीमूथा
सायला

ज्ञा. धर्मचंदजी मिश्रीमलजी संघवी
आलासन

श्री देशमलजी सरेमलजी
मोदरा/बैंगलोर

शा. श्री स्व. हीराचन्द
फुलाजी गांव चुरा

श्रीमती पवनीदेवी दुधमलजी
कबदी, सायला

श्री दुधमलजी पूनमचंदजी
कबदी, सायला

श्री हस्तीमलजी केवलचन्दजी
फोलामुथा, सायला

श्री रमेशभाई हरण
भीनमाल, राजस्थान

श्री उगमराजजी तौलचंदजी
कटारिया संघवी, धानसा (हैदराबाद)

हमारे गौरव

शा. खुशालचंदजी गेबाजी
डामराणी मेंगलवा (हैदराबाद)

शा. जावंतराजजी
पावेडी

शा. बगराजजी नरसाजी
झोटा, दाधाल

भंवरलालजी कानुगा
जालोर

श्री तिलोचन्दजी झोटा
(हैदराबाद)

सत्रु अग्रवाल
जालोर

पुखराजजी समताजी
गांधीमुथा, सायला

धर्मचंदजी चंदाजी
नानेसा, आकोली

गुजरात

वोरा अमृतलालजी डूंगरजी
अहमदाबाद

शा. तिलोकचंदजी चुन्नीलालजी छाजेड़
नैनावा

वोरा चिमनलालजी नथुचंदभाई

मोरखिया मणिलाल प्रेमचंदभाई
मुम्बई

श्री बाबूलालजी नाथाजी भंसाली
दाहोद

श्री चिमनलालजी पीताम्बरदासजी
देसाई

वेदलीया हालचंद भाई
भाणजी भाई, मोरडुवाला, डीसा

संघवी मुलचन्द भाई
त्रिभुवनदास, थराद

महाजनी ताराबेन
भोगीलाल सरुपचन्द, थराद

देसाई छोटालाल अमूलख भाई

संघवी धुड़ालाल अमृतलाल
(वकील)

शाह श्री राजमल भाई डूंगरजी भाई
थराद

संघवी श्री हीरालालजी कानजीभाई
थराद (लाटीवाला)

देसाई श्री हालचंदजी उजमचंदजी
थराद

श्री नरपतलाल वीरचंदजी संघवी
थराद

हमारे गौरव

वोहरा श्री प्रेमचंदभाई जीतमल भाई थराद

संघवी चिमनलाल खेमचंद थराद

संघवी पूनमचंद खेमचंद थराद

संघवी वीरचंद हठीचंद थराद

श्री पुखराजजी ओरा थराद

वोहेरा श्री माणकलाल भूदरमल दूधवा (गुज.)

मोरखीया अमृतलालजी चुन्नीलाल लाखणी

दलपतभाई खेमचंद महाजनी

श्री मफतलालजी हंसराज वारिया, (वड़गामड़ा) डीसा

अदाणी अमृतलाल मोहनलाल थराद

श्री चन्दूमल मफतलालजी वोहेरा, दुधवा (गुजरात)

मध्यप्रदेश

श्री शांतिलालजी भंडारी झाबुआ

श्री मदनलालजी सुराना रतलाम

श्री इन्दरमलजी दसेड़ा जावरा

स्व.मणिलालजी पुराणिक कुक्षी

स्व. समरथमलजी तळेरा कर्मड़वाला, उज्जैन

श्री सुजानमलजी जैन राणापुर (म.प्र.)

संघ शिरोमणी राजमलजी तलेसरा, पारा

भण्डारी चम्पालालजी रामाजी, पारा

श्री गट्टूलालजी रतिचंदजी सालेचा औरा, पारा

श्री कांतिलालजी केसरीमलजी भंडारी, पारा

स्व. भव्य हिमांशु लुणावत दाहोद (गुजरात)

स्व. श्री सुभाषजी भण्डारी मनावर (मेघनगर वाले)

श्री समरथमलजी पगारिया पारा जि. झाबुआ (म.प्र.)

श्री चांदमलजी वरदीचंदजी तांतेड़, लेडगांव

स्व.श्री कन्हैयालालजी सेठिया, कुशलगढ़

दलाल स्व. श्रीबाबूलालजी मेहता, कुशलगढ़

कर्नाटक

श्री भंवरलालजी तिलोकचन्दजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री मनोहरमलजी फूजाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री हिराचंदजी पुखराजजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री शेषमलजी ताराजी
कांकरिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री इंदरमलजी नेमलजी
संघवी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री रूपचंदजी फूलाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.भंडारी भुरमलजी भानाजी
मेंगलवा, (बीजापुर)

स्व. श्री दिनेशकुमार भुरमलजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री प्रतापचंदजी सभनाजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री सुखराज प्रतापचंदजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुंदनमलजी फुलाजी
संकलेचा, मेंगलवा (कर्नाटक)

श्री उम्मेदमलजी प्रतापजी
कंकुचोपडा, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री नागराजजी वालचंदजी
पाटनी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री मोहनलालजी मुलचंदजी
चोपड़ा, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुंदनमलजी फौजाजी
शक्तावत, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री धनराजजी नेनमलजी
संघवी, आलासन (बीजापुर)

श्री मुलचंदजी खुमाजी
बाफना, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री देवीचंदजी हजारीमलजी
कावदी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री रिखबचंदजी भभुतमलजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री डुंगरचंदजी हजारीमलजी
कवदी, बीजापुर (कर्नाटक)

शाह सोहनलाल
विशाचंदजी बीजापुर

सुमेरमलजी अनाजी
वाणीगोथा, बीजापुर/भीनमाल

ज्ञा. श्री वस्तीमलजी सोनाजी
बाफना, बीजापुर (सायला)

॥ विश्वपूज्य प्रभु गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी गुरुभ्यो नमः ॥

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक
शाश्वत धर्म
नवम्बर-2015 संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. हिन्दी मासिक

संस्थापक :
स्व. गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

दिशा निर्देशक :
पू. राष्ट्र संत जैनाचार्य श्रीमद्
विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

सम्पादक :
सुरेन्द्र लोढ़ा
E-mail : shaswatdharmajain@yahoo.in

कार्यालय :
शाश्वत धर्म
ठि. गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग
धानमंडी, मंदसौर (म.प्र.)458002

शाश्वत वर्ष 62 अंक 11
वीर सं.2541 राजेन्द्र सं.109 विक्रम सं. 2072

इस अंक का मूल्य	-	15रु.
एक वर्ष का शुल्क	-	150रु.
पांच वर्ष का शुल्क	-	600रु.
दस वर्ष का शुल्क	-	1100रु.

शाश्वत धर्म संचालन समिति

श्री शांतिलाल रामानी	(संयोजक)
श्री रमेशभाई धरू	(परिषद अध्यक्ष)
श्री सुरेन्द्र लोढ़ा	(सम्पादक)
श्री अशोक श्रीश्रीमाल	(महामंत्री)
श्री. ओ.सी जैन	(न्यासी)
श्री विनोद संघवी	(न्यासी)

भारत सरकार का पंजीयन क्र. 13067/57
स्वामी अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के लिए सुरेन्द्र लोढ़ा, गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग, धानमण्डी, मंदसौर द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।
मुद्रक -छाजेड़ प्रिन्टरी प्रा.लि., रतलाम

प्रेरक प्रसंग

स्वयं ग्रहण कर ली विषाक्त शाक

मासक्षमण के उपरांत मासक्षमण, इस प्रकार की घोर तपश्चर्या में सदैव लीन मुनि धर्मरुचिजी आहार वोहरा कर गुरु धर्मघोषजी के निकट आये। धर्मघोषजी पूर्वधर थे। उनने शाक की गंध पर अनुमान लगा लिया कि यह विषाक्त है। उन्होंने सूक्ष्म स्वाद लेकर ज्ञान कर लिया कि यह शाक नहीं जहर है। धर्मरुचिजी को उन्होंने चेता कर उसे निर्वद्य स्थल पर परण देने का निर्देश दिया।

धर्मरुचिजी चल दिये जंगल में, एक स्थान को निर्वद्य समझ कर एक बिन्दु भूमि पर फेंक कर देखा। वहां अगणित चींटियाँ एकत्र हो गईं तथा शाक को स्पर्श कर मर गईं। धर्मरुचि शाक के केवल एक बिंदु से हुई हिंसा से दयार्द्र हो उठे। यह अनुमान लगाकर कि पूरी शाक से कितने जीवों की हिंसा हो जाएगी, वे सिहर उठे। धर्मरुचिजी ने इसे जमीन पर परठने के स्थान पर स्वयं के पेट में परठने का निर्णय कर लिया।

उन्होंने अपने प्राणों की चिंता किए बिना करुणामय हृदय तथा प्रसन्नतापूर्ण मस्तिष्क से स्वयं उस विषैली शाक को ग्रहण कर लिया। शाक के पेट में पहुँचते ही तीव्र वेदना उत्पन्न हुई। धर्मरुचिजी धर्मध्यान तथा शुक्लध्यान में आरोहण करते रहे। उन्होंने पदोपगमन संथारा कर लिया। मासक्षमण के पारणे पर उन्होंने जहरीली तुम्बी की शाक प्रशस्त भाव से ग्रहण कर ली।

समाधि भाव से पंडित मरण प्राप्त कर धर्मरुचिजी ने सर्वार्थसिद्ध नामक अनुत्तर विमान में प्रस्थान कर दिया। (क्रमशः)

- सुरेन्द्र लोढ़ा

संचालक- अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्

अनुक्रम

क्र.		पृष्ठ संख्या
1.	निराकुल जीवन का रहस्य (लेखांक-5) (श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	11
2.	गणधरवाद (लेखांक-28) (श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	14
3.	स्वर्णप्रभा (लेखांक-28) (श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	17
4.	प्रश्नोत्तरी	20
5.	जैन धर्म दर्शन में समाधिमरण आत्महत्या नहीं (प्रो.सागरमल जैन)	21
6.	श्रीसंघ अध्यक्ष की पाती (वाघजीभाई वोरा)	24
7.	अध्यक्षीय संदेश (रमेशभाई धरू)	25
8.	सम्पादकीय (सुरेन्द्र लोढ़ा)	26
9.	शांति और क्रांति के अग्रदूत-दादा गुरुदेव (धीमी गतिवाला)	28
10.	धर्म क्रियाएं तथा चिंतन (डॉ. चंचलमल चौरड़िया)	33
11.	ईर्ष्या का कटु फल (आचार्य श्री रत्नसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	36
12.	ओसवाल जाति और उसकी उत्पत्ति-2 (मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी म.सा.)	39
13.	अन्यत्व भावना -3 (साध्वी श्री श्रुतिदर्शनाश्री जी म.)	41
14.	पेपराल की धरती बता रही 'मिलकर रह ' सीख' (विजयसिंह लोढ़ा, निम्बाहेड़ा)	43
15.	स्मरण शक्ति का अद्भुत प्रयोग-शतावधान (पक्षाल कोरडीया, डीसा, मुंबई)	45
16.	माँ, हमारी प्रथम पाठशाला है (जूली 'जयजा' गोलेचा)	47
17.	जैन प्रश्नोत्तर	49
18.	विद्वत्ता की शोभा विनम्रता से (साभार-जैन जागृति)	51
19.	ज्योतिष कुंडली और शारीरिक रोग (दिनेश जैन कबदी, अहमदाबाद)	53
20.	कुमकुम सने पगलिये	71
21.	श्रीसंघ सौरभ	106
22.	परिषद् प्रांगण से	117
23.	जैन विश्व	124
24.	शाश्वत धर्म के संरक्षक	125-126

प्रवचन लेखांक-5

निराकुल जीवन का रहस्य

(सुविशाल गच्छाधिपति युग प्रभावक राष्ट्रसंत
जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.)

नमक के ढेर में रहने वाली चींटी उसके साथ चल तो दी पर अविश्वास के कारण उसने नमक का एक कण मुँह में रख लिया। शक्कर के ढेर में पहुँचने के बाद उसने कहा- 'जैसा मेरे वहाँ है, वैसा ही यहाँ भी है। कहीं कोई फर्क नहीं है। कहाँ है वह मिठास?'

शक्कर वाली चींटी समझदार थी। उसने कुछ सोचकर उसका मुँह खुलवाया,तो उसे मुँह में नमक दिखाई दिया। उसने कहा - तेरे मुँह में जो है, उसे पहले थूक दे। नमक वाली चींटी ने नमक का कण फेंक दिया। फिर उसने शक्कर का कण चखा तो उसे भी मीठा लगा। उसने शक्कर वाली चींटी को मिठास का अनुभव दिलाने के लिए धन्यवाद दिया। फिर वह भी उसके साथ वहीं रहने लगी।

प्रवचन जल से निर्मलता :- वर्षाऋतु में जो पानी बरसता है, वह जमीन पर रही सारी गंदगी को बहा ले जाता है। उस पानी से गंदगी दूर हो जाती है। जिस दिन परमात्म वचन के जल का प्रवाह अपने आत्मप्रदेश में प्रवाहित होगा, उस दिन आत्मप्रदेशों पर लगा कर्म मैल भी दूर होने लगेगा। जिनवाणी रूपी गंगाजल का प्रवाह जड़ता दूर करता है और चैतन्यता विकसित करता है। वह संताप को दूर कर शीतलता प्रदान करता है।

धर्माराधना शकर की डली :- जब हमारी उलझनें सुलझेंगी और हमें शीतलता प्राप्त होगी, तभी हम जिनवाणी का रसास्वादन प्राप्त कर सकेंगे। अतः जिनवाणी को सुनने के लिए हमें स्वयं को तैयार करने की जरूरत है। विषय-भोगों के प्रति आसक्ति का भाव नमक की डली है। उसे मन से हटाने के पश्चात् ही धर्माराधना की शकर की डली का स्वाद महसूस हो सकेगा। आराधना में अभूतपूर्व आनन्द प्राप्त होगा। अभूतपूर्व अर्थात् जैसा पहले कभी प्राप्त नहीं हुआ, वैसा। जब आत्मा को ऐसा आनन्द प्राप्त होता है, तब उसके कर्मपाश तड़ातड़ टूटने लगते हैं। वह आत्मा, कर्मबंधन से मुक्त होती जाती है। परमात्मा का गुण कीर्तन और श्रवण भक्त के लिए अपूर्व आनन्ददायक होता है। श्री यशोविजयजी महाराज महावीर परमात्मा के स्तवन में फरमाते हैं-

'हे वर्द्धमान जिनराज! आपके

गरिमामय गुण जब मुझे सुनायी देते हैं; तब ऐसा लगता है, मानों मेरे कानों में अमृतवर्षा हो रही है और मेरा आत्मशरीर निर्मल हो रहा है। अब तो मेरी आपकी गुणगंगा में नहाकर निर्मल होने की ही इच्छा है। आपके गुणगान के अलावा अन्य कोई प्रवृत्ति मुझे पसंद नहीं है। जिसने गंगाजल में डुबकी लगा ली हो, वह नाली में थोड़े ही डुबकी लगाएगा? भगवान के गुणगान में लीन रहने वाला कभी भी संसारियों के गुणगान नहीं करेगा। उसके लिए तो गति और मति दोनों ही भगवान ही हैं। भगवान ही उसका एकमेव आधार है।'

अपनी फिक्र करो:– हमें भी अपूर्व आनंद प्राप्त हो सकता है; बशर्ते हम नमक की डली उगल दें। विषय भोग रूपी विष्टा के आस्वादन में आनन्द न मानकर वैराग्य रूपी अमृत का पान करें। हकीकत में हमने आज तक बहुत मेहनत की है; पर वह दूसरों के लिए की है। स्वयं के लिए मेहनत करने में हम सदा पीछे रहे हैं। पर उपदेश कुशल बहुतेरे। जे आचरहिं ते नर न घनेरे।। दूसरों के लिए हम पुरुषार्थी; पर स्वयं के लिए प्रमादी। स्वयं के हित के लिए हम कुछ भी तो नहीं करते। इसीलिए हम आज तक जो करते आये हैं, वह सब हमारे लिए उपाधि रूप बन गया है। अतः हमें उपाधि से मुक्त होने के लिए प्रयत्न करना चाहिये। हमें अपनी फिक्र करनी चाहिये। हमारी फिक्र कोई दूसरा क्यों करेगा? क्या अपनी दुकान की चिन्ता कोई दूसरा करता है? अपनी दुकान की चिंता हमें स्वयं ही करनी है। स्वयं सम्हलो।

भगवान कहते हैं:– अपनी दुकान तू स्वयं सम्हाल। तेरे जीवन की देखभाल तू स्वयं कर। उसे दूसरे के भरोसे मत छोड़। क्षण मात्र भी तू व्यर्थ मत गवाँ। 'समय गोयम! मा पमायए।' क्षण मात्र के लिए भी तू प्रमाद मत कर। प्रति पल, हर समय तू सजग रह। क्षण मात्र के लिए भी यदि सजगता चली गई, प्रमाद भाव आ गया; तो तेरा भव मंडप का नाटक फिर से शुरू हो जाएगा।

नाटक जन्म-जन्म का :– संसारी जीव नाटक करते हैं; परमात्मा अवलोकन करते हैं। वे ज्ञाता दृष्ट हैं। हमारा भव भ्रमण का नाटक अनादि से चलता आ रहा है। चार गतियों में नाना वेश धारण करके जीव नाच रहा है। उपाध्यायजी श्री विनयविजयजी महाराज परमात्मा से निवेदन करते हैं –

भव मंडप मां रे नाटक नाचियो;
हवे मुज दान देवराव।

हे परमात्मा! इस संसार के रंगमंच पर मैंने बहुत नाटक किये। मैं बहुत नाचा। आप सब देख रहे हैं। अब तो आप मुझे भी दान दीजिये; जिससे मेरी चिंता दूर हो जाये। आपके दान से मेरी दरिद्रता दूर हो जायेगी।

तीन रत्न :– भगवान भक्त से पूछते हैं – 'वत्स! बोल, तुझे क्या चाहिये?' भगवान तो देने के लिए तैयार हैं। अब तो लेने वाले की शक्ति का सवाल

है। भक्त कहता है–'नाथ, आपके पास जो है वही मुझे दीजिए। उसे छोड़कर अन्य कुछ भी नहीं चाहिये। आपके पास रही हुई अमूल्य निधि मिल जाने से मेरी जन्म–जन्म की दरिद्रता दूर हो जाएगी।'

त्रण रतन मुज आपो तातजी;
जेम नावे रे सन्ताप....

उपाध्यायजी श्री विनयविजयजी महाराज तीन रत्न मांग रहे हैं। भगवान के पास जाने वाले अन्य लोग भी तीन रत्न ही माँगते हैं। संसार त्यागी तीन रत्नों की प्राप्ति से संतुष्ट हो जाते हैं और संसारी जीव भी। संसारी जीव को कौन से तीन रत्न चाहिये? जानते हैं आप? आप भी तो वे ही तीन रत्न चाहते हैं। वे तीन रत्न हैं–लाडी, वाडी और गाड़ी। संसार भोगों में आसक्त जीव इन्हीं को पाने के लिए दौड़ धूप करते हैं। क्या–क्या नहीं करते वे? तिरुपति जाते हैं, नाकोड़ा जी जाते हैं, देवी–देवताओं की मनौतियाँ मानते हैं और पूजा–पाठ करते हैं। यह सब क्या है? अरे! मिलना न मिलना तो भाग्य की या पुण्य के उदय की बात है। कोई किसी को कुछ भी देता नहीं है, पर हम ऐसे हैं कि सांसारिक वैभव की प्राप्ति के लिए वीतराग को छोड़कर अन्य को भजने लगते हैं। असल में तो क्या माँगना चाहिए; यही हमें मालूम नहीं है। भगवान से ऐसा कुछ माँगना चाहिये; जिससे आत्मा का कल्याण होता है; वह सब 'जयवीयराय' सूत्र में बताया गया है।

माँगना है भगवान से :– भगवान से लाड़ी–वाड़ी–गाड़ी क्या माँगते हो! भगवान से माँगो–भवनिर्वेद। संसार के प्रति वैराग्य भाव से ही कल्याण होगा। संसार और सांसारिक भोगों के प्रति आसक्त रहे तो चतुर्गति भ्रमण कभी छूटने वाला नहीं है। इसलिए भव–वैराग्य, मार्गानुसारिता, दुःखक्षय, कर्मक्षय, समाधि मरण, बोधिलाभ आदि भगवान से माँगो। इनसे ही सच्चा सुख प्राप्त होगा। उपाध्यायजी महाराज ने भगवान से जो तीन रत्न माँगे हैं; वे हैं–सम्यगदर्शन, सम्यगज्ञान और सम्यक् चरित्र। ये तीन असली रत्न हैं, शेष सब नकली हैं। ये तीन रत्न जिसके पास होते हैं, उसे किसी प्रकार का कोई संताप नहीं होता। उसके आधि, व्याधि और उपाधि रूपी त्रिताप नष्ट हो जाते हैं।

भगवान कहते हैं– मेरे पास तो ये ही तीन रत्न हैं। तुझे चाहिये तो ले ले। मैं तो देने के लिए ही बैठा हूँ। इन रत्नों से तुझे समता और शान्ति प्राप्त होगी; सुख और आत्म वैभव प्राप्त होगा। इन रत्नों के रहते तुझ पर कोई संकट नहीं आयेगा; तेरी जन्म–जन्म की दरिद्रता दूर हो जायेगी। दूसरे सब रत्न पत्थर हैं। उनका संग्रह मात्र भार बढ़ाने के लिए है। उनके पास में रहने पर अनेक बाधाएं आ सकती हैं। वे सब दुःख के साधन हैं। उनमें लेशमात्र भी सुख नहीं है। दुःख के साधन बढ़ायेगा, तो दुःख ही पायेगा, सुख के साधन पायेगा तो अवश्य सुख पायेगा। अतः हाथ आये अवसर से हमेशा लाभ उठाना चाहिये। अवसर से हाथ धोने वाला अन्त में पछताता है।

गणधरवाद

सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.
प्रवचनकार

वह जो नित्य, अमूर्त एवं असंघात रूप में सिद्ध करना अभिप्रेत है। लेकिन बजाय इसके उन हेतुओं से कर्ता के रूप में जीव कुंभकार आदि की तरह अनित्य, मूर्त एवं संघात रूप सिद्ध होता है।

महावीर– उक्त हेतुओं द्वारा संसारी आत्मा की कर्तादि रूप में सिद्धि अभिप्रेत होने से तुम्हारे द्वारा प्रदर्शित दोष संभव नहीं है। संसारी आत्मा तो कर्मावृत्त एवं सशरीरी होने से कंथचित मूर्तादि रूप है ही।

सौम्य! पूर्वोक्त आत्मसाधक अनुमानों के प्रसंग में एक और अनुमान इस प्रकार है–जीव का अस्तित्व है; क्योंकि उसके विषय में तुम्हें संदेह है। जिन वस्तुओं के बारे में संदेह होता है; वे दोनों विद्यमान होती ही हैं। जैसे–कि यह ठूंठ है या पुरुष (स्थाणु र्वा पुरूषो वा)। किन्तु अवस्तु सर्वथा अविद्यमान वस्तु में कभी किसी को संशय होता ही नहीं है। अतः आत्मा है; तभी तो तुम्हें उसके बारे में संदेह हुआ है।

इन्द्रभूति– आर्य! संशयास्पद विषय में संशय की विषयभूत दोनों वस्तुओं में से कोई एक विद्यमान होती है। जैसे कि स्थाणु–पुरुष विषयक सन्देह में उक्त दोनों में से कोई एक ही विद्यमान है, दोनों विद्यमान नहीं होते। अतः आप यह कैसे कह सकते हैं कि संशय की विषयभूत वस्तु विद्यमान होती ही है।

महावीर–आयुष्मन्! यह तो मैंने कहा नहीं कि जहाँ जिसके विषय में संदेह हो, वह वहाँ होती ही है, किन्तु इतना ही कहा है कि संशय की विषयभूत वस्तु वहाँ या अन्यत्र विद्यमान होती है। अतः तुम्हें जो जीव

विषयक संदेह है, उसमें जीव को अवश्य विद्यमान मानना चाहिये, अन्यथा उसके बारे में संदेह होगा ही नहीं। जैसे–कि पृथ्वी आदि पंचभूतों के अतिरिक्त छठा भूत पदार्थ न होने से उसके लिए संदेह भी नहीं होता।

इन्द्रभूति–यदि संशय के विषयभूत पदार्थ को अवश्य विद्यमान माना जाये तो खर विषाण के लिए होने वाले संदेह में खर के विषाण को भी विद्यमान मानना पड़ेगा।

महावीर– अवश्य। यह तो मैं पहले ही कह चुका हूँ कि अविद्यमान में संशय नहीं होता और संशय की विषयभूत वस्तु को कहीं न कहीं होना चाहिये। प्रस्तुत में संशय के विषयभूत विषाण खर में भले ही न हों, किन्तु अन्यत्र गाय वगैरह को तो होते ही हैं।

इसी प्रकार विपर्यय ज्ञान में भी समझ लेना चाहिये। यदि संसार में सर्प का सर्वथा अभाव हो, तो रस्सी के टुकड़े में सर्प का भ्रम ही नहीं होगा। इस न्याय से यदि तुम शरीर में आत्मा का भ्रम मानते हो, तो भी आत्मा का अस्तित्व शरीर में नहीं तो अन्यत्र कहीं न कहीं मानना ही पड़ेगा। जीव का सर्वथा अभाव होने पर उसका संशय या भ्रम नहीं हो सकता।

अजीव के प्रतिपक्षी रूप में जीव की सिद्धि

दूसरी बात यह भी है कि जीव और अजीव ये दो शब्द हैं, जो परस्पर में एक दूसरे के प्रतिपक्षी हैं। अतः अजीव का प्रतिपक्षी कोई न कोई होना ही चाहिये। क्योंकि अजीव में व्युत्पत्ति परक शुद्ध पद (जीव) का निषेध हुआ है और व्युत्पत्ति परक शुद्ध पद का प्रतिषेध होने पर उसका प्रतिपक्षी होता है। जैसे–कि अघट का प्रतिपक्षी घट। अघट में व्युत्पत्ति परक शुद्ध पद घट का निषेध किया गया है, जिससे अघट का विरोधी घट अवश्य विद्यमान है। किन्तु जिसका प्रतिपक्षी नहीं होता; उसके व्युत्पत्ति वाले शुद्ध पद का निषेध भी नहीं होता। जैसे–कि अखर विषाण या अडित्थ।

इसमें खर विषाण यह शुद्ध पद नहीं किन्तु समास निष्पन्न है और डित्थ व्युत्पत्ति परक नहीं है। इसलिए ये दोनों व्युत्पत्ति वाले शुद्ध पद नहीं होने से अखर विषाण के विरोधी खर विषाण और अडित्थ के प्रतिपक्षी डित्थ की विद्यमानता जरूरी नहीं है; जबकि अजीव में तो व्युत्पत्तिपरक शुद्ध पद जीव का निषेध होने से जीव का अस्तित्व अवश्य मानना चाहिये।

निषेध्य होने से जीव की सिद्धि

तुम कहते हो कि जीव नहीं है। लेकिन इस निषेध से भी जीव का अस्तित्व सिद्ध हो जाता है;क्योंकि निषेध्य वस्तु का सद्भाव मान कर ही बाद में उसका निषेध किया जा सकता है। 'घड़ा नहीं है' इस प्रयोग में यद्यपि वहाँ वर्तमान में हमारे सामने घड़ा नहीं है, किन्तु अन्यत्र कहीं न कहीं वह अवश्य विद्यमान है, यह सिद्ध होता है। इसी प्रकार 'जीव नहीं है' इस प्रयोग में भी यथास्थान कहीं न कहीं जीव का अस्तित्व मानना चाहिये। सर्वथा अविद्यमान वस्तु में 'नही है' का प्रयोग नहीं होता। यह पहले बताया जा चुका है। इसलिए भी तुम्हें जीव का अस्तित्व मानना चाहिये।

इन्द्रभूति – सर्वथा अविद्यमान वस्तु में भी 'नहीं है' का प्रयोग होता है जैसे कि 'खर विषाण नहीं है'। तो फिर आप यह कैसे कह सकते हैं कि जिसका अस्तित्व न हो; उसके लिए 'नहीं है' शब्द का प्रयोग किया जाता है; उसका अवश्य अस्तित्व है। अतः 'खर विषाण नहीं है', नहीं है, इस प्रयोग में खर विषाण का भी अस्तित्व मानना पड़ेगा।

– क्रमशः

सहानुभूति

सहानुभूति एक मानवीय गुण है। इसे बांटने से सद्भाव, अपनत्व एवं मैत्री की भावना का विकास होता है। जीवन में उतार–चढ़ाव के दौर से सबको गुजरना पड़ता है। कभी सुख की शीतल छाया मिलती है तो कभी दुख की तेज धूप में झुलसना पड़ता है। जीवनयात्रा में कष्ट की कसौटी से कोई नहीं बच पाता।

संघर्ष के झंझावातों को झेल रहे मनुष्य को सहानुभूति की आवश्यकता पड़ती है। संघर्ष से त्रस्त मनुष्य को एक ऐसे कंधे की आवश्यकता होती है, जिस पर सिर रखकर वह अपने दुख को हल्का कर सके। संकट से घिरे ऐसे मनुष्य के लिए सहानुभूति के दो मीठे बोल अमृत रसायन साबित हो सकते हैं।

'सहानुभूति' और 'दया' में जमीन–आसमान का अंतर होता है। बहुत से लोग इन दो शब्दों का अंतर समझ नहीं पाते। दया का अर्थ है– किसी पर तरस खाना। सहानुभूति का अर्थ है – सह अनुभूति अर्थात् दूसरों की भावनाओं के साथ समान अनुभूति या इससे और अधिक स्पष्ट करना हो तो कह सकते हैं, दूसरों की मुसीबत से इतना प्रभावित होना, मानो वह मुसीबत आपकी अपनी हो। दया करते वक्त जैसी मानसिकता होती है, उससे दया पाने वाले का स्वाभिमान कहीं न कहीं प्रभावित होता है, पर सहानुभूति की स्थिति में समता का व्यवहार होता है।

लेखांक 28

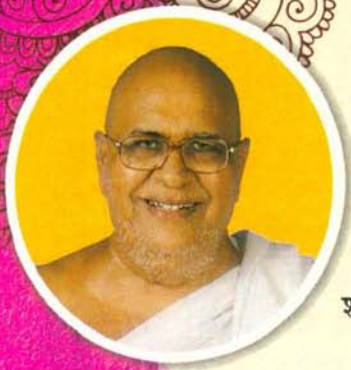

स्वर्णप्रभा

सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजयजयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

'तुम्हारी एक बहन है। उसका विवाह कहाँ हुआ है? उसके ससुर और तुम्हारे बहनोई का नाम क्या है?' श्रेष्ठी शांतिदास ने पूछा।

'क्या बात है, सेठ साहब? कुशल तो है न?' कुछ चिंतित स्वर में युवक ने पूछा। वहाँ एक अपरिचित श्रेष्ठी को बैठा देखकर उसकी चिंता और बढ़ गयी थी।

'तुम यहाँ बैठो। उसके पश्चात् जो पूछा है, उसका उत्तर दो। चिंता करने जैसी कोई बात नहीं है।' श्रेष्ठी शांतिदास ने कहा।

'युवक! घबराने की कोई आवश्यकता नहीं है। शिवपुर के राधाकृष्णजी की पत्नी का हमारे यहाँ आना-जाना है। जिस दिन हम अयोध्या से रवाना हुए थे, उसी दिन वे अयोध्या आई हुई थीं। जब हमने यहाँ आने की बात बताई तो उन्होंने अमरचंदजी का नाम बताते हुए कुशल मंगल का संदेश भेजा है और यदि यहाँ से कोई संदेश भिजवाना हो तो हम वहाँ पहुंचा देंगे।' नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर युवक के व्यवहार से समझ गया था कि इस युवक की बहन ही वह पुत्रवधु होनी चाहिये। इसलिये श्रेष्ठी शांतिदास के बोलने के पूर्व ही उसने अपनी बात कह दी।

उस परिवार के विषय में बहुत कुछ जानकारी श्रेष्ठी शांतिदास की पत्नी से भी मिल जावेगी।

'जी हाँ, मेरी बहन का लग्न शिवपुर के राधाकृष्णजी के सुपुत्र कृष्णवल्लभजी के साथ हुआ है। मैं चिंतित इसीलिये हो गया था...।' युवक कुछ क्षण मौन रहा फिर बोला-'अब आपसे क्या छिपाना। मेरी बहन घमंडी है, मिथ्या ज्ञानी है, वह हठी और दुराग्रही है। अपनी बात के सन्मुख अन्य किसी की भी बात को मानने के लिये तैयार नहीं होती। उसकी इच्छा के विपरीत यदि कुछ कह दिया

अथवा कर दिया जाता है तो वह लड़ने के लिए कमर कस लेती है। यह तो हमारा भाग्य अच्छा था जो हमें देवता के समान समधी और बहनोई मिल गए। मैं इसलिए घबरा गया था कि कहीं बहन ने कोई नया बखेड़ा न खड़ा कर लिया हो। उस परिवार से आपका सम्पर्क है, यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। मैं अपने माता-पिता को भी आपके संबंध में बताऊँगा। पिताश्री तो कल जा रहे हैं, हो सकता है, वे आज संध्या तक आपसे मिल लें. आप हमारे घर पधारें। पड़ोस में ही है।'

कोई किसी पर उपकार नहीं करता। सबको अपने-अपने कृत कर्मों के अनुसार फल मिलता है।

'किसी को भी कुछ भी बताने की आवश्यकता नहीं है। अपने पिताश्री को भी व्यर्थ कष्ट मत देना। रही, तुम्हारे यहां आने की बात तो अभी एक दो दिन हम यहीं हैं, अवश्य ही तुम्हारे यहाँ आवेंगे।' नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर ने कहा।

'तो फिर मुझे आज्ञा दें। जाकर पिताश्री को यहाँ का संदेश देना है।' युवक ने कहा और अभिवादन करके चला गया।

नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर इस बात से प्रसन्न थे कि दूसरे जिस काम के लिए उनकी पत्नी साथ आई थी, वह अब सरलता से हो जावेगा। सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह थी कि वह परिवार उसके मित्र श्रेष्ठी शांतिदास के आवास के निकट ही रहता है। उस परिवार के विषय में बहुत कुछ जानकारी श्रेष्ठी शांतिदास की पत्नी से भी मिल जावेगी। अन्य कुछ बातें उस परिवार से मिलकर अथवा अन्य पड़ोसियों से मिलकर प्राप्त की जा सकती हैं।

व्यापारियों के दल के आगमन पर नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर ने उनके स्वागत का उत्तरदायित्व स्वयं सम्हाला। स्वागत-सत्कार के समय नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर उनके निकट सम्पर्क में आ गया और अपनी वाकपटुता से उसने उनकी वास्तविक परिस्थिति की जानकारी भी प्राप्त कर ली। नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर ने जान लिया कि इन व्यापारियों के साथ अपनी

शर्तों पर दीर्घकालीन व्यापारिक अनुबंध संभव है। इस अनुबंध में उसके अपने मित्र श्रेष्ठी शांतिदास को अच्छा लाभ अर्जित करने का अवसर मिल रहा है।

अपनी योजना के अनुसार नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर ने उन व्यापारियों और अपने मित्र श्रेष्ठी शांतिदास के मध्य दस वर्षीय व्यापारिक अनुबंध करवा दिया। इस अनुबंध से श्रेष्ठी शांतिदास अत्यधिक प्रसन्न था। इसके लिए वह अपने मित्र नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर का उपकार भी मान रहा था। जब श्रेष्ठी शांतिदास ने उपकार वाली बात कही तो नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर ने कहा–'कोई किसी पर उपकार नहीं करता। सबको अपने–अपने कृत कर्मों के अनुसार फल मिलता है। फिर मैंने तो एक मित्र होने के नाते अपने कर्तव्य का निर्वाह किया है। मित्रों के बीच में उपकृत करने जैसी बातें नहीं होती। भविष्य में भी कभी मेरे प्रति ऐसी बात मत करना।'

बाहर से आया व्यापारियों का दल अपने देश के लिए हर्षोल्लास के साथ रवाना हो गया। नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर, श्रेष्ठी शांतिदास तथा इनके मित्रों ने व्यापारियों को ससम्मान विदा किया। व्यापारी इसलिये प्रसन्न थे कि उनका अनुबंध हो गया। वे तो यह मानकर आये थे कि व्यापारिक अनुबंध शायद ही हो पाएगा और यदि हो भी गया तो बड़ी कठिन शर्तों पर होगा। किन्तु जिन शर्तों पर अनुबंध हुआ वे अपेक्षाकृत आसान ही थीं। ऐसी व्यापारियों की मान्यता थी। इस अनुबंध में प्रमुख भूमिका नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर की थी। उसने अनुबंध की प्रत्येक शर्त को कुछ इस प्रकार लिखवाया था कि उसका अंतिम लाभ उसके मित्र श्रेष्ठी शांतिदास को मिल रहा था। यद्यपि व्यापारियों को यह बात समझ आ रही थी तथापि दीर्घकालीन अनुबंध होने के कारण वे इसका विरोध नहीं कर सके। एक अन्य कारण यह भी था कि जिन वस्तुओं की पूर्ति का अनुबंध हुआ था। वे वस्तुएँ उनके अपने देश के लिए अत्यधिक उपयोगी थीं और उन्हें अपने देश में इन वस्तुओं के ऊंचे दाम मिलने की आशा थी। इस प्रकार यह अनुबंध नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर के कौशल से कुछ ऐसा बन गया कि दोनों ही पक्ष इसमें अपनी विजय मान रहे थे।

(क्रमशः)

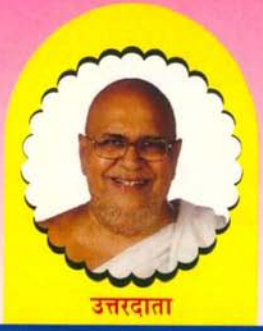

उत्तरदाता

प्रश्नोत्तरी

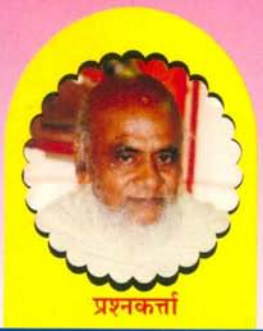

प्रश्नकर्त्ता

पू. श्रीमद् विजयजयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.

पू. मुनिराज श्री नित्यानंद विजयजी म.सा.

प्र. आहार पर्याप्ति किसे कहते हैं?

उ. जिस शक्ति से जीव बाहर के पुद्गलों को ग्रहण करके खल भाग, रस भाग में परिणमावे ऐसी शक्ति विशेष की पूर्णता को आहार पर्याप्ति कहते हैं।

प्र. शरीर पर्याप्ति किसे कहते हैं?

उ. जिस शक्ति से जीव आहार के रस भाग को रस , रक्त, मांस, मेदा, हड्डी, मज्जा, शुक्र रूप सात धातुओं में परिणमाता है, उसकी पूर्णता को शरीर पर्याप्ति कहते हैं।

प्र. इन्द्रिय पर्याप्ति किसे कहते हैं?

उ. जिस शक्ति से आत्मा धातुरूप परिणत आहार को स्पर्श आदि इन्द्रिय रूप परिणमावे उसकी पूर्णता को इन्द्रिय पर्याप्ति कहते हैं।

प्र. श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति किसे कहते हैं?

उ. जिस शक्ति से आत्मा उच्छवास योग्य वर्गणा के पुद्गलों को ग्रहण करके, उसास रूप परिणत करके और उसका आधार लेकर (उसका सार ग्रहण करके) उसे पीछा छोड़ता है, उसकी पूर्णता को श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति कहते हैं।

प्र. भाषा पर्याप्ति किसे कहते हैं?

उ. जिस शक्ति से जीव भाषावर्गणा के पुद्गलों को ग्रहण करके भाषा रूप परिणमावे और उसका आधार लेकर अनेक प्रकार की ध्वनि रूप में छोड़े, उसकी पूर्णता को भाषा पर्याप्ति कहते हैं।

प्र. मन पर्याप्ति किसे कहते हैं?

उ. जिस शक्ति से मन के योग्य मनोवर्गणा के पुद्गलों को ग्रहण करके मनरूप परिणमन करे और उसकी शक्ति विशेष से उन पुद्गलों को पीछा छोड़े, उसकी पूर्णता को मन पर्याप्ति कहते हैं।

प्र. जीव कितना लम्बा चौड़ा है?

उ. प्रत्येक जीव प्रदेशों की अपेक्षा लोकाकाश के प्रदेशों जितना है, किन्तु दीपक के प्रकाश की तरह संकोच और विस्तार स्वभाव के कारण अपने शरीर के बराबर है। मुक्त जीव अंतिम शरीर से त्रिभाग न्यून होता है।

प्र. जीव में पाये जाने वाले गुणों में अनुजीवी गुण कौन से हैं? और प्रतिजीवी गुण कौन से हैं?

उ. चेतना, सम्यक्त्व, चारित्र, सुख, वीर्य, भव्यत्व, अभव्यत्व, जीवत्व, वैभाविक, कर्तृत्व, भोक्तृत्व वगैरह अनन्त अनुजीवी गुण हैं और अव्याबाध, अवगाह, अगुरुलघुत्व, सूक्ष्मत्व आदि प्रतिजीवी गुण हैं।

प्र. चेतना किसे कहते हैं?

उ. जिसमें पदार्थों का प्रतिभास (ज्ञान) हो उसे चेतना कहते हैं।

जैनधर्म दर्शन में समाधिमरण आत्महत्या नहीं

(प्रो.सागरमल जैन)

वैदिक परम्परा में मृत्यु वरण

सामान्यतया हिन्दू धर्मशास्त्रों में आत्महत्या को महापाप माना गया है। पाराशर स्मृति में कहा गया है कि जो क्लेश, भय, घमण्ड और क्रोध के वशीभूत होकर आत्महत्या करता है, वह साठ हजार वर्ष तक नरकवास करता है। महाभारत के आदिपर्व के अनुसार भी आत्महत्या करने वाला कल्याणप्रद लोकों में नहीं जा सकता है। लेकिन इनके अतिरिक्त हिन्दू धर्म-शास्त्रों में ऐसे भी अनेक उल्लेख हैं जो स्वेच्छापूर्वक मृत्युवरण का समर्थन करते हैं। प्रायश्चित्त के निमित्त से मृत्युवरण का समर्थन मनुस्मृति (11।90-91), याज्ञवल्क्यस्मृति (3।253), गौतमस्मृति (2।।1), वसिष्ठ धर्मसूत्र (20।22, 13।14) और आपस्तम्बसूत्र (1।9।25।1-3, 6) में भी है। इतना ही नहीं, हिन्दू धर्मशास्त्रों में ऐसे भी अनेक स्थल हैं जहाँ मृत्युवरण को पवित्र एवं धार्मिक आचरण के रूप में देखा गया है। महाभारत के अनुशासन पर्व (25।62-64), वनपर्व (85।83) एवं मत्स्यपुराण (186।34।35) में अग्निप्रवेश, जल प्रवेश, गिरिपतन, विष प्रयोग या उपवास आदि के द्वारा देह त्याग करने पर ब्रह्मलोक या मुक्ति प्राप्त होती है, ऐसा माना गया है। अपरार्क ने प्राचीन आचार्यों के मत को उद्धृत करते हुए लिखा है कि यदि कोई गृहस्थ असाध्य रोग से पीड़ित हो, अतिवृद्ध हो, किसी इन्द्रिय से उत्पन्न आनन्द का अभिलाषी न हो, जिसने अपने कर्तव्य कर लिये हों वह मह प्रस्थान, अग्नि या जल में प्रवेश करके अथवा पर्वत शिखर से गिरकर अपने प्राणों का विसर्जन कर सकता है। ऐसा करके वह कोई पाप नहीं करता। उसकी मृत्यु तो तपों से भी बढ़कर है। शास्त्रानुमोदित कर्तव्यों के पालन में अशक्त होने पर जीने की इच्छा रखना व्यर्थ है। श्रीमद्भागवत के 11वें स्कन्ध के 18वें अध्याय में भी स्वेच्छापूर्वक मृत्युवरण को स्वीकार किया गया है। वैदिक परम्परा में स्वेच्छा मृत्युवरण का समर्थन न केवल शास्त्रीय आधारों पर हुआ है, वरन्

व्यावहारिक जीवन में भी इसके अनेक उदाहरण सम्भव नहीं है। अतः साधक को इनसे बचते ही रहना चाहिये। फिर भी यह पूछा जा सकता है कि क्या समाधि-मरण मृत्यु की आकांक्षा नहीं है?

समाधि-मरण और आत्महत्या

जैन, बौद्ध और वैदिक तीनों परंपराओं में जीविताशा और मरणाशा दोनों को ही अनुचित माना गया है। तो यह प्रश्न सहज ही उठता है कि क्या समाधि-मरण मरणाकांक्षा या आत्महत्या नहीं है? वस्तुतः समाधि-मरण न तो मरणाकांक्षा है और न आत्महत्या है। व्यक्ति आत्महत्या या तो क्रोध के वशीभूत होकर करता है या फिर सम्मान या हितों को गहरी चोट पहुँचने पर अथवा जीवन से निराश हो जाने पर करता है, लेकिन ये सभी चित्त की सांवेगिक अवस्थाएँ हैं, जबकि समाधिमरण तो चित्त की समत्व अवस्था है। अतः उसे आत्महत्या नहीं कह सकते। दूसरे, आत्महत्या या आत्म बलिदान में मृत्यु को निमंत्रण दिया जाता है। व्यक्ति के अन्तस् में मरने की इच्छा छिपी रहती है, लेकिन समाधिमरण में मरणाकांक्षा का न रहना ही अपेक्षित है, क्योंकि समाधिमरण के प्रतिज्ञासूत्र में ही साधक यह प्रतिज्ञा करता है कि मृत्यु की आकांक्षा से रहित होकर आत्मरमण करूंगा। (काल अकंखमाणे विहरामि) यदि समाधिमरण में मरने की इच्छा ही प्रमुख होती तो उसके प्रतिज्ञासूत्र में इन शब्दों के रखने की कोई आवश्यकता ही नहीं थी। जैन विचारकों ने तो मरणाशंसा को समाधिमरण का दोष ही कहा है। अतः समाधिमरण को आत्महत्या नहीं कह सकते। जैन विचारकों ने इसीलिए सामान्य स्थिति में शस्त्रवध, अग्निप्रवेश या गिरिपतन आदि के द्वारा तात्कालिक मृत्युवरण को अनुचित ही माना है, क्योंकि ऐसा करने में मरणाकांक्षा की संभावना है। समाधि-मरण में आहारादि के त्याग में मृत्यु की चाह नहीं होती, मात्र देह-पोषण का विसर्जन किया जाता है। मृत्यु उसका परिणाम अवश्य है लेकिन उसकी आकांक्षा नहीं। जैसे फोड़े की चीरफाड़ से वेदना अवश्य होती है, लेकिन उसमें वेदना की आकांक्षा नहीं होती है। एक जैन आचार्य का कहना है कि समाधिमरण की क्रिया करण के निमित्त न होकर उसके प्रतिकार के लिए है। जैसे व्रण का चीरना वेदना के लिए न होकर वेदना के प्रतिकार के लिए होता है। यदि ऑपरेशन की क्रिया में हो जाने वाली मृत्यु हत्या नहीं है तो फिर समाधिमरण में हो जाने वाली मृत्यु भी आत्महत्या कैसे हो सकती है? एक दैहिक जीवन की रक्षा के लिए है तो

दूसरी आध्यात्मिक जीवन की रक्षा के लिए है। समाधिमरण और आत्महत्या में मौलिक अन्तर है। आत्महत्या में व्यक्ति जीवन के संघर्षों से ऊबकर जीवन से भागना चाहता है। उसके मूल में कायरता है। जबकि समाधिमरण में देह और संयम की रक्षा के अनिवार्य विकल्पों में से संयम की रक्षा के विकल्प को चुनकर मृत्यु का साहसपूर्वक सामना किया जाता है। समाधिमरण में जीवन से भागने का प्रयास नहीं वरन् जीवन की संध्या वेला में द्वार पर खड़ी मृत्यु का स्वागत है। आत्महत्या में जीवन से भय होता है, जबकि समाधिमरण में मृत्यु से निर्भयता होती है। आत्महत्या असमय में मृत्यु का आमंत्रण है, जबकि संथारा या समाधिमरण मात्र मृत्यु के उपस्थित होने पर उसका सहर्ष आलिंगन है। आत्महत्या के मूल में या तो भय होता है या कामना होती है जबकि समाधिमरण में भय और कामना दोनों की ही अनुपस्थिति आवश्यक होती है।

समाधिमरण आत्म-बलिदान भी नहीं है। शैव और शाक्त सम्प्रदायों में पशुबलि के समान आत्मबलि की प्रथा रही है, लेकिन समाधिमरण आत्म बलिदान नहीं है, क्योंकि आत्म-बलिदान भी भावना का अतिरेक है। भावातिरेक आत्म-बलिदान की अनिवार्यता है जबकि समाधिमरण में विवेक का प्रकटन आवश्यक है।

समाधिमरण के प्रत्यय के आधार पर आलोचकों ने यह कहने का प्रयास भी किया है कि जैन दर्शन जीवन से इकरार नहीं करता, वरन् जीवन से इन्कार करता है, लेकिन गंभीरतापूर्वक विचार करने पर यह धारणा भ्रान्त सिद्ध होती है। उपाध्याय अमर मुनिजी लिखते हैं-'वह (जैन दर्शन) जीवन से इनकार नहीं करता, अपितु जीवन के मिथ्या मोह से इन्कार करता है। जीवन जीने में यदि कोई महत्त्वपूर्ण लाभ है और वह स्वपर की हित-साधना में उपयोगी है तो जीवन सर्वतोभावेन संरक्षणीय है।' आचार्य भद्रबाहु कहते हैं-'साधक की देह संयम की साधना के लिए है। यदि देह ही नहीं रही तो संयम कैसे रहेगा, अतः संयम की साधना के लिए देह का परिपालन इष्ट है। देह का परिपालन संयम के निमित्त है, अतः देह का ऐसा परिपालन जिसमें संयम समाप्त हो किस काम का?' साधक का जीवन न तो जीने के लिए है न मरण के लिए है। वह तो ज्ञान, दर्शन और चारित्र की सिद्धि के लिए है। यदि जीवन से ज्ञानादि की सिद्धि एवं वृद्धि हो तो जीवन की रक्षा करते हुए वैसा करना चाहिए और यदि मरण से ही ज्ञानादि की अभीष्ट सिद्धि होती है तो वह मरण भी साधक के लिए शिरसा श्लाघनीय है।

(क्रमशः)

सकारात्मकता के साथ बढें

वाघजीभाई वोरा
राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्रीसंघ

श्रीसंघ गुरुभक्तों के संगठन का प्रतीक है। गुरुभक्त अपने हृदय के श्रद्धाभाव के साथ इसमें सम्मिलित हैं। उनका संकल्प है कि वे अपने जीवन में सेवा- समर्पण के माध्यम से इसे बनाये रखेंगे। इस जागृत श्रीसंघ के अखिल भारतीय स्वरूप ने हम सभी की पहचान निहित कर रखी है। समाज के उत्थान की दिशा में इस संगठन की सतत् गतिशीलता ही इसकी सार्थकता है।

अखिल भारतीय श्री सौधर्म वृहत्तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ को निरंतर प्रेरणादायी मार्गदर्शन सुविशाल गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरिश्वरजी महा.सा. से प्राप्त होता है और वे ही हमारे नियामक भी हैं। उनके आशीर्वाद से हमारी दिशा का निर्धारण होता है। इसी दिशा में अग्रसर होकर हम सभी का शुभ तथा सभी का विकास कर सकते हैं। पूज्य आचार्यदेवश्री का भी हमें बार-बार संदेश मिलता है कि हम श्रीसंघ की सुदृढ़ता के लिए सकारात्मकता से कार्य करें। वर्तमान में विभिन्न क्षेत्रों में नकारात्मक विचारों का दोष व्याप्त हो गया है, जिसके दुष्परिणाम आज अलग-अलग रूप में दिखाई दे रहे हैं। श्रीसंघ की कार्यशैली में नकारात्मकता का कोई स्थान नहीं है। सरल रेखा को मिटा कर उसे छोटा बनाने का प्रयास उचित नहीं है। हमें चाहिए कि अपने दुगुने, चौगुने कार्यों से उसके ऊपर बड़ी सरल रेखा बनाएं। सकारात्मक विचारों तथा कार्यपद्धति से न केवल समाज व संघ में विधेयात्मक वातावरण रहता है बल्कि उससे जुड़े सभी पक्षों को भी आत्मसंतोष रहता है। संघ व समाज की वैचारिकता जितनी विशुद्ध होगी, समाज उतना ही प्रगति व प्राप्ति की दिशा में निरापद अग्रसर हो सकेगा। सकारात्मकता के परिणाम उत्साहवर्द्धक तथा सही रहते हैं। नकारात्मकता वायुमान में कई तरह के प्रदूषण फैला देती है, जिनके कारण व्यक्ति को स्वयं भी अवरोधों का सामना करना पड़ता है और वह असंतुलित रहता है। नकारात्मकता दोष है, सकारात्मकता गुण है।

अखिल भारतीय संघ को सशक्त बनाने के लिए प्रत्येक शहर/ नगर के संघ से प्रतिनिधियों को सम्मिलित किये जाने की योजना पर कार्य हो रहा है। आशा है सभी शीघ्रता से एक पूर्ण ढांचा उभारने में अपना सहकार प्रदान करेंगे।

परिषद् के नाम से हममें नई चेतना तथा स्फूर्ति का संचार

रमेशभाई धरू
राष्ट्रीय अध्यक्ष
नवयुवक परिषद

अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् का वार्षिक सम्मेलन आगामी 22 नवंबर 2015, रविवार को परिषद् के प्राण, हमारी अनंत आस्थाओं के ध्रुव, सुविशाल गच्छाधिपति जैनाचार्य गुरुदेव श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के अमृतमयी सान्निध्य में गुरुदेवश्री की पवित्र जन्मभूमि पेपराल (त.थराद, जि.बनासकांठा, गुजरात) पर आहुत किया गया है। इसकी तैयारी समस्त शाखाओं में पूरे उत्साह के साथ करना है। प्रत्येक शाखा को 'चलो पेपराल' का पावन निनाद गुंजाते हुए अधिकाधिक संख्या में पेपराल पहुंचकर सम्मेलन को सफल बनाना है। परिषद् समाजोन्नति का महायज्ञ है, जिससे प्रत्येक युवा जुड़ा हुआ है। परिषद् नाम से ही उसमें नई स्फूर्ति व चेतना का संचार हो जाता है। छप्पन वर्षों की इसकी अद्वितीय एवं अनूठे इतिहास की रचना प्रत्येक युग में हजारों सक्रिय युवकों की सेवा, श्रम और तप भाव की उतंग लहरों की उछाल से ही संभव हुई है। गुरुदेव स्व. जैनाचार्य श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरिश्वरजी म.सा. ने इसकी स्थापना करते हुए आशीर्वाद दिया था कि 'परिषद् समाज की जन्मपत्री का निर्माण करेगी। जो समाज है, वही परिषद् है, जो परिषद् है, वही समाज है।' यह उक्ति वर्तमान में साकार होती दिखाई दे रही है। परिषदें अपने हजारों की संख्या में कार्यकर्ताओं के रूप में विशाल वटवृक्ष की भांति फैलाव ग्रहण कर चुकी हैं एवं वृहत्त समाज का पर्याय बन गई हैं। परिषद् का वार्षिक सम्मेलन हम सभी के लिए ऐसा प्रसंग है जब हम अपने संकल्पों को दुहराते हैं, इसके उद्देश्यों के प्रति निष्ठा की अभिव्यक्ति करते हैं, परिषद् के श्रद्धेय प्रेरणादाता पूज्य जैनाचार्य देव श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के प्रति समर्पित होकर अपने कर्त्तव्य का पालन करते हैं। इससे हमारे पूरे परिषद् परिवार का आत्मबल बढ़ता है तथा हमें अपने कर्त्तव्यपथ पर अधिक सक्रियता के साथ जुट जाने की सद्प्रेरणा प्राप्त होती है। पूज्य गुरुदेव श्री का आशीर्वादपूर्ण मार्गदर्शन हमें अपूर्व धरोहर के रूप में प्राप्त होता है।

आशा है, प्रत्येक परिषद् साथी अपने जीवन को परिषद् के माध्यम से अपने सेवाकार्यों से देव-गुरु तथा धर्म के भक्तिकाल एवं समाजोन्नयन के स्वर्णकाल में परिणित करेगा। जय जिनेन्द्र!

बार रे! मानव कैसे पतन तक...?

मानव कितना अनैतिक तथा क्रूर बनता जा रहा है, विश्व में इसका नृशंस उदाहरण बालकों का अपहरण करने और उनका व्यवसाय करने वालों के तरीकों में देखा जा सकता है। जहां कई महापुरुषों ने विश्व के कोने-कोने में अहिंसा, मानवता, दया तथा सहिष्णुता की शिक्षा प्रतिपादित की है, वहीं क्रूरता, निर्दयता एवं धनलोलुपता भी चरम तक पहुँच रही है। हाल ही में यह तथ्य प्रकट हुआ है कि जीवित बालकों को बेचने तथा खरीदने का अनैतिक व्यवसाय विश्व में तीसरे क्रम का सबसे बड़ा काला धंधा बना हुआ है। इस संबंध में गहराई से जानकारी लेने पर हृदय रो उठता है तथा ऐसे भाव उत्पन्न हो जाते हैं जो मन-मस्तिष्क को विषाद से भर देते हैं।

सुरेन्द्र लोढा
सम्पादक

पूरे विश्व में ऐसा गिरोह बना हुआ है, जो गरीब देशों के बच्चों का अपहरण करता है अथवा उनको खरीदता है। ऐसे बच्चों को अन्यत्र ले जाकर उनका कई प्रकार से शोषण करते हैं। इनमें से एक तरीका है बालकों को आपरेशन टेबल पर सुला कर उनकी किडनी, आँखों के रेटिना, लीवर व अन्य अंग निकाल कर बेच देना। यूरोप तथा विशेषतः अमेरिका में कई धनाढ्य लोग इन अंगों को खरीदकर उनका ट्रांसप्लांट करवा लेते हैं। इस तरह अंगों के विक्रय का यह व्यवसाय लगभग चालीस हजार करोड़ रुपयों का है। क्रय किए गए बच्चों से दूसरा कार्य वैश्यावृत्ति करवाना है। यूरोपीय लोगों का यह अलग ही प्रकार का भत्सर्नीय शौक है। बालकों से वैश्यावृत्ति करवाने की ब्ल्यू फिल्मों की वहां के बाजारों में खूब मांग है। इसके लिए इनका अवैध तथा अनैतिक उपयोग ऐसी फिल्में बनाने में भी किया जाता है। यह व्यवसाय भी अविश्वसनीय रूप से विशाल पैमाने पर है। इतना ही नहीं बालकों का उपयोग ड्रग्स केरियर के रूप में भी होता है। बालकों पर शंका एकदम नहीं हो पाती है अतएव बालकों से हेरोईन, चरस, कोकिन सहित अन्य नशीली सामग्रियाँ व इनसे निर्मित गोलियों आदि की स्मगलिंग या आपूर्ति करवाई

जाती है। बालक कर चोरी करने में भी सफल हो जाते हैं अतएव उनसे इनकी तस्करी करवाई जाती है। ड्रग्स की तस्करी अविकसित देशों में खूब फल-फूल रही है। ऐसे देशों की स्थिति एशिया में अधिक है। इन देशों में नेपाल, भारत, बांग्लादेश, पाकिस्तान, ईरान, अफगानिस्तान आदि की गणना की जाती है। बालकों का दुरूपयोग इस तरह हजारों करोड़ रुपयों का काला धन बनाने में होता है।

गरीब देशों में बालकों के अपहरण की प्रवृत्ति खूब है। इनका अपहरण कर उनसे अनैतिक कार्य करवाने के लिए ही होता है। इस उप महाद्वीप में नेपाल तथा बांग्लादेश सबसे निर्धन देशों में माने जाते हैं। यहाँ से कोई साठ हजार से अधिक बालक ले जाये जाते हैं जिन्हें परेशान कर अथवा यातनाएं देकर वैश्यावृत्ति सहित अन्य कुकृत्यों में लगा दिया जाता है। भारत में भी आदिवासी इलाके अभी भी अविकसित, अशिक्षित और साधनहीन हैं। यहाँ जीवन जीने का वातावरण भी नारकीय है। इन क्षेत्रों में ऐसे असामाजिक तत्व घूमते ही रहते हैं जो बालकों को थोड़ा लालच देकर उनका अपहरण कर लेते हैं अथवा उनके अभिभावकों को थोड़ा पैसा देकर उन्हें खरीद लेते हैं। बाद में अधिक धनराशि में बेचकर पैसा कमाते हैं। ऐसे बालकों को जाली संस्थाओं के माध्यम से विदेशी संस्थाओं को बेच दिया जाता है। इस हेतु दत्तक की लिखापढ़ी पर कानून से बचने का रास्ता निकाला जाता है। ये संस्थाएं या व्यक्ति इन बालकों को पूर्व सुनियोजित तरीके से अस्पतालों को सौंप देते हैं जो इनकी किडनी, लीवर या अन्य अंगों को निकाल कर समान रक्त ग्रुप वालों को लगा देते हैं। बाद में इन्हें घरेलू नौकरों के रूप में विक्रय किया जाता है।

बालकों का अपहरण करवाकर वैश्यावृत्ति करवाने, वीभत्स फिल्में बनाने के केन्द्र भारत में चैन्नई, कोलकत्ता, गौहाटी, मुंबई में तथा विदेशों में मास्को, न्यूयार्क, क्वालालंपुर, हांगकांग, दुबई, ढाका, लाहौर, टोकियो आदि शहरों में हैं। ऐसे बच्चों को धोखा देकर ले जाया जाता है। बच्चों का व्यवसाय करने वाले गिरोह बालकों को कल्चरल या अन्य कथित टूर के नाम से विदेशों की सैर का प्रलोभन देकर भी अपना उद्देश्य पूरा करते हैं। यूरोप, अमेरिका, अरब देशों में अनैतिक कार्य करवाने हेतु बालकों की काफी मांग है। वहाँ धनाढ्यता के साथ अनैतिक जीवन भी काफी फला-फूला है। विभिन्न देशों में फैले हुए ऐसे गिरोहों का आपस में सम्पर्क भी है।

आज का मानव इतना भ्रष्ट, अनैतिक, बिगड़ैल, कानून की अवहेलना कर अपराध करने वाला बन गया है यह देख, सुनकर ही हमारी मनःस्थिति शर्मसार अनुभव करने लगती है। आश्चर्य है, मानव को ऐसे अधर्म के दंड का कोई भय भी नहीं रहा है। भगवान इन्हें सद्बुद्धि दें। पैसे के लिए इतनी क्रूरता तथा अनैतिकता मानवता पर कलंक है। तीर्थंकर देवों द्वारा दिग्दर्शित मार्ग इनके जीवन तक भी पहुंच पाये तभी सुधार सम्भव है।

शांति और क्रांति के अग्रदूत -दादा गुरुदेव

(धीमी गतिवाला)

हमारे चरित्रनायक श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरिश्वरजी आगार रत्नराज से अणगार रत्नविजयजी बन गए हैं। दीक्षा से पहले थे, रत्नराज। रत्नों पर वे राज कर रहे थे। यानी संसार में रहते हुए भी निःस्पृहता से जीवन जी रहे थे। दीक्षा के बाद बन गए हैं, रत्नविजयजी। रत्नों का अब उन्होंने त्याग कर दिया है, उनकी निःस्पृहता नये सोपान पर चढ़ गई है। पहले उनका कमल संसार रूपी कीचड़ में था पर उससे अलिप्त था। अब उनके कमल ने कीचड़ से संबंध ही तोड़ लिया है, पोषण देने वाले से संबंध टूट गया है, परन्तु फिर भी उनका निःस्पृहता रूपी कमल अपनी सम्पूर्ण कलाओं के साथ खिला हुआ है, यह आश्चर्य है। यह आश्चर्य जिनशासन की परम पावनी दीक्षा से संभव हुआ है। जैसे ही श्रीमद् विजयप्रमोद सूरिश्वरजी अपने नवदीक्षित शिष्य के नाम की 'रत्नविजय' रूप में घोषणा करते हैं, वैसे ही रत्नविजयजी का जयघोष चारों दिशाओं में गूंज उठता है।

माता केशरबाई और पिता ऋषभदासजी का अत्यन्त प्रियरत्न अब जिनशासन का अत्यन्त उज्जवलरत्न बन गया है। रत्नराज अब भैया माणकचंदजी, भाभी लीलावती, बहन प्रेमा के नहीं रहे लेकिन वास्तव में वे अब सबके हो गये हैं और सबमें भैया, भाभी और बहन भी आते हैं। मोह का क्लिष्ट भाव चला गया है आत्मवत् सर्वभूतेषु का मैत्री भाव आ गया है। अब वे स्वतंत्र हैं, इसके बावजूद भी वे स्वेच्छा से स्वीकारे बंधन में हैं, यानी कि वे अपने गुरुदेव के प्रति पूर्णरूपेण समर्पित हैं। यह समर्पण, यह गुरुआज्ञा का बंधन इसलिए है कि उन्हें अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ना है। वह लक्ष्य है, आत्मशुद्धि करते हुए परिपूर्ण स्वतंत्रता तक पहुंचने का, यानि आत्ममुक्ति का। जब हम दादा गुरुदेव के सम्पूर्ण जीवन चरित्र का विहंगावलोकन करते हैं तो पाते हैं कि उनका लक्ष्य स्वयं की आत्मशुद्धि, स्वयं की आत्मशांति ही नहीं था वरन् प्राणीमात्र जीवनशुद्धि का

लक्ष्य अपनाएं, मुक्ति की परमशांति

पाएं, आत्मा के परम आनंद की स्थिति को प्राप्त करें, यह भी उनकी दृष्टि थी। परार्थकरण करने की उच्च भावना रखने वाले एक विरल क्रांतिकारी महापुरुष के दर्शन हमें उनमें प्राप्त होते हैं।

भैया माणकचंदजी व परिवारजन व्यथित हैं, अन्यमयस्क हैं। रत्नराज अपने विनय, स्नेहभाव, मधुर स्वभाव के कारण परिवार में अत्यन्त चहेते रहे हैं। रत्नराज की दीक्षा उन्हें विरह की पीड़ा दे रही है। आचार्यश्री परिवारजनों को दिलासा देते हैं–सच्चा स्नेह अपने स्नेहीजन को आत्महित के मार्ग पर आगे बढ़ता देखकर प्रसन्न ही होता है एतदर्थ आचार्यश्री उन्हें अपने मोह को विराम देने की बात कहते हैं। परिवारजनों को कुछ शांति प्राप्त होती है। कुछ दिनों तक परिवारजन, स्नेहीजन उदयपुर में रुकते हैं फिर अपने में रत्नराज के दिव्य व्यक्तित्व की कमी का अहसास करते हुए आचार्य भगवंत से, रत्नविजयजी से और उदयपुर से बिदाई लेकर भरे हृदय से भरतपुर की ओर प्रस्थान करते हैं।

मुनिराज रत्नविजयजी कर्मठ हैं। दीक्षा के प्रथम दिवस से ही दीक्षा सफल बने, उज्वल बने, दीपायमान हो, ऐसे कृत्यों में वे तन्मय हो लग गए। संयम जीवन का एक प्रमुख प्राणभूत कर्तव्य स्वाध्याय यानी ज्ञानसाधना तो जैसे उनका जीवन मंत्र ही बन गया था। विनय, विवेक, अनासक्ति, शुद्ध साध्वाचार पालन, तप, जप, वैयावच्च, ध्यान आदि महान कार्यों में वे प्रमाद रहित हो संलग्न हो गए। अपनी उत्कृष्ट साधना से वे मुनिजनों के साथ श्रावकजनों में भी सबके प्रिय बन गए। उनकी एक अलग पहचान कायम हुई। अपने गुरु के तो वे अत्यन्त चहेते बन गए। गुरुदेव अपने चहेते शिष्य की ज्ञान साधना में अपना परिपूर्ण सहयोग दे रहे थे। रत्नविजय जी भी अपनी तीव्रबुद्धि से शास्त्रों के रहस्यों को आत्मसात करते जा रहे थे। श्रीमद् विजय प्रमोद सूरिजी और मुनिराज श्री हेमविजयजी, रत्नविजय के व्यक्तित्व के रत्न को तराशते जा रहे थे। वे दोनों रत्नविजय की ज्ञान प्राप्ति की तीव्र ललक एवं दिव्य प्रतिभा को निहारते हुए उसके उज्वल भविष्य की कल्पनाओं को सत्य सिद्ध करने के लिए नित नए आयाम खोज रहे थे। वे विचार कर रहे थे कि रत्नविजय को ज्ञान की विध विधाओं में पारंगत करने के लिए किन विद्वान, ज्ञानी, सत्पुरुष के सान्निध्य में अध्ययन के लिए भेजा जाए। वे सोचते हैं कि अधिक उम्र के कारण अब अधिक विहार करने की शक्ति उनमें नहीं रही है, अतः रत्नविजय का विछोह सहकर भी उन्हें किसी सरस्वती पुत्र के ज्ञानी व्यक्तित्व के

संरक्षण में भेजना होगा, जिससे वे शिक्षा प्राप्त कर, ज्ञान की विशिष्ट कलाओं को धारण कर ज्ञानशिखर का आरोहण कर सकें और स्व एवं पर कल्याण में सहभागी बन सकें।

उस समय खरतरगच्छीय यति श्री सागरचंद्रजी जो कि श्रीमद् विजय जिनदत्त सूरिश्वरजी के समुदायवर्ती साधु थे, उनकी विद्वत्ता की ख्याति चहुं ओर पसरी हुई थी। मारवाड़ क्षेत्र में तो वे अत्यधिक प्रसिद्ध थे। वे सरल स्वभावी, प्रकांड विद्वानी थे। श्रीमद् विजय प्रमोद सूरिश्वरजी की उनसे मित्रता थी। यह निर्णय किया गया कि उन्हें आमंत्रित किया जाए और रत्नविजय को उनकी निश्रा में उनके साथ विद्या अध्ययन के लिए भेजा जाए। रत्नविजयजी को जब यह सब पता लगता है तो उनका मन गुरु विरह की कल्पना से सिहर उठता है। गुरुदेव से वे निवेदन करते हैं कि मैं आपका विरह सहन करने की स्थिति में नहीं हूँ और आपके पास ही रहना चाहता हूँ। तब गुरुदेव उन्हें समझाते हैं कि जिसके प्रति प्रीति होती है, उसका विरह तो कभी होता ही नहीं है। शिष्य गुरु से अत्यन्त दूर रहता हो, तो भी गुरु उसके अत्यन्त निकट उसके हृदय में ही रहते हैं। जिस शिष्य की गुरु के प्रति प्रीति नहीं है, वह निकट रहकर भी गुरु से बहुत दूर ही रहता है। इसलिए विरह तो है ही नहीं, क्योंकि तुमने मुझे अपने हृदय में स्वीकार कर लिया है और मेरे हृदय में भी तुम बस गये हो, वास्तव में रत्नविजयजी ने अपनी विशिष्ट प्रतिभा और गुणों के कारण अपने गुरु के हृदय में स्थान बना लिया था। शिष्य के हृदय में गुरु बसते हैं यह एक सामान्य बात है लेकिन गुरु के हृदय में शिष्य बस जाए यह अत्यन्त विशिष्ट, विलक्षण बात थी। रत्नविजयजी के प्रत्येक कृत्य में शांति, शीलता, और क्रांतिधर्मिता प्रगट होती थी, उसी का यह चमत्कार था। अंततः रत्नविजयजी गुरु विरह को एक ओर रखकर अध्ययन के लिए जाने की गुरु इच्छा को स्वीकार कर लेते हैं। उनके लिए गुरु प्रीत और गुरु आज्ञा से बढ़कर कुछ नहीं था। यतिश्री सागरचंद्रजी को मिलने का संदेशा भेजा जाता है और वे अपनी मित्रता का प्रमाण देते हुए तुरंत विहार करके आते हैं।

श्रीमद् विजय प्रमोद सूरिश्वरजी, यति श्री सागरचंद्रजी से रत्नविजय का परिचय करवाते हैं। वे रत्नविजय का परिचय देते हुए कहते हैं कि यह अत्यन्त विनयशील, कुशाग्र बुद्धि, शुद्ध चारित्रवान है, ज्ञान पिपासु है। हमारे पास जितना था, उतना हमने इन्हें दिया है। परन्तु ये निरंतर प्रवर्द्धमान है, अतः हम इन्हें आपकी शुभ निश्रा में ज्ञानार्जन के लिए सौंपना चाहते हैं। इन्हें अपने

शिक्षार्थी के रूप में स्वीकार कर अध्ययन करवाने की कृपा करें। यतिश्री सागरचंद्रजी कुछ दिनों की स्थिरता कर उनके साथ रहते हैं और इन दिनों में रत्नविजय के गुणों को भी वे परख लेते हैं। रत्नविजय की उत्कृष्ट विनयशीलता, सुसंस्कृत व्यवहार, जिज्ञासा, अभ्यास की तीव्र लगन देखकर यतिश्री सागरचंद्रजी के हृदय में भी उनका ऊँचा स्थान बन जाता है। वे सोचते हैं, यह तो अत्यन्त विचक्षण और विलक्षण है। उन्हें विश्वास हो जाता है कि रत्नविजय को ज्ञान की अनेकविध विधाओं में पारंगत करना हितकारी होगा और निश्चय ही यह शिष्य ज्ञान प्राप्त कर जिनशासन की उत्कृष्ट सेवा में अपना विशिष्ट योगदान प्रदान करेगा, एतदर्थ वे सहर्ष उन्हें अध्यापन कराने को तैयार हो जाते हैं। रत्नविजय को अपने साथ लेकर विहार कर जाते हैं।

यतिश्री सागरचंद्रजी और मुनिश्री रत्नविजयजी दोनों का गच्छ भेद, क्रिया भेद। एक खरतरगच्छ के और दूसरे तपागच्छ के, परन्तु दोनों उदार, संकीर्णता का कहीं नामो निशान नहीं। रास्ते अलग भी हों लेकिन लक्ष्य एक हो, राग-द्वेष विजय का दृढ़ इरादा हो तो फिर क्या परेशानी हो सकती है? संप्रदाय की अपनी एक आवश्यकता है, लेकिन दोनों में संकीर्ण सांप्रदायिक भावना का अभाव था। दोनों जिनशासन की छत्रछाया को स्वीकारने वाले थे। दोनों के मन में अभेद था, समन्वय था। रत्नविजयजी जैसे अपने गुरु के प्रति समर्पित थे, वैसे ही वे अत्यन्त विनम्र भाव से यतिश्री सागरचंद्रजी के प्रति भी समर्पित हो गए। यतिश्री सागरचंद्रजी, रत्नविजय की विनम्रता, सरलता, निर्दोषता को देखकर भाव विह्वल हो जाते। वे रत्नविजय रूपी सुपात्र में अपनी सारी ज्ञान संपदा उंडेलते रहे। उदार हृदय से दी गई ज्ञान संपदा को रत्नविजयजी अत्यन्त विनम्रता से अपने हृदय में समा लेते हैं। यतिश्री सागरचंद्रजी का दिशा निर्देशन और रत्नविजयजी का अथाह परिश्रम सुपरिणाम लाता है। केवल पांच वर्ष की अल्प अवधि में रत्नविजयजी व्याकरण, कोष, काव्य, न्याय, दर्शन आदि ज्ञान की विविध विधाओं के पारगामी बन जाते हैं। अध्ययन पूर्ण होता है, तब यतिश्री सागरचंद्रजी रत्नविजय को लेकर आचार्यश्री के पास लौटते हैं। हर्षभरी अश्रुभीगी पलकों के साथ सबका मधुर मिलन होता है। यतिश्री सागरचंद्रजी ने रत्नविजयजी को जो कुछ अर्पित किया उसे देखकर आचार्यश्री अत्यंत संतुष्ट और प्रसन्न होते हैं। आचार्यश्री उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त कर उन्हें यथोचित सम्मान देते हैं।

कुछ महीने यतिश्री उनके साथ ही रहते हैं। जब वे प्रस्थान की बात करते हैं, तब आचार्यश्री और रत्नविजयजी उनके उपकारों का स्मरण कर अत्यन्त भाव विभोर हो जाते हैं। प्रस्थान के समय यतिश्री सागरचंद्रजी, आचार्यश्री से निवेदन करते हैं, कि रत्नविजय को आगमों का तलस्पर्शी ज्ञान प्राप्त कराने के लिए, आगमों का सविधि अध्ययन आगमों के किन्हीं ज्ञाता पुरुष से अवश्य करवाएं। यह महत्वपूर्ण निवेदन कर वे बिदाई लेते हैं।

अब आगमों का अध्ययन करने के लिए रत्नविजयजी को कौन से ज्ञानी पुरुष का सत्संग प्राप्त होता है? और यह सारा मौनभाव से किया गया अध्ययन उनके जीवन रूपी महल को उच्चता देने में मजबूत नींव की तरह कैसे काम आता है? इन सारी ज्ञान साधनाओं से कैसी शांति धाराएं बहती हैं और क्रांति की कैसी किरणें प्रस्फुटित होती हैं? यह सब यथा अवसर, यथा योग आगे के लेखों में...

यदि

देखिए ! यह छोटा सा शब्द 'यदि' मनुष्य के जीवन नाटक में कितना बड़ा पात्र सिद्ध होता है–
अवस्था कितनी भिन्न होती–
यदि आप हमेशा स्वस्थ रहते।
यदि आप अति भोजन से विरत रहते।
यदि आपने नित्य व्यायाम किया होता।
अवस्था कितनी भिन्न होती
यदि आपने ऋण न लिया होता।
यदि आपने जीवन में सादगी अपनाई होती।
यदि आपने समय का दुरुपयोग न किया होता।
यदि आपने सारे कार्य बुद्धिमानी से किये होते।
अवस्था कितनी भिन्न होती–
यदि आपने क्रोध को वश में किया होता।
यदि आपने धैर्य से काम लिया होता।
यदि आपने दुर्दिन का ध्यान रखा होता।
यदि आपने मित्र की बात मान ली होती।
अवस्था कितनी भिन्न होती–
यदि आपने अपनी सारी शक्ति लगाकर काम किया होता।
यदि आपने लोगों का चुकता तुरंत किया होता।
यदि आपने लोगों की सहानुभूति प्राप्त की होती।
यदि आपने सेवाभाव से कार्य किया होता।
अवस्था कितनी भिन्न होती –
यदि आप कठोर न बनते।
यदि आप बात कम करते।
यदि आपने साहस के साथ अपनी बात कही होती।
यदि आपने नित्य धर्म–ग्रंथों का पाठ किया होता।
अपनी आदतों का अध्ययन कीजिए। भय, शंका, निराशा जैसे नकारात्मक भावों की जगह मन में आत्मविश्वास, आशा, आत्मनिर्भरता को स्थान दीजिए। अपने मस्तिष्क को संतुलित कीजिए।

धर्म क्रियाएं तथा चिन्तन

(डॉ.चंचलमल चौरड़िया)

साधना का मूल उद्देश्य कषायों में मंदता :-

साधना का मूल उद्देश्य इन्द्रिय विषयों एवं कषायों में मंदता लाना है परन्तु प्रायः ऐसा अनुभव किया जा रहा है, कि आज हमारी धार्मिक क्रियाएं, आयोजन, सेवा-दान के कार्य बिना चिंतन, जन साधारण की वाहवाही प्राप्त करने तक सीमित हो रहे हैं। जिससे कभी-कभी विषय-कषाय घटने के स्थान पर बढ़ रहे हैं। इस बात पर हमारा ध्यान नहीं जा रहा है। हमें हमारे मूल सिद्धान्तों का ज्ञान तक नहीं हैं, फिर उन पर सम्यग् श्रद्धा, चिन्तन, आचरण, समीक्षा कैसे हो?

साधना हेतु सम्यक् चिन्तन आवश्यक :-

डॉक्टर बनने के लिए, जैसे-डॉक्टरी का अध्ययन और इंजीनियर बनने के लिए इंजीनियरिंग का अध्ययन आवश्यक होता है, ठीक उसी प्रकार साधक बनने अथवा साधना करने से पूर्व उसके उद्देश्य, तरीके आदि का ज्ञान आवश्यक होता है। ज्ञान से स्वाध्याय एवं चिंतन की तरफ हमारे कदम बढ़ते हैं। चिंतन से विवेक जागृत होता है। अंधानुकरण रुकता है एवं लक्ष्य की तरफ बढ़ने में मिलने वाली अनुभूति का आभास होता है।

चिंतन से हमारा दृष्टिकोण एकपक्षीय न होकर यथार्थवादी होता है। साधना में एकाग्रता, दृढ़ता एवं तल्लीनता आती है। चिंतन के साथ जो भी क्रियाएं की जाएंगी उसमें दिखावा कम होगा। साधना के सही स्वरूप का ख्याल रहेगा एवं आवश्यक सावधानी हेतु सदैव सजगता रहेगी। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आध्यात्मिकता को महत्त्व मिलेगा एवं हमारे जीवन में निश्चित रूप से बदलाव आवेगा। हमारी प्राथमिकताएँ एवं मापदण्ड बदलेंगे। भौतिक प्रवृत्तियों में रुचि व आकर्षण कम होगा। जीवन में समता का विकास होगा, जिससे मन अनुकूल एवं प्रतिकूल वातावरण में विचलित नहीं होगा। हमारा लक्ष्य आत्मशांति की, किसी भी मूल्य पर रक्षा करने का होगा। हम संसार में रहते हुए, अपने सभी कर्तव्यों एवं जिम्मेदारियों का निर्वाह करते हुए भी उसमें आसक्त होने से बचने हेतु प्रयत्नशील रहेंगे।

प्रश्न खड़ा होता है कि जब चिंतन

एवं समीक्षा इतनी आवश्यक है तो धार्मिक क्षेत्र में कदम बढ़ाने वाले साधक उसकी उपेक्षा क्यों करते हैं? रूढ़िगत द्रव्य साधना मात्र से उन्हें संतुष्टि कैसे मिलती है? कभी सद्गुरुओं की सेवा में उपस्थित हो, अपनी सही वस्तु स्थिति बतलाने का प्रयास क्यों नहीं करते? साधक द्वारा गुरु से समाधान मांगने पर भी कहीं सद्गुरु ऐसा तो नहीं सोचते -जैसा करते हैं, करने दो, नहीं करने वालों से तो अच्छे ही हैं। साधना से उनका तन और वाणी तो स्थिर हुई है और धीरे-धीरे मन भी स्थिर हो ही जाएगा, अगर उन्हें अधिक प्रेरणा दी गई तो वे धार्मिक स्थलों में आना ही छोड़ देंगे अथवा यह कि, जिन विषय-कषाय को कम करने की प्रेरणा दी जानी चाहिए उनसे वे स्वयं अछूते नहीं हैं?

द्रव्य एवं भाव साधना का तालमेल आवश्यक :-

वर्तमान में अधिकांश साधकों में सम्यग्ज्ञान का अभाव होता है एवं उनकी साधना सद्गुरुओं की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन पर आधारित होती है। प्रायः द्रव्य साधना की ही प्रेरणा दी जाती है। विषय-कषाय को कम करने के लिए जितनी और जैसी नियमित प्रेरणा देनी चाहिए, संकल्प कराने चाहिए, उसकी उपेक्षा हो रही है। विषय-कषाय की मंदता के बिना द्रव्य साधना कितनी प्रभावकारी होगी, इस पर चिंतन नहीं हो रहा है। अतः हम मूल को छोड़ फूल-पत्तों को सींचने में अपना श्रम कर रहे हैं।

विषय-कषाय की मंदता एवं आध्यात्मिक आनंद का निश्चित मापदण्ड न होने से बाह्य साधना की गणित से ही हम अपनी साधना का मूल्यांकन करते हैं। हमने कितनी मालायें फेरी, कितने घंटे स्वाध्याय अथवा आगम कथाओं का अध्ययन किया, कितनी सामायिक, दया-पौषध एवं अन्य व्रत प्रत्याख्यान तथा तपस्याएँ कीं? हमारा सारा प्रयास बाह्य क्रियाओं को बढ़ा-चढ़ा कर बताने एवं उनका प्रचार-प्रसार करने का हो रहा है। इसके विपरीत हमने क्रोध को कितना जीता, मान एवं माया पर कितनी विजय पायी एवं लोभ को कितना वश में किया, प्रतिकूल एवं अनुकूल परिस्थितियों में कितना समभाव रहा, हमने सुकृत की कितनी अनुमोदना की आदि बातों की समीक्षा ही नहीं होती। हमें अपने रूढ़िगत मापदंडों को बदलना होगा। हम अपने निज स्वभाव के कितना निकट आये, उसको हमारे अलावा वर्तमान में अन्य कोई नहीं जान सकता। हम ही हमारे

सच्चे परीक्षक, निरीक्षक एवं समीक्षक हैं। जब तक हम (साधक और प्रेरक) स्वयं के प्रति ईमानदार नहीं होंगे, साधना की प्राथमिकता का निश्चय न कर पावेंगे, मूल से भटक बाह्य क्रिया-कांडों में ही उलझे रहने की संभावना बनी रहेगी। जब तक मूल सुरक्षित है, बाह्य साधना उपयोगी हो सकती है, परन्तु मूल से हटने पर उसका महत्त्व नगण्य हो जाता है। जिस प्रकार अंक के साथ शून्य होने से उसका महत्त्व अधिक बढ़ जाता है, परन्तु बिना अंक शून्य का क्या महत्त्व?

इसी प्रकार जो साधना एवं क्रियाएँ हमें अपने निज स्वभाव में लाने में सहयोगी हों, हमारे लिए उपयोगी हैं और जो विभाव में ले जाने वाली हैं, हमारे लिए हानिकारक हो सकती हैं। साधना एवं धार्मिक क्रियाओं को करते समय इस मापदंड को ध्यान में रखना होगा। जो साधना आस्रव को रोक संवर एवं निर्जरा में सहयोगी हैं, वे ही हमारे लिए करणीय हैं, अन्यथा नहीं।

साधना का विकृत रूप-अहं तुष्टिः-

आज हमारी दृष्टि बदल गई है। धार्मिक अनुष्ठानों से हमें कितना आदर-सत्कार, मान-प्रतिष्ठा एवं अहम् तुष्टीकरण होता है, यह सफलता का मापदंड बनता जा रहा है। इसी कारण जब कभी पर्युषण एवं चातुर्मास की सफलता का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया जाता है, तो व्रत-प्रत्याख्यान एवं तपस्याओं के आंकड़े प्रस्तुत किये जाते हैं। कितने व्यक्तियों का जीवन बदला, जीवन में नैतिकता एवं प्रामाणिकता का कितने व्यक्तियों ने संकल्प लिया, मान एवं माया से बचने का कितनों ने निश्चय किया, क्रोध त्यागने एवं लोभ को वश में करने का कितना दृढ़ मनोबल दिखाया, पूर्वाग्रहों को छोड़, आध्यात्मिकता से जुड़ने इत्यादि के आंकड़े शायद ही कहीं देखने को मिलते हैं। इसका कारण यह कि हमें जिन मूल सिद्धान्तों को जितना महत्त्व देना चाहिए, उन्हें उतना महत्त्व नहीं दिया और भौतिक साधना को ही सब कुछ मान संतुष्ट होने की भूल हम कर रहे हैं।

अतः साधना के साथ सम्यक् चिंतन आवश्यक होता है। उसके अभाव में हम अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकते। चिंतन के अभाव में साधना के लिए खर्च किया गया समय एवं श्रम आशा के अनुरूप उपयोगी नहीं होता। साधना के साथ चिंतन के जुड़ जाने से उसका लाभ कई गुना बढ़ जाता है। अतः साधना के साथ चिंतन की अनिवार्यता आवश्यक है।

गतांक से आगे

ईर्ष्या का कटु फल

(आचार्य श्री रत्नसेन सूरिश्वरजी म.सा.)

सुबंधु ने आगे कहा, 'महाराजा और महारानीजी साथ में भोजन कर रहे थे। अभी महारानी ने दो कौर भी नहीं लिए थे और चाणक्य ने कटार घोंपकर महारानी का पेट चीर डाला। अच्छा हुआ, भाग्य योग से आप बच गए अन्यथा आप भी मौत के शिकार हो जाते।'

क्या उस समय वहां अंगरक्षक हाजिर नहीं थे?

'राजन्! जहाँ सम्राट का भी कुछ नहीं चला तो अंगरक्षकों की तो ताकत ही क्या थी? बस, भविष्य में आपके ऊपर आपत्ति न आ जाए इसी हेतु आपको सावधान करने के लिए मैं आया हूँ।' इतना कहकर सुबंधु वहां से चला गया।

महाराज के दिल में एक चिंगारी पैदा हो चुकी थी, जिसे बुझाना आसान नहीं था। तत्काल उन्होंने किसी दासी को पूछ लिया; 'महारानी का पेट किसने चीरा था?'

गुप्त रहस्य से अनभिज्ञ दासी ने भी तत्क्षण ही कह दिया, 'यह सब काम तो चाणक्य ने ही किया है।'

नाम सुनते ही बिंदुसार की आँखें लाल हो गईं। बस, चाणक्य के प्रति बिंदुसार के औचित्य व्यवहार में एकदम परिवर्तन आ गया।

इधर चाणक्य को भी समझते कुछ देर न लगी। सुबंधु की चाल को चाणक्य समझ गए। ऐसे भी राज्य के कार्यभार से वे निवृत्त होना ही चाहते थे और इस रूप में मानों उन्हें सुंदर अवसर हाथ लगा था। वे भीतर से प्रसन्न ही थे।

चाणक्य ने बिंदुसार से कार्यभार से निवृत्ति मांगी। बिंदुसार ने भी सहर्ष अपनी सम्मति दे दी। अब सुबंधु को कुछ सबक सिखाने की भावना से चाणक्य ने अपने कमरे में एक तिजोरी में कुछ सुगंधी पदार्थ रखकर उसमें एक चिट्ठी लिखी। जिसमें लिखा था–'इस सुगंधी पदार्थ को सूंघने के बाद जो भी व्यक्ति दुनिया की मौज–मजा करेगा, वह शीघ्र ही मृत्यु के मुख में चला जाएगा।'

इधर राज्य के कार्यभार से चाणक्य के निवृत्त होने की खबर ज्योंही नगर में फैली त्योंही प्रजाजनों में तीव्र आक्रोश पैदा हुआ। भयंकर आघात लगा। चंद्रगुप्त के अवसान से पाटलीपुत्र की प्रजा ने जो वज्राघात अनुभव किया था, ऐसी ही वेदना प्रजाजन अनुभव कर रही थी।

चाणक्य की विदाई से सभी की आँखों में आँसू थे, परंतु आनंद था तो एकमात्र सुबंधु को।

चाणक्य ने स्वेच्छा से नगर छोड़ दिया। पाटलीपुत्र के बाहर किसी वृक्ष के नीचे पद्मासन में बैठकर समाधि में लीन हो गए। उन्होंने अरिहंत आदि की शरणागति स्वीकार की। धन-स्वजन, परिवार की ममता ही नहीं, देह के ममत्व को भी छोड़ आत्मा के सच्चिदानंद स्वरूप में मग्न रहने लगे।

इधर नगर में हाहाकार मच गया था। तभी धावमाता दौड़ती हुई महाराजा बिंदुसार के खंड में आ पहुँची और बिंदुसार को ठपका देती हुई बोली, 'राजन्! तुमने यह क्या कर डाला? जिन्होंने तुम्हारे पिता और तुम्हारी जिंदगी को बचाने के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया, उसी का तुमने बहिष्कार कर दिया। तुमने यह अच्छा नहीं किया।'

'माताजी! मेरे पिता तो उनसे दबे हुए थे। उन्होंने उनके सभी अपराधों को निगल लिया, लेकिन मैं उनके अपराध को कैसे सहन करूँ?'

'बेटा! तेरी मति भ्रमित हो गई है। चाणक्य ने तेरी माँ की हत्या नहीं की है। तेरे पिता को कोई जहर देकर मार न दे इसलिए उनके भोजन में थोड़ा-थोड़ा विष दिया जा रहा था, जिससे वे उसे आराम से पचा सकें। जहर की मात्रा धीरे धीरे बढ़ाई जा रही थी। इसके साथ ही चाणक्य की कड़क सूचना थी कि महाराजा के साथ अन्य कोई भोजन न करे। एक बार चाणक्य कहीं बाहर गए हुए थे, तभी महारानी ने महाराजा के साथ भोजन का आग्रह कर दिया। रानी की जिद के आगे महाराजा को झुकना पड़ा। महारानी ने भोजन के एक-दो कौर ही लिए थे कि वे जहर के प्रभाव से भूमि पर लेट गईं, तभी चाणक्य का वहाँ आना हुआ। वस्तुस्थिति को समझकर तत्क्षण उन्होंने अपनी कमर से कटार निकाली और महारानी का पेट चीरकर आपको बाहर निकाल लिया। इतना होने पर भी भोजन के विष का प्रभाव आपके मस्तक पर आ गया था। इसी के प्रभाव से आपके मस्तक पर एक जगह बाल नहीं हैं। इस बिंदु के असर के कारण ही आपका नाम 'बिंदुसार' रखा गया है।' धावमाता ने वस्तुस्थिति से अवगत कराते हुए बताया।

चंद्रगुप्त को भोजन में थोड़ा-थोड़ा विष देने की बात चाणक्य और मेरे सिवाय अन्य किसी को पता नहीं थी। भोजन खंड में सद्भाग्य से उस दिन यदि चाणक्य का आगमन नहीं होता, तो शायद इस समय आपका भी अस्तित्व नहीं होता।

धावमाता के हृदय से निकले वेदनापूर्ण वृत्तांत को सुनकर महाराजा के

आघात का पार न रहा। वे मूर्च्छित से हो गए। थोड़ी देर बाद जल के छिटकाव से महाराजा की मूर्च्छा दूर होने पर धावमाता ने मात्र इतना आग्रह रखा कि –'तुम जाकर चाणक्य को वापस बुला लो। इसी में सबका भला है।'

बिंदुसार को धावमाता की बात में सत्यता प्रतीत हुई और अपनी भूल समझ में आने लगी थी। बिंदुसार अपने परिवार के साथ चाणक्य के पास पहुँचा, परंतु संसार की मोहमाया की चादर को दूर फेंक देने वाले चाणक्य ने पुनः संसार की माया में आने से इन्कार कर दिया और आत्मसाधना में लीन हो गए।

इधर सुबंधु को जैसे ही अपने षड्यंत्र की विफलता का पता चला वह पुनः महाराजा के पास पहुँच गया और अत्यन्त नम्र शब्दों में बोला– 'ओह! मैं भी सत्य समझ नहीं पाया। मेरी भूल हुई। मुझसे बड़ा पाप हो गया। उस पाप के पश्चाताप के लिए मैं उनकी (चाणक्य की) सेवा करना चाहता हूँ।' महाराजा ने सहर्ष सहमति दे दी।

मायावी सुबंधु नगर के बाहर पहुंचा। उसने देखा कि चाणक्य एक योगी की भांति तप–साधना में लीन हैं। 'मुख़ में राम बगल में छुरी' की मायावृत्ति वाले सुबंधु ने सेवा का दिखावा किया। चाणक्य जहाँ बैठे थे वहाँ की भूमि को साफ करने लगा। अवसर देख चाणक्य के आसपास घास के ढेर में उसने आग लगा दी। समताभाव में लीन चाणक्य की देह ज्वालाओं में घिर जलने लगी और देखते ही देखने पंचभूत में विलीन हो गई। उनकी आत्मा का पंछी देह के पिंजर को छोड़ स्वर्ग की दिशा में प्रयाण कर गया। चाणक्य के निधन की खबर से पाटलीपुत्र में सर्वत्र शोक की लहर छा गई। परंतु सुबंधु मंत्री मन–ही–मन खुश था।

चाणक्य की समृद्धि को हथियाने के लिए सुबंधु चाणक्य के भवन में पहुंच गया। खजाने को पाने के लोभ में वह तिजोरी तक पहुंच गया। तिजोरी खोली गई। तिजोरी में से सुगंधित पदार्थ की गंध पुटिका को देख सुबंधु ने 'कोई विलक्षण सुगंधी पदार्थ लगता है।' ऐसा सोचकर उसे सूंघ लिया। इसके बाद पास में रखी चिट्ठी को पढ़ा जिसमें लिखा था –

'गंधानाघ्राय य इमान्न तिष्ठेन मुनिचर्यया।
अंतकस्य स तत्कालम्तिथित्वं गमिष्यति।।'

अर्थ था–इस पवित्र गंध को सूंघने के बाद जो मिष्ठान्न खाएगा, दुनिया की मौज–मजा करेगा, वह तत्काल मृत्यु के मुख में पहुंच जाएगा। चिट्ठी पढ़ते ही अब सुबंधु की हालत दयनीय थी। उसकी आँखों के सामने दूरदर्शी चाणक्य का चेहरा घूम गया और उसे अपने षड्यंत्र भी याद आने लगे। आखिरकार जंगल में भटककर उसने अपनी शेष जिंदगी पूरी की।

– समाप्त

ओसवाल जाति और उसकी उत्पत्ति-2

(मुनिराज श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा.)

जैन आचार्य श्री रत्नप्रभसूरिजी के ओसिया नगरी में आने के पूर्व यहाँ स्थित चामुंडा माता मंदिर में नवरात्रि के अवसर पर पशु बलि देने की प्रथा थी। आचार्यश्री ने उसे रोककर उसके स्थान पर लड्डू, चूरमा, लापसी, खोया नारियल जैसे सुगंधित पदार्थों से देवी की पूजा करवानी शुरू की, बताते हैं कि इससे चामुंडा देवी नाराज हो गईं और आचार्यश्री की आँखों में तकलीफ होना शुरू हो गई। आचार्यश्री पर इसका प्रभाव न देखकर देवी माँ बड़ी लज्जित हुईं और उन्होंने आचार्यश्री से क्षमा मांग सम्यक्त्व ग्रहण किया। साथ ही आज्ञा दी कि आज से मेरे दरबार में मांस और मदिरा तो दूर लाल रंग के फूल भी नहीं चढ़ेंगे। मेरे जो भक्त ओसिया में श्री महावीर स्वामी की पूजा करते रहेंगे, उनके दुःख दर्दों को मैं दूर करूंगी। तभी से चामुंडा देवी का नाम सच्चिया देवी पड़ गया और आज भी वह मंदिर सच्चिया माता मंदिर के नाम से ही विख्यात है। आज भी ओसवाल समाज के बालकों का मुंडन संस्कार यहाँ होता है।

ऐसा कहा जाता है, कि श्री महावीर प्रभु का मंदिर उहड़ मंत्री ने यहाँ बनवाया था और मूर्ति को स्वयं चामुंडा देवी ने बालूरेत और गाय के दूध से तैयार किया था, जिसकी प्राण-प्रतिष्ठा आचार्यश्री रत्नप्रभ सूरिजी ने मार्गशीर्ष शुक्ला पंचमी गुरुवार को अपने हाथों से की थी। ठीक इसी समय कोरंटपुर नामक स्थान में भी श्रावकों द्वारा श्री वीरप्रभु की मूर्ति की स्थापना हुई थी, जिसकी प्राण प्रतिष्ठा का मुहूर्त भी वही था जो कि उपकेशपट्टण के मंदिर की प्रतिष्ठा का था। दोनों स्थानों पर आचार्यश्री ने अपनी विद्या के प्रभाव से स्वयं उपस्थित होकर प्रतिष्ठा सम्पन्न करवाई थी।

उपरोक्त कथा के सार में जो मुख्य बिंदु सामने आते हैं, उनमें उपलदेव के द्वारा ओसिया नगरी का बसाया जाना, मंत्री उहड़ द्वारा महावीर मंदिर का निर्माण कोरंटपुर में होना, आचार्यश्री रत्नप्रभ सूरिजी द्वारा राजा उपलदेव व नगर के सारे क्षत्रियों को जैन धर्म ग्रहण

करवाना और ओसवाल जाति की स्थापना करवाने की बातें प्रमुख हैं। और हाँ, ये सारी घटनाएं विक्रम संवत से लगभग 400 वर्ष पूर्व की हैं।

दूसरी ओर भाटों, भोजकों और सेवकों के मत अनुसार इस जाति के संबंध में उपलब्ध वंशावलियों में ओसवालों की उत्पत्ति संवत् 222 (बीये बाईस) बतलाई गई है और उपलदेव को ही ओसवालों का आदिपुरुष माना गया है। कहा जाता है, कि बीये बाईस के पहले तक ओसवाल 'महाजन' कहलाते थे। ओसवाल नामकरण बीये बाईसे में हुआ। इतिहासकार उपरोक्त मतों की मजबूती को वैज्ञानिक और तार्किक आधार पर परखना चाहते हैं। वे जानना चाहते हैं कि वास्तविकता के धरातल पर ये विचार कितने खरे उतरते हैं।

इतिहासकारों के अनुसार यह बात निर्विवाद सिद्ध है कि उपलदेव परमार ने ही ओसिया नगरी की स्थापना की थी। उपलदेव तात्कालिक कारणों से देश को छोड़कर मंडोवर के पड़िहार राजा की शरण में आया था। यह उपलदेव आखिर कहाँ से आया, इस संबंध में भी भिन्न-भिन्न मत हैं। ऊपर हमने जिन मतों का उल्लेख किया है, उसमें उपलदेव का आना भीनमाल से सिद्ध होता है, जबकि कुछ लोगों के मत से इनका आना किराड़ नामक स्थान में पाया जाता है। इन बातों को स्पष्टरूप से सही माना जाए या नहीं यह बात संदेह के घेरे में है। इसका कारण यह कि भीनमाल के पुराने मंदिरों में जो शिलालेख खुदे हुए मिले हैं, उनमें से दो लेख कृष्णराज परमार के हैं। यह कृष्णराज आबू के परमार उपलदेव का पौत्र था। इस तरह उपलदेव और कृष्णराज के बीच, दो पीढ़ी के मान से समयान्तर लगभग 50 वर्ष का होता है। इससे उपलदेव का समय 10वीं शताब्दी के आसपास माना जा सकता है। परमार उपलदेव ने मंडोवर के पड़िहार राजा की शरण ली, यह बात सभी मत वाले स्वीकार करते हैं। वहीं जैन इतिहासकारों ने आबू के लेखों के माध्यम से बताया कि पंवारों का जन्म स्थान आबू है। वहां के एक लेख में धंधुका से पांच पुश्त ऊपर उपलराज का नाम मिलता है। मगर वंशवृक्ष उपराज से ही शुरू किया गया है। इन बातों से संभव है कि धूमराज के पीछे और उपलराज के पूर्व के समय में कुछ गड़बड़ जरूर हुई है। वहाँ उपलराज का राज्य फिर से कायम होने की बात से यह प्रतीत होता है, कि ओसिया नगर को बसाने वाला उपलदेव ही आबू का उपलराज हो?

-क्रमशः

गतांक से आगे

अन्यत्व भावना-3

(साध्वीश्री श्रुतिदर्शनाश्रीजी म.)

कर्म भी आत्मा से अलग है

पांच प्रकार के शरीर यथा औदारिक शरीर, वैक्रिय शरीर, आहारक शरीर, तेजस शरीर एवं कार्मण शरीर होते हैं। इनमें औदारिक शरीर तिर्यंच एवं मनुष्यों का होता है। वैक्रिय शरीर देवता एवं नारकियों का होता है। आहारक शरीर मात्र अप्रथत्त मुनिगण का होता है जो शंका निवारण के लिए पाते हैं, किन्तु तेजस व कार्मण शरीर तो चौरासी लाख जीव योनि में प्रत्येक जीव का होता है।

कार्मण शरीर पौद्गलिक कार्मण वर्गणाओं का बना होता है। ये कार्मण वर्गणा निर्जीव हैं। पुद्गलात्मक हैं। वर्णादि सहित हैं तथा चक्षु से अगोचर हैं। समस्त लोक व्यापी हैं। आठ वर्गणाओं को जीव ग्रहण कर सकता है, जिनमें सबसे अधिक प्रदेश वाली एवं सबसे सूक्ष्ण कार्मण वर्गणा सम्मिलित हैं जो आत्मा के साथ चिपककर कर्मरूप बन जाती हैं।

अनादिकाल से कर्म आत्मा से जुड़े हुए हैं, तथा क्षीर-नीर जैसे एकमेल हो गए हैं। अनंत शक्तिवाले आत्मा को कर्म अलग-अलग, नाच-नचाते हैं। अजर, अमर और अचल आत्मा में भी प्रवेश कर कर्मराजा ने आत्मा को बहुत पछाड़ा है। जो आत्मा कभी मरती नहीं उसके साथ अनंत, जन्म-मरण जुड़ गए। अरे! एक श्वासोश्वास में साढ़े सत्तर बार जन्म-मरण प्रदान कर दिए। जिस आत्मा को कभी वृद्ध नहीं होना, उसके नसीब में बुढ़ापा आ गया। जो कभी रोगी नहीं होती, उसे रोगग्रस्त कर दिया। अनंत ज्ञानी आत्मा अज्ञानी बन गई है, परमसुखी-महादुखी हो गई है। इन सबका कारण है, कर्म का आत्मा में प्रवेश।

सुख-दुःख, आधि-व्याधि-उपाधि, रोग-शोक, जन्म-मरण सब कुछ कर्म के कारण होता है। अपने-अपने कर्मों के अनुसार ही जीव चार गति में भ्रमण करता है एवं सुख-दुःख भोगता है। विद्वान-मूर्ख, धनवान-

गरीब, रूपवान–कुरूप आदि अवस्थाएं भी कर्म के कारण ही जीव प्राप्त करता है। वैसे तो जीव अनंतगुणों का स्वामी, अरूपी एवं केवल ज्ञान वैभव से युक्त ही है, किन्तु इन कर्मों के आवरण के कारण कर्म की पराधीनता के कारण ही जीव विभिन्न पर्यायों को धारण करता है।

आत्मा जब ज्ञाता, दृष्टा बन जाती है, सम–भाव में आ जाती है तब कर्म उससे भिन्न ही रहते हैं। उस अवस्था में कर्म, आत्मा का कुछ बिगाड़ नहीं सकते। जीव कर्म से जुड़े नहीं तो कर्म उदय में आकर क्षय हो जाते हैं, खिर जाते हैं। कर्म बलवान है, किन्तु इन कर्मों से भी अधिक बलवान तो स्वयं की आत्मा ही है। सम्यक् पुरुषार्थ करके इन कर्मों से मुक्त हो सकते हैं।

परिणाम भी आत्मा से अन्य हैं– तत्त्वार्थ सूत्र में कहा गया है–'परिणामे बंधः।' कर्मों का बंध परिणाम से होता है। जीव के शुभ एवं अशुभ अध्यवसाय सतत चलते रहते हैं। जीव उन अध्यवसाय के अनुसार ही अपने आपको स्वीकार लेता है। मैं क्रोधी, मैं अहंकारी, मैं दानवीर, मैं दयालु, मैं विनयवान इत्यादि...। इस प्रकार आत्मा अर्थात् अपने असली स्वरूप को भूल जाता है। आनंद आत्मा के अंदर होते हुए भी बाहर ढूँढता है।

प्रश्न होता है–कि जब सब कुछ आत्मा से भिन्न है तो आत्मा से अभिन्न क्या है? दर्शन, ज्ञान, चारित्र, आनंदादि अनंत गुण आत्मा से अभिन्न हैं। आत्मा का गुणों के साथ तादात्म्य संबंध है। तादात्म्य संबंध अर्थात् जो आत्मा से जुदा नहीं होते, स्वरूप बनकर ही रहते हैं–वही शरीर, कर्म, अध्यवसाय आदि का आत्मा के साथ संयोग संबंध है। इन सबका वियोग होता रहता है। आत्मा का जिन अनंत गुणों से तादात्म्य है, उनका वियोग नहीं होता। गुण अप्रकट रूप में, तिरोभूत रूप में हैं, जिन्हें हमें पुनः प्रकट करना है, आविर्भूत करना है, जो अन्यत्व भावना का ध्येय है।

पुद्गल राग को तोड़ने में अन्यत्व भावना का चिंतन सहायक है। अन्यत्व भावना यही सिखाती है कि –'हे जीव! तू मूर्च्छा छोड़, आसक्ति छोड़। चेतन्य हो तू तेरे घर में निवास कर। देह भाव को त्यागकर, शरीर को धर्म–आराधना का साधन मान और जुट जा।' मरूदेवी माता, गौतम स्वामी ने अन्यत्व भावना से भावित होकर ही केवल–लक्ष्मी को पाया । इस प्रकार अन्यत्व भाव से भावित होकर अब तक अनन्त आत्माओं ने अपना कल्याण किया है।

(समाप्त)

एक पत्र गुरु के नाम

पेपराल की धरती बता रही – 'मिलकर रहना सीख..'

श्री विजयसिंह लोढ़ा
निम्बाहेड़ा

धर्म चक्रवर्ती, जैन जगत के कमनीय कमल, राष्ट्रसंत परम पूज्य डॉ.जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के चरणों में कोटि-कोटि वंदन, अभिनंदन।

पूज्यश्री को कीनिया विश्वविद्यालय द्वारा अर्पित डॉक्टर ऑफ फिलासाफी की उपाधि से अलंकृत करने के शुभ अवसर पर मेरे सहित सम्पूर्ण जैन-अजैन, श्रावक-श्राविका, साधु-साध्वी मंडल प्रफुल्लित होकर, अपार हर्ष अभिव्यक्त करता है।

आप धीर-वीर-गंभीर, विनयवान, वाणी के जादूगर ही नहीं वरन् परिवार, समाज और राष्ट्र की ज्वलंत समस्याओं के समाधानकारक परमात्मा का साक्षात् दिव्य स्वरूप हैं। एक गुलाब के फूल जैसे कोमल और आध्यात्मिक सुगंध से भरपूर सद्गुरु, आचार्यों के आचार्य हैं। गुलाब का फूल तो कतिपय समय के साथ मुर्झा जाता है, किन्तु आप सदाबहार ताजगी भरे प्रज्ञा पुरुष हैं। ज्ञान-दर्शन-चारित्र रूपि, त्रय रत्नों के रत्नागार हैं। आपकी वाणी मिश्री से भी अधिक माधुर्य लिए हुए है।

यह अतिश्योक्ति नहीं बल्कि अनुभव किया गया सच है। आप धीर-गंभीर प्रज्ञा की सरिता को जन्म देने वाले प्रज्ञा भंडार, हिमालय से भी ऊँचे आध्यात्म के शिखर पुरुष हैं। मैं आपके सामर्थ को समझने में असमर्थ, अल्पज्ञ और नादान हूँ। आपका व्यक्तित्व -कृतित्व आकाश से भी विशाल है। जप-तप-ब्रह्मचर्य और संयम से तेजस्वी हुआ आपका मुखमंडल औजस्व से ओत-प्रोत है।

मुझे गर्व है कि निम्बाहेड़ा की धर्म धरा पर आप जैसे सुधि आचार्य देव से समकित ग्रहण कर मैंने अपना जीवन शुरू किया। मेरी समझ मुझे यही सिखाती है कि गुरु नहीं तो जीवन शुरू नहीं। आपश्री को जब भी सुधर्मा स्वामी के प्रवचन

पाट पर देखा मेरे नैत्र, कर्ण और मन-मस्तिष्क-हृदय आध्यात्मिक गहराई में गोते लगाने लगते हैं। चाहे मधुर प्रवचन का अवसर हो या श्री सुरेन्द्रकुमार जी लोढ़ा द्वारा संपादित शाश्वत धर्म पत्रिका में प्रकाशित सारगर्भित उपदेशों को पढ़ने का अवसर, इन्हें समझकर आत्मसात करने और जीवन जीने की कला सीखने को मन लालायित होने लगता है।

कतिपय पंक्तियों में आपके व्यक्तित्व को नमन करता हूँ-

जैनत्व का तेज तुम्हारा, बहा रहे करुणा की धारा।
'जयंतसेन सूरि' नाम सार्थक, 'शाश्वत धर्म' का परम सहारा।।
साधना का तेज है आपके चेहरे पर, वाणी की अभिलाषा।
चंद शब्दों में कैसे समायेगी, 'जयंत विजय' की परिभाषा।।
जीवन एक भव्य जागरण है, मूर्छा से लड़ने का।
जीवन एक दिव्य संगीत है, जयंत गुण गाने का।।
भगवान महावीर ने हमें, यही पाठ पढ़ाया है-
पंच महाव्रत धारी 'मधुकर' को 'विजय' गुरु बनाया है।।
युग दृष्टा धर्म चक्रवर्ती को नमन हमारा है।
यतीन्द्र गुरु ने शाश्वत आशीष दिया जिसे है।।
राजेन्द्र गुरु की शक्ति से जग अभिमंत्रित कर दो।
आध्यात्म-बल से त्रस्तजनों में, खुशियाँ भर दो।।
ऐसे महाव्रती आचार्य जयंत की जय-विजय हो।
उनके पावन स्मरण से हम सबके पुण्य उदय हों।।
नमोकार है मंत्र महामणि, तन-मन जिससे मंडित है।
'विजय' जो इसका मर्म जानता, वही सच्चा पंडित है।।
पेपराल की धरती बता रही, 'मिलकर रहना सीख।'
समय कभी रुकता नहीं, यह बतलाती है तारीख।।
जन-जन की पीड़ा हर कर, गुरु संदेश निभाना है।
राजेन्द्र-जयंत संदेशों का, बिगुल 'विजय' बजाना है।

स्मरण शक्ति का अद्भुत प्रयोग -शतावधान

-पक्षाल कोरडीया, डीसा (मुंबई)

ध्यान- आंतरिक शक्ति को उजागर करने का श्रेष्ठ माध्यम निरुपित किया गया है। ध्यान के प्रभाव से व्यक्ति अपनी सुषुप्त शक्तियों को सक्रिय कर अपने जीवन को सही दिशा प्रदान करने के साथ विश्व को भी मार्ग दिखाने का प्रयास कर सकता है। भारतीय संस्कृति में ध्यान का महत्व बताया गया है।

वैदिक ग्रंथों सहित अन्य धर्म प्रणेताओं ने भी अपनी रचनाओं में ध्यान के महत्व का वर्णन किया है लेकिन दार्शनिक एवं अहिंसा मार्गी मान्यताओं के अनुसार जैन धर्म में जो प्रक्रिया बताई गई है वह सभी में शिरमौर है।

जैन मतानुसार ध्यान अवस्था में तीर्थंकर परमात्मा से लेकर सामान्य श्रावक तक भी किसी भी पदार्थ का आलंबन लेकर, पदार्थ के द्रव्य-गुण, पर्याय का चिंतन कर सकते हैं। जैन मान्यतानुसार इसे ही ध्यान कहते हैं। ध्यानावस्था में कितना भी कष्ट क्यों न आए, ध्यानस्थ आत्माएं चलायमान नहीं होतीं, जैसे-महावीर स्वामीजी , यशोविजयजी,राजेन्द्रसूरिजी आदि। बड़े ध्यान के साथ जैन शास्त्रों में छोटे ध्यान का भी बड़ा महत्व बताया गया है। जैन परिभाषा में काउस्सग के नाम से इसे पहचाना जाता है। प्रत्येक जैन सुसंस्कृत व्यक्ति अपनी क्रियाओं में व्यस्त रहते हुए भी दिन में 5 से 10 बार या इससे भी ज्यादा बार काउस्सग का ध्यान करता है। इस एक ध्यान की प्रक्रिया से ही जिन शासन में अनेकविध ज्ञानी-ध्यानी-योगी महात्मा हुए हैं जिन्होंने अपनी ज्ञान साधना से पूरे विश्व को ज्ञानोपासक बनाने का प्रयास किया है। ऐसा कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं है। उदाहरण के लिए पूज्य हेमचन्द्राचार्यजी ने ज्ञान साधना से संस्कृत को सरल बनाया। पूज्यपाद राजेन्द्रसूरिजी म.सा. ने अभिधान राजेन्द्र शब्दकोष से विश्व पर उपकार किया है। इसे भी ध्यान का एक प्रभाव कह सकते हैं।

विगत दो सालों में जैन जगत में ध्यान साधना के नए आयाम देखने को मिले हैं। जैन संप्रदाय में 5 से ज्यादा शतावधानी विशेषता से ध्यान की

शक्ति से परिचित करा रहे हैं। इस श्रृंखला में त्रिस्तुतिक संघ और उनके बालमुनि भी पीछे नहीं हैं। अभी 1 वर्ष पूर्व त्रिस्तुतिक संघ के मुनि द्वारा अर्धशतावधान् के कार्यक्रम से संभावनाओं का सूत्रपात हुआ था। इसी क्रम में कुछ दिन पूर्व पेपराल तीर्थ में हजारों की जनमेदिनी के बीच त्रिस्तुतिक श्रीसंघ के सबसे छोटी उम्र के पू. गच्छाधिपति श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य मुनिराज श्री प्रत्यक्षरत्न विजयजी म.सा. ने शतावधान का प्रदर्शन करके ध्यान से सुसुप्त और अविश्वसनीय क्षमता हासिल करने का उदाहरण प्रस्तुत किया है।

उल्लेखनीय है कि बाल मुनिराज श्री प्रत्यक्षरत्न विजयजी म.सा. को यह प्रेरणा और क्षमता राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. एवं मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी म.सा. के आशीर्वाद से मिली। उनके मार्गदर्शक की भूमिका शतावधानी श्रीमती निलिशा अभिषेक सेठिया उज्जैन एवं सहवर्ती मुनिमंडल ने निभाई। कह सकते हैं कि शतावधान के रूप में नई संभावना बालमुनि की ज्ञान प्रतिभा को और परिष्कृत करने का कार्य करेगी।

पेपराल रा आँगणे....

लागो रे लागो रे मेलो पेपराल रा आँगणे
लागो रे लागो रे मेलो पेपराल रा आँगणे।

कोई आवे मारवाड़ से कोई मालव प्रांत से
राणापुर से श्रीसंघ आवे अमृत रसा रा पारणे
जयंतसेनश्री की शुभ निश्रा में आनंद हर्ष अपार रे।। लागो रे..।।

अमृतरसाजी आज अठाई उजमे है शुभ भाव से
चौसठ दिन की तपस्या कर कर्म खपाया चाव से
नित्यानंद कहै गुरु आपणो रिद्धी–सिद्धी दातार रे।।लागो रे..।।

स्वरूपचंद के प्राण से प्यारे पार्वता माँ के दुलारे
यतीन्द्रसूरि के सबसे प्यारे संघ की आँखों के तारे
स्वार्थरहित हो सेवा करलो मिला मनुष्य अवतार रे।।लागो रे..।।

जैसाभी हूँ तेरा ही हूँ दुजे समझ ना पाए
हनुमान मैं बन नहीं सकता जो छाती चिर बताए
सुरेश समीर चरणों में तेरे, कर दो बेड़ा पार रे।।लागो रे..।।

–सुरेश समीर, राणापुर (म.प्र.)

माँ, हमारी प्रथम पाठशाला है

–जूली 'जयजा' गोलेचा

'मानव' जीवन की शुरुआत 'माँ' के पेट में 'नव' महीने रहने से शुरू होती है। 'माँ' शब्द में निहित 'म' और 'आ' क्रमशः महावीर से आदिनाथ का भी प्रतिनिधित्व करता है। आशय यह कि जो माँ के चरणों में प्रणाम करता है, वह सभी 24 तीर्थंकरों को भी प्रणाम कर लेता है।

काका, मामा, मासा, मासी, भाई–बहन एकाधिक हो सकते हैं, किन्तु माँ हमेशा एक ही होगी। माँ हमारे जीवन की प्रथम गुरु, प्रथम पाठशाला जो हमें सुसंस्कारित कर महान बनने की प्रेरणा देती है, जैसा–कि आर्यरक्षित की माताश्री ने किया था।

कथानुसार जब आर्यरक्षित अध्ययन कर पहली बार नगर में आए तब नगर की समस्त प्रजा उनका स्वागत करने के लिए उमड़ पड़ी थी। लेकिन माँ की आँखों में प्रसन्नता नहीं थी। यह दृश्य देखकर पुत्र माँ के चरणों में प्रणाम करते हुए कहता है–माँ! क्या बात है? मेरी जो भूल हो मुझे बता दे। दुनिया को प्रसन्न करने में मुझे आनंद नहीं, यदि तू प्रसन्न है, तो मेरी दुनिया स्वतः प्रसन्न हो जाएगी।' बोलते–बोलते आर्यरक्षित का गला भर आया। आगे बोल न सका।

माँ रुद्रसोमा ने आर्यरक्षित के जीवन में मातृभक्ति का एक आदर्श देखा। वह अत्यन्त मधुर स्वर में बोली– 'बेटा! आज मैं खुश इसीलिए नहीं हूँ क्योंकि मैं तेरी माँ हूँ।'

'माँ तू क्या कहना चाहती है, मुझे कुछ समझ नहीं आया। तू जरा स्पष्ट बता।' आर्यरक्षित ने कहा।

'बेटा आर्यरक्षित! मेरे दिल में तेरे प्रति अपार प्रेम है। तेरे आत्महित की मुझे सतत चिंता है। आज तू जो विद्या पढ़कर आया है, वह तो इस लोक की विद्या है। इस विद्या के बल से तुझे धन मिलेगा, परन्तु आत्मा की पूर्णता इससे होने वाली नहीं है।'

'माँ मैं तो तुम्हें प्रसन्न करना चाहता हूँ। तुम ही बताओ मुझे कौन सी

विद्या का अध्ययन करना चाहिए और वह विद्या मुझे कौन पढ़ाएगा?'

'बेटा दृष्टिवाद पढ़कर आएगा, तो मुझे बड़ा संतोष मिलेगा। यह विद्या तुम्हें इक्षुवाटिका में पधारे तोसली पुत्र आचार्य महाराज पढ़ाएंगे। तेरे मामा महाराज ही हैं, अच्छा अध्ययन कराएंगे।' माँ का आदेश सुनकर दूसरे ही दिन आर्यरक्षित दृष्टिवाद के अभ्यास के लिए आचार्य महाराज के पास जा पहुँचे और नम्र भावना से दृष्टिवाद का अध्ययन कर स्व-पर का कल्याण किया।

वह आर्यरक्षित की सच्ची माता थी। वह जानती थी, कि दृष्टिवाद पढ़ने के लिए इसे दीक्षा लेनी पड़ेगी, दीक्षा लिए बिना आचार्यदेव दृष्टिवाद पढ़ाएंगें नहीं। अतः पहले से ही कहकर भेजा कि वहाँ जो भी करना पड़े स्वयं निर्णय लेना, मुझसे पूछने मत आना। वह पुत्र भी कितना महान था कि माता की प्रसन्नता के लिए दीक्षा ले ली, साधु बन गया और अध्ययन में लग गया।

आज यदि आर्यरक्षित की माता के समान हम अपने पुत्रों को साधु बनने नहीं भेज सकते, किन्तु पाठशाला तो भेज ही सकती हैं, है ना? क्या दशा है हमारी पाठशालाओं की? आपके कितने बच्चे पाठशाला में आते हैं?

कॉन्वेंट स्कूल या अन्य साधारण स्कूलों में आपके बच्चे नहीं जाते तो मारकर भी भेजते हैं। जीवन में जैसे उस शिक्षा को आपने आवश्यक समझा है, वैसे ही क्या धार्मिक अध्ययन आवश्यक नहीं है?

कहा है –

माता शत्रु पिता बैरी, येन बालो न पाठित।

सभा मध्ये न शोभन्ते, हंस मध्ये बको यथा।।

अर्थात् –वह माता शत्रु और पिता बैरी है, जो अपने बच्चों को धर्ममय संस्कार, अच्छा शिक्षण नहीं देते हैं, क्योंकि जैसे हंसों के बीच बगुले की हंसी होती है, वही हालत पंडितों की सभा में अनपढ़ या कुसंस्कारी की होती है।

न्याय से एक पक्ष जीतता है, तो दूसरा पक्ष हारता है पर समाधान से दोनों पक्षों का कल्याण होता है। माँ ही ऐसी है जो न्याय नहीं समाधान करती है। परिवार में भोजन के समय दादा-दादी ने सभी को पूरा लड्डू रखा लेकिन छोटे बच्चे को आधा लड्डू रखा। बच्चा पूरे लड्डू की जिद करता है। माँ आती है, आधे लड्डू में घी मिलाकर पूरा लड्डू बनाकर कहती है– छोटे बच्चे को छोटा लड्डू और बड़े को बड़ा लड्डू। बच्चा संतुष्ट हो जाता है। माँ का समाधान ऐसा होता है।

जैन प्रश्नोत्तर

प्रश्न– श्री सिद्ध भगवान के आठ गुणों को प्राप्त करने के लिए कौन–कौन से कर्मों का नाश करना पड़ता है?

उ. 1. ज्ञानावरणीय कर्म का नाश करने से अनंत ज्ञान गुण की प्राप्ति होती है।

2. दर्शनावरणीय कर्म का नाश करने से अनंत दर्शन गुण की प्राप्ति होती है।

3. वेदनीय कर्म का नाश करने से सभी प्रकार के दु:खों से रहित अव्याबाध सुख प्राप्त होता है।

4. मोहनीय कर्म का नाश करने से क्षायिक सम्यकत्व तथा अनंत चारित्र गुण की प्राप्ति होती है।

5. आयुष्य कर्म का नाश करने से अक्षय स्थिति प्राप्त होती है।

6. नाम कर्म का नाश करने से अरुपीपणा प्राप्त होता है।

7. गोत्र कर्म का नाश करने से अगुरुलघु (अर्थात् अनंतकाल तक एक सरखी अवगाहना) पणा प्राप्त होता है।

8. अंतराय कर्म का नाश करने से अनंत दान, लोभ, भोग, उपभोग और वीर्य प्राप्त होता है।

प्रश्न–दुर्गति में ले जाने वाले 8 मद कौन से हैं?

उ. 1. जातिमद, 2. कुलमद, 3. बलमद, 4. रूपमद, 5. तपमद, 6. ऋद्धिमद, 7. विद्यामद, 8. लाभमद।

प्रश्न–श्री सिद्धगिरिराज का प्रमाण छः आरे में कितना होता है?

उ. 1. प्रथम आरे में 80 योजन होता है। 2. दूसरे आरे में 70 योजन होता है।

प्रश्न–वर्ष प्रमाण के हैं?

उ. अवसर्पिणी काल के छः आरे निम्न हैं– (1). सुषम–सुषमा– 4 कोड़ाकोड़ी सागरोपम का। (2). सुषमा– 3 कोड़ाकोड़ी सागरोपम का, (3). सुषम–दुषमा–2 कोड़ाकोड़ी सागरोपम का, (4). दुषम–सुषमा–1 कोड़ाकोड़ी सागरोपम में 42 हजार वर्ष कम, (5). दुषमा– 21 हजार वर्ष का, (6). दुषम–दुषमा–21 हजार वर्ष का।

इस प्रकार 6 आरे कुल 10

कोड़ाकोड़ी सागरोपम के होते हैं। 10 कोड़ाकोड़ी सागरोपम की 1 उत्सर्पिणी और 1 अवसर्पिणी 10 कोड़ाकोड़ी सागरोपम की दोनों मिलकर 20 कोड़ाकोड़ी सागरोपम का एक कालचक्र होता है।

प्रश्न – अलग – अलग प्रकार के पच्चक्खाण के फल बताईये ?

उ. 1. नवकारशी – 100 वर्ष तक नारकी का जीव दुःख उठाता है और जो कर्म निर्जरा करता है उतनी कर्म निर्जरा इस नवकारसी के पच्चक्खाण से होती है।

2. पोरिसी – 1000 वर्ष तक नारकी का जीव दुःख उठाता है और जो कर्म निर्जरा करता है उतनी कर्म निर्जरा पोरिसी के पच्चक्खाण से होती है।

3. साढ़पोरिसी – 10 हजार वर्ष तक नारकी का जीव जितना कष्ट उठाता है और जो कर्म निर्जरा करता है, उतनी कर्म निर्जरा इससे होती है।

4. पुरिमुड्ढ – 1 लाख वर्ष तक नारकी के जीवों को जितना कष्ट होता है और जो कर्म निर्जरा होती है, उतनी कर्म निर्जरा इससे होती है।

5. एकासणा – 10 लाख वर्ष तक नारकी के जीवों को जितना कष्ट होता है और जो कर्म निर्जरा होती है, उतनी कर्म निर्जरा इससे होती है।

6. निवी – 1 करोड़ वर्ष तक नारकी के जीवों को जितना कष्ट होता है और जो कर्म निर्जरा होती है, उतनी कर्म निर्जरा इससे होती है।

7. एकदत्ति – 100 करोड़ वर्ष तक नारकी के जीवों को जितना कष्ट होता है और जो कर्म निर्जरा होती है, उतनी कर्म निर्जरा इससे होती है।

8. आयंबिल – 1000 करोड़ वर्ष तक नारकी के जीवों को जितना कष्ट होता है और जो कर्म निर्जरा होती है, उतनी कर्म निर्जरा इससे होती है।

9. उपवास – 10 हजार करोड़ वर्ष तक नारकी के जीवों को जितना कष्ट होता है और जो कर्म निर्जरा होती है, उतनी कर्म निर्जरा एक उपवास से होती है।

इस प्रकार 1–1 उपवास का तप बढ़ाने से 10–10 गुना फल प्राप्त होता है और कर्म निर्जरा होती है।

विद्वता की शोभा विनम्रता से

ज्यादातर लोग किसी दूसरे की थोड़ी सी भी मदद कर उसे जताते रहते हैं। इससे उनके काम की महत्ता ही घटती है। अपने बचपन के दिनों में मुझे मुल्ला नसीरुद्दीनशाह, तेनालीराम और बीरबल की कहानियाँ सुनना बहुत अच्छा लगता था। यहाँ तक कि आज भी मुझे इन कहानियों पर बने वीडियोज देखना अच्छा लगता है। इन कहानियों में एक कहानी को मैं कभी नहीं भूला हूँ। यह कहानी मुल्ला को उनके मित्र द्वारा उन्हें पानी से भरे पोखर में डूबने से बचाने को लेकर है। कहानी कुछ, यूँ है कि –

एक दिन मुल्ला पानी में गिर गए। उन्हें तैरना नहीं आता था। बचने के लिए हाथ–पैर मारने लगे, लेकिन प्रयासों के बाद भी खुद को बचा नहीं पा रहे थे। उन्हें डूबता देख उसका एक मित्र तुरंत पानी में कूदा और उन्हें बचाकर पोखर से बाहर ले आया। इस घटना के बाद मुल्ला की जब भी अपने इस मित्र से मुलाकात होती वह उन पर एहसान जताना न भूलता कि अगर मैं न होता तो उस दिन तुम अपनी जान गंवा चुके होते। शुरू–शुरू में तो मुल्ला ने उसकी बात को ज्यादा महत्व नहीं दिया और शुक्रिया भी अदा किया किन्तु जब एहसान जताने का सिलसिला बढ़ने लगा तो उन्होंने अपने दोस्त को इसका जवाब देने की ठान ली। एक दिन मुल्ला अपने इस मित्र को एक पोखर के किनारे ले गए और उसमें कूद पड़े। इस पोखर में पानी उनके सीने तक ही था। वे उसमें आराम से खड़े होकर अपने मित्र से बोले–भले तुमने आज मुझे डूबने से नहीं बचाया, फिर भी मैं डूबा नहीं हूँ। मित्र को अपनी गलती का अहसास हुआ और उसने मुल्ला से अपनी कथनी के लिए माफी माँगी।

दरअसल हममें से ज्यादातर लोग भी मुल्ला के उस मित्र की तरह ही होते हैं। जहाँ किसी दूसरे की थोड़ी सी भी मदद कि बार–बार उसे इसका अहसास दिलाते रहते हैं। इससे आपके अहं को तो संतुष्टि मिल सकती है लेकिन आपके काम की महत्ता घट जाती है। विद्वत्ता विनम्रता से ही शोभा पाती है। कभी–कभी व्यक्ति अपने अहंकार और विद्वत्ता के मद में चूर होकर इस बात को भूल जाता है, कि ज्ञान अनंत है और

उसकी पूर्णता की कोई सीमा नहीं है।

एक दूसरी, कथा के अनुसार उज्जयिनी के महाकवि माघ को अपने पांडित्य का बड़ा अभिमान था। एक बार वे अपने मित्र के साथ कहीं जा रहे थे। मार्ग में एक झोपड़ी थी। एक वृद्धा बाहर बैठी चरखा कात रही थी। माघ ने सोचा उस वृद्धा से आगे के मार्ग के बारे में जानकारी ले ली जाए, ताकि भटकने का खतरा न रहे। किन्तु वृद्धा ठहरी सामान्य और माघ महापंडित, न चाहते हुए भी अभिमान का पुट प्रश्न में झलक गया- अपना काम छोड़कर हमें बता सकती हो कि यह रास्ता कहाँ जाता है? वृद्धा ने माघ को पहचान लिया, किन्तु इस बात को जाहिर नहीं किया। अपने काम को रोके बिना हँसकर बोली- वत्स, रास्ता तो कहीं नहीं आता-जाता। उस पर पथिक ही आया-जाया करते हैं। आप लोग कौन हैं? माघ ने संक्षिप्त उत्तर दिया- हम यात्री हैं। वृद्धा ने पुनः मुस्कराते हुए कहा- यात्री तो दो ही हैं सूर्य और चन्द्रमा। सच बताइए, आप लोग कौन हैं? माघ थोड़ा चिढ़कर बोले- हम क्षणभंगुर मनुष्य हैं। वृद्धा गंभीर होकर बोली- क्षणभंगुर तो दो ही हैं, यौवन और धन। ऐसा पुराण कहते हैं। बताओ आप लोग कौन हैं?

माघ ने सोचा कि सही उत्तर दे ही देते हैं, किन्तु कुछ सोचकर वे बोले हम राजा हैं। माघ को लगा वृद्धा अब डरकर चुप हो जाएगी। तत्क्षण वृद्धा ने कहा- आप राजा कैसे हो सकते हैं। शास्त्रों में तो यम और इंद्र दो को ही राजा माना है। माघ अभिमानपूर्वक बोले- हम तो क्षमा करने वाली आत्मा हैं। वृद्धा ने उत्तर दिया- क्षमाशील तो दो ही हैं- पृथ्वी और नारी। क्षमाशीलता की तुलना आप इनसे कैसे कर सकते हैं? निरुत्तर माघ ने कहा- माँ, हम हार गए। अब रास्ता बताओ। वृद्धा ने अपना संवाद क्रम आगे बढ़ाया बोली, महानुभाव, संसार में तो केवल दो ही व्यक्ति हारते हैं। पहला जो किसी से कर्ज लेता है या जो अपना चरित्रबल खो देता है। आप इनमें से कौन हैं? माघ ने इस बार कुछ नहीं कहा। मौन होकर अपराधी की भांति खड़े रहे।

वृद्धा बोली- मैं जानती हूँ कि आप महापंडित माघ हैं। आप महाविद्वान हैं, किन्तु विद्वत्ता की शोभा अहंकार में नहीं, विनम्रता में है। यह कहते हुए वृद्धा ने रास्ता बता दिया और लज्जित माघ उसके समक्ष सिर नवाकर आगे चल दिए।

- जैन जागृति

ज्योतिष कुंडली और शारीरिक रोग

(दिनेश जैन कबदी, अहमदाबाद)

ज्योतिष शास्त्र मूलरूप से ग्रहों एवं नक्षत्र आदि का अध्ययन है। सिद्धांत अनुसार आकाश मंडल के जितने भी ग्रह हैं, उन सभी की रश्मियों, गुरुत्वाकर्षण बलों का सम्पूर्ण प्रकृति पर और तद्नुरूप सभी पंच महाभूतों और जीव जंतुओं पर भी पड़ता है। ग्रह की स्थिति और प्रकृति के अनुसार शारीरिक और मानसिक अवस्थाओं में परिवर्तन होते हैं। ज्योतिष सिद्धान्त अनुसार कुल नौ ग्रह माने गए हैं जिनमें सात ग्रह सूर्य, चन्द्र,मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि तथा दो छायाग्रह राहु और केतु सम्मिलित हैं। नवीन खोजों के अनुसार युरेनस और नेपच्यून को भी सम्मिलित कर कुल 11 ग्रह मान लिये गये है।

वर्तमान समय में मानव शरीर किसी न किसी बीमारी से सदैव ग्रस्त बना रहता है। कुछ बीमारियाँ तो निश्चित समय अंतराल के बाद ठीक हो जाती हैं, किन्तु कुछ बीमारियाँ लंबे समय तक सताती रहती हैं। ज्योतिष मान्यता के अनुसार यदि किसी कुंडली में संबंधित ग्रह की स्थिति ठीक नहीं हो अथवा उस पर किसी दूसरे ग्रह की अशुभ दृष्टि पड़ रही हो, तो इस तरह की शारीरिक व्याधियों का सामना मनुष्यों या अन्य जीव-जंतुओं को करना पड़ता है।

ज्योतिष कुंडली में बारह भाग बारह राशियों के अनुरूप होते हैं, यह बात हम सभी जानते हैं। प्रत्येक व्यक्ति के जन्म समय पर जो लग्न चलता है उसे प्रथम भाव कहते हैं। पूरे बारह भाव होते हैं। इन्हीं बारह भावों के आधार पर जीवन के बारे में कुछ जानकारियाँ प्राप्त कर बचाव के उपाय कर सकते हैं।

जन्म कुंडली का छठा भाव रोग एवं बीमारी आदि से संबंधित होता है। इसी भाव से शत्रुता, धोखा,

विश्वासघात आदि का अनुमान किया जाता है। अब यह जानना जरूरी है कि किन ग्रहों की विपरीत स्थिति से कौन सी बीमारी से जीवन प्रभावित होता है। जैसे–

सूर्य के प्रतिकूल होने से बुखार, कमजोरी, दिल का दौरा, पेट संबंधी रोग, आँखों की बीमारियाँ, चर्म रोग, जलना, दौरे पड़ना आदि संभावित है।

चन्द्र की प्रतिकूलता में अनिद्रा, कफ, पाचन समस्या, गठिया, मानसिक समस्या आदि का सामना करना पड़ता है।

मंगल की स्थिति में गले की बीमारी, कंठ रोग, रक्त विकार, सिरदर्द, ब्लड और ब्लड संचार संबंधी समस्या आती हैं।

बुध की स्थिति में व्यर्थ के दिमागी फितूर, नाक–कान की बीमारियाँ, वात संबंधी रोग, पित्त रोग, ऊंचाई से गिरना आदि बातें होती हैं।

गुरु की स्थिति में वायुयान दुर्घटना, पेट में गैस रहना, कान में मवाद आदि की घटनाएं संभावित है।

शुक्र की स्थिति में कोढ़, वीर्य विकार, गुर्दा, मूत्र पीड़ा, गुदा, गर्भाशय के रोग, पेड़ू का दर्द आदि तकलीफें संभावित हैं।

शनि की स्थिति में पेट एवं पैरों की बीमारियाँ, गैस की तकलीफ, पत्थर आदि से चोट लगना हो सकता है।

राहू की स्थिति में दिल की कमजोरी, जहर के दुष्प्रभाव से संबंधित घटनाएं, आत्महत्या के विचार आदि घटित हो सकते हैं।

केतु की स्थिति में घाव होना, घाव का सड़ जाना, जलना के साथ राहू से जुड़ी सभी बुरी बीमारियाँ सामने आ सकती हैं।

इस संबंध में आवश्यक जानकारी प्राप्त कर दवाई के साथ–साथ यदि संबंधित ग्रहों की शांति के उपाय भी करें तो ग्रह दोष कमजोर होंगे, दुष्प्रभाव की तीव्रता घटेगी और स्वास्थ्य लाभ या बीमारियों से उबरने की गति में तेजी आ सकेगी। इन उपायों से भविष्य में भी पुनः इन समस्याओं के आने की संभावनाएँ कम हो जाती हैं। बीमारी की अवस्था में ग्रह शांति के क्या उपाय किए जाएं? इसकी जानकारी प्राप्त करने के लिए मुझसे संपर्क कर सकते हैं?

मोबा. 90337 45679
e-mail : dineshkjain1@gmail.com

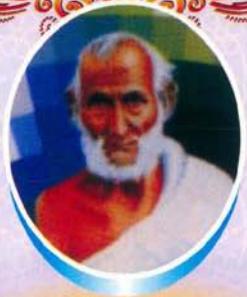

ગુર્જર જૈન જ્યોત

સંપર્ક-સંપાદક : **સુરેશ એચ. સંઘવી**
૧૦૬, શિવશક્તિ, એ.બી.સી. ટાવર, દેવ ચકલા,
જૈન દેરાસર સામે, નડીઆદ. જી. ખેડા.
મો. ૯૭૨૪૫ ૭૧૦૭૯

પૂજ્ય શ્રી સપરિવારની નિશ્રામાં યોજાનાર આગામી કાર્યક્રમો

યુગ પ્રભાવક, સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., સપરિવારની પાવન નિશ્રામાં ચાતુર્માસ પૂર્ણ થયે યોજાનાર શાસન પ્રભાવક કાર્યક્રમોની વિગત

(૧) થરાદથી શંખેશ્વર છ'રી પાલક સંઘ :
લાભાર્થી : ભણસાળી મણીલાલ જીતમલભાઈ પરિવાર
તા. ૨૭-૧૧-૨૦૧૫ ના રોજ થરાદથી પ્રસ્થાન

(૨) તા. ૯-૧૨-૨૦૧૫ પૂજ્યશ્રીનો જન્મોત્સવ રસ્તામાં

(૩) વલ્લભપુરથી શ્રી શત્રુંજય તીર્થ છ'રી પાલક સંઘ
લાભાર્થી : શ્રીમતી મથુરીબેન નરપતલાલ છોટાલાલ પરિવાર
તા. ૧૪-૧૨-૨૦૧૫ પ્રસ્થાન

(૪) શ્રી અયોધ્યાપુરમથી શ્રી શત્રુંજય તીર્થ છેરી પાલક સંઘ
લાભાર્થી : ભીનમાલ નિવાસી સાયતાદેવી સોહનરાજજી વાણીગોતા પરિવાર
તા. ૨૩-૧૨-૨૦૧૫ ના રોજ પ્રસ્થાન

(૫) નવ્વાણુ યાત્રા
લાભાર્થી : દોશી લલ્લુભાઈ જેચંદભાઈ પરિવાર
પ્રારંભ : તા. ૧૭-૧૨-૨૦૧૫

ભારત ભરની ધરા પર એકસઠ વર્ષ સુધી વિહરી જિનશાસનનો ડંકો વગાડનાર

પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત આચાર્યદેવશ્રીના સ્વાસ્થ્યમાં પ્રતિકુળતા જણાતાં સંઘો ચિંતિત... હૃદયની શસ્ત્રક્રિયા કરાતાં સ્વાસ્થ્યમાં સુધારો સમુદાયમાં ઉત્સાહનું મોજું

શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયના પરમોપકારી, સંઘ એકતાના શિલ્પી, ભારત ભરની ધરા પર એકસઠ વર્ષ સુધી વિહરી જિનશાસનનો ડંકો વગાડનાર યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્ વિજય જયંત સેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. એ ગુજરાત, રાજસ્થાન, મધ્યપ્રદેશ, બિહાર, યુ.પી., કર્ણાટક, તામિલનાડુ, આંધ્રપ્રદેશ વિગેરે ભારતભરની ધરાને ધન્ય બનાવી જિન શાસનનો જયજયકાર ગજવી દેશભરમાં વિવિધ સ્થળોએ સતત એકસઠ વર્ષ ચાતુર્માસ સ્થિરતા કરી પરમપૂજ્ય દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્ વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા. ના ગચ્છને ધર્મના રંગેરંગી હાલ તેઓશ્રીની જન્મભૂમિ શ્રી પેપરાલ તીર્થની ધન્યધરા પર ચાતુર્માસ સંપન્ન કરી રહ્યા છે.

સપરિવારના ચાતુર્માસ પ્રવેશથી જ શ્રી પેપરાલ તીર્થની ધન્યધરા પર ધર્મની હેલી વરસી રહી છે અને પૂજ્યશ્રીની પ્રેરણાથી ઘેર ઘેર તપશ્ચર્યાના તોરણો બંધાયા છે. છેલ્લા એક માસથી પૂજ્યશ્રીના સ્વાસ્થ્યમાં પ્રતિકુળતા જણાતાં અ.ભા. સૌધર્મ બૃહતતપોગચ્છીય શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘોમાં ચિંતાની લાગણી પ્રસરી જવા પામી હતી. તાજેતરમાં શ્રી પેપરાલ તીર્થ ખાતેના ચાતુર્માસ દરમ્યાન સ્વાસ્થ્યમાં પરિવર્તન થતાં તાત્કાલિક નિદાન કરાવવાની ફરજ પડી હતી. પૂજ્યશ્રીને હૃદય પર દુઃખાવો થતાં સંઘના આગેવાનો અને યુવાનો વધુ ચિંતિત બન્યા હતા. શ્રી જયંતસેન શાસન પ્રભાવક ટ્રસ્ટના ટ્રસ્ટી મંડળ સહિત સમસ્ત ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘોના અગ્રણીઓએ દુઃખતા હૈયે પૂજ્યશ્રીના હૃદય નિદાન માટે અમદાવાદની સાલ હોસ્પીટલમાં દાખલ થવા વિનંતી કરી હતી કારણ કે માનવ શરીરમાં હૃદય જ મુખ્ય સંચાલક છે અને તેમાં થોડી ઘણી પણ ગરબડ ઉભી થાય તો જીવનના અસ્તિત્વ સામે મુકાઈ જાય અને તેમાંય સમસ્ત ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયના આ ઝળહળતા દીવાની જ્યોતને જરા અમથી આંચ આવે તો પણ સમુદાયની શું અવ્યવસ્થા થાય તે આપણે સહુકલ્પી શકીએ છીએ જેથી પૂજ્યશ્રીને નિદાન કરાવવા સંઘોના અગ્રેસરોએ ભાર પૂર્વક વિનંતી કરી હતી. અંતે પૂજ્યશ્રીએ એનો સ્વીકાર કર્યો હતો. અને પૂજ્યશ્રીને અમદાવાદની સાલ હોસ્પીટલ ખાતે લવાયા હતા. અને તાબડતોબ નિષ્ણાંત તબીબો દ્વારા નિદાન કરાયું હતું. અને શસ્ત્રક્રિયા કરવાની ફરજ પડી હતી અને હૃદયમાં સ્ટેન્ડ મુકવામાં આવ્યું હતું. અને સારવાર હેઠળ રખાયા હતા. પૂજ્યશ્રીએ સ્ફૂર્તિ સાથે પેપરાલ તીર્થ ખાતે પધરામણી કરી હતી ત્યારે સમસ્ત સંઘોમાં ઉત્સાહનું મોજું ફરી વળ્યું હતું.

શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયના હૃદય સમ્રાટ પૂજ્યશ્રીનું સ્વાસ્થ્ય ઝડપેભર સ્વચ્છ થાય અને શાસન-સમાજ અને આત્મકલ્યાણ માટે પુનઃ તાજગીભર જોતરાઈ જાય તે માટે સમાજના ઘેર ઘેર જપ-તપની આરાધનાઓ થઈ હતી.

શ્રી પેપરાલ તીર્થે ચાતુર્માસ બિરાજમાન...
પૂજ્યશ્રીના દર્શન-વંદનાર્થે ઉમટી રહેલું ભાવિકોનું વાવાઝોડું

અ.ભા. શ્રી સૌધર્મ બૃહતતપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘના બેનર હેઠળ શ્રી જયંતસેન શાસન પ્રભાવક ટ્રસ્ટ પેપરાલ દ્વારા આયોજિત શ્રી પેપરાલ તીર્થની ધન્યધરા પર વિરલ વિરભૂમિ થરાદનગરની ધન્યધરાના પનોતારત્ન યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., તીર્થ પ્રેરક વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી નિત્યાનંદ વિજયજી મ.સા. આદિ સાધુ-ભગવંતો અને વિશાળ સંખ્યામાં સાધ્વીજી ભગવંતો ચાતુર્માસ હેતુ એ બિરાજમાન છે.

પૂજ્યશ્રી સપરિવારની ચાતુર્માસ પધરામણી થી જ પેપરાલ તીર્થે ધર્મ શ્રધ્ધાના ડંકા વાગી રહ્યા છે. જેના પડઘા ભારત ભરના જૈન સંઘોમાં સંભળાઈ રહ્યા છે. શ્રી પેપરાલ તીર્થ ખાતેના આ ચાતુર્માસ દરમ્યાન નવકાર મંત્રની આરાધના, પર્વાધિરાજ પર્યુષણ મહાપર્વની ઉજવણી, ઉપધાનતપ સહિત અનેકાનેક ઐતિહાસિક ધાર્મિક કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા છે. માસક્ષમણ ૨૧/૧૬/૧૦/૯ અઠ્ઠાઈ, સિધ્ધિતપ, સળંગ આયંબિલ ઓળી, ચૌષઠ પોરી પોષધ વિગેરે તપશ્ચર્યાઓએ સમસ્ત જૈન સમાજમાં એક ઐતિહાસિક વિક્રમ સર્જન રેકોર્ડ સ્થાપિત કર્યા છે. પૂજ્યશ્રી સપરિવારનું શ્રી પેપરાલ તીર્થનું આ ચાતુર્માસ સર્વણ અક્ષરે લખવા યોગ્ય અવિસ્મરણીય બન્યું છે.

સમગ્ર ભારતભરમાં વસતા લાખો શ્રધ્ધાવંત ભાવિકો પૂજ્યશ્રી પ્રત્યે અખૂટ શ્રધ્ધા ધરાવે છે. પૂજ્યશ્રીના ચાતુર્માસ પ્રવેશ થી જ ભક્તોનું શ્રી પેપરાલ તીર્થે આવા ગમન ચાલુ જ છે. પૂજ્યશ્રીનું સ્વાસ્થ્ય કમજોર બનતાં ભાવિકો પૂજ્યશ્રીના દર્શન-વંદન માટે તલસી રહ્યા છે. સમુહ સંઘોનું અને સેંકડોની સંખ્યામાં શ્રધ્ધાવંત ભક્તોનું વાવાઝોડું પૂજ્યશ્રીના દર્શન-વંદનાર્થે ઉમટી રહ્યું છે. ગુજરાત, રાજસ્થાન, મધ્યપ્રદેશ, કર્ણાટક, તામિલનાડુ, આંધ પ્રદેશ વિગેરે સ્થળોના શ્રી સંઘો દ્વારા સામૂહિક રીતે દર્શન-વંદન કરવા આયોજન થઈ રહ્યા છે.

અનુમોદના

યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમપૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ની આજ્ઞાનુવર્તીની પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી અમૃતયશાશ્રીજી મ.સા. એ અઠ્ઠાઈના પારણે અઠ્ઠાઈ કરી કુલ ૭૨ દિવસમાં ૬૪ ઉપવાસ કરી શ્રી પેપરાલ તીર્થ ખાતે વાજતે ગાજતે પારણું કર્યું હતું. પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રીની આ કઠોર તપશ્ચર્યાની શાશ્વતધર્મ ગુર્જર જૈન જ્યોત પરિવાર સુખશાતા પુછી ભુરી ભુરી અનુમોદના કરે છે.

માતૃહૃદયા પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી કોમલલતાશ્રીજી મ.સા. નું દેવલોકગમન

માનવ કિડીયારામાંથી ઉભરાતી આ વિશાળ દુનિયા પર પ્રતિક્ષણ માનવ જન્મ ધારણ કરે છે અને અસંખ્ય લોકો મૃત્યુને ભેટે છે. જેની કોઈ ખાસ નોંધ પણ લેવાતી નથી પરંતુ જ્યારે કોઈ મહામાનવ અને તેમાંય આત્માના કલ્યાણ માટે ઘરબારની માયાને ત્યાગી સાધ્વીજીની પદવી ધારણ કરેલ કોઈ સાધ્વીજી ભગવંત આ દુનિયાને આખરી અલવિદા કરી દે છે ત્યારે હજ્જારો આંખો આંસુઓ વહાવવા માંડે છે. સારી કરણીવાળા માનવીની વિદાય ઘણી વસમી હોય છે.

કંઈક આવો જ શોક મુંબઈના શ્રધ્ધાવંત ભક્તો સહિત સમસ્ત શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયના ભક્તોને વેઠવાનો મનહુસ દિવસ તા. ૧૬-૧૦-૨૦૧૫ ના રોજ આવ્યો હતો.

યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ના આજ્ઞાનુવર્તીની માતૃહૃદયા પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી કોમલલતાશ્રીજી મ.સા. એ તા. ૧૬-૧૦-૨૦૧૫ ના રોજ બપોરે ૩-૧૫ કલાકે શ્રી નવકાર મહામંત્રના જાપ સાથે સમાધિ પૂર્વકની અવસ્થામાં આંખો બંધ કરી દઈ આ દુનિયાને આખરી અલવિદા કરી દેતાં સમસ્ત ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયના ભક્તોના દિલને કારમો આઘાત પહોંચ્યો હતો. સ્વ. પૂજ્ય સાધ્વીજી તેમજ તેમની શિષ્યાઓ ૧૦મી ખેતવાડી મુંબઈ ખાતે સંવત ૨૦૭૧ ના વર્ષનું ચાતુર્માસ ગાળી રહ્યાં હતાં. પૂજ્ય સાધ્વીજી મ.સા. નું સ્વાસ્થ્ય કથળાતાં તે અંગેની તમામ સારવાર અપાઈ રહી હતી તેમ છતાં તેમની જીવનદોરી તૂટી જતાં તા. ૧૬-૧૦-૨૦૧૫ ના રોજ બપોરે માતૃહૃદય પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી કોમલલતા શ્રીજી મ.સા.એ. ૧૦મી ખેતવાડી મુંબઈ ખાતે અંતિમ શ્વાસ લીધો હતો. અને સમાધિપૂર્વક દેવલોકગમન કરી ગયા હતાં. પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રીના પાર્થિવ દેહને અંતિમ દર્શન માટે ૧૦મી ખેતવાડી મુંબઈના ઉપાશ્રયે રખાયો હતો. જ્યાં સ્વ. સાધ્વીજી ભગવંતના અંતિમ દર્શન માટે ભક્તોની ભીડ જામી હતી જે સહુ ભક્તોએ લાઈનમાં ઉભા રહી ક્રમવાર આવી દર્શન - વંદન કરી ધન્યતા અનુભવી હતી.

તા. ૧૭-૧૦-૨૦૧૫ ના રોજ બપોરે ૧૨-૩૯ કલાકે સ્વ. પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતની અંતિમ યાત્રા (પાલકી) નીકળી હતી જે અંતિમયાત્રામાં જનમેદની ઉભરાઈ ગઈ હતી. સ્વ. પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતની અંતિમ યાત્રા (પાલકી) ૧૦મી ખેતવાડીના ગુરૂમંદિરે થઈ મુખ્યમાર્ગો પર ફરી શ્રીપાલનગર બાણગંગા મુક્તિધામ ખાતે પહોંચી હતી ત્યાં અગ્નિ સંસ્કારનો ચઢાવો બોલનાર પરિવારે સન્માનપૂર્વક અગ્નિસંસ્કાર કર્યા હતા. પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી કોમલલતાશ્રીજી મ.સા. કાળધર્મ પામ્યા છે તેવા સમાચાર દેશ ભરમાં ફેલાઈ જતાં શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘમાં દુઃખની લાગણી છવાઈ ગઈ હતી.

સ્વ. પૂજ્ય સાધ્વીજીના દરેક ચઢાવા સારા થયા હતા. ૨૫૦ કિલો સુખડ લાવી અગ્નિસંસ્કાર કરાયા હતા. અગ્નિસંસ્કારનો ચઢાવો ૧૯ લાખમાં થયો હતો.

પૂજ્ય ગુરૂજન્મ ભૂમિ શ્રી પેપરાલ તીર્થની ધન્યધરા પર...
પૂજ્ય શ્રી આદિઠાણાની નિશ્રામાં થરાદ નિવાસી
શ્રીમતી મથુરીબેન ચીમનલાલ ત્રિભોવનદાસ વોરા પરિવાર દ્વારા
આયોજીત શ્રી પંચ મંગલ મહાશ્રુત સ્કંધાદિ
ઉપધાન તપ સુખરૂપ નિર્વિઘ્ને પૂર્ણતાના આરે...
૮ નવેમ્બરના રોજ યોજાશે મોક્ષમાળા પરિધાન કાર્યક્રમ

સર્વત્ર સુખશાંતિની સંપદા **ઉપધાન** તપથી મેળવી શકાય છે. મન-વચન - કાયાના યોગોનું નિયંત્રિત સ્થાન એટલે **ઉપધાન** તપ.. શારીરિક - આત્મિક રોગોનું નિવારણ એટલે **ઉપધાન**.. કર્મોને ગાળવાનું સ્થાન એટલે **ઉપધાન**.. શરીરને તપાવી આત્માને શીતળતા અપાવતું પણ **ઉપધાન**.. શ્રમણ જીવનનો ટેસ્ટ એટલે એટલે **ઉપધાન**.. સંસારનું ઝેર ઉતારે તે **ઉપધાન**.. સંયમના રંગે રંગાવે **ઉપધાન**.. પ્રભુજીના વચનોના શ્રવણનો ઉત્તમ અવસર એટલે **ઉપધાન**.. ગુરૂ-ગચ્છની શાન વધારે **ઉપધાન**.. ઈચ્છાઓનો ખાત્મો બોલાવે તે **ઉપધાન**.. ચિત્તની સ્થિરતા કરાવતું તપ એટલે **ઉપધાન**.. ગુણ વૈભવમાં મગ્ન બનાવતું તપ એટલે **ઉપધાન**.. આત્મિક લક્ષ્મીને વરવાનું સ્થાન એટલે **ઉપધાન**.. શ્રમણ જીવનના ટેસ્ટ સમા મહાપ્રભાવિક **ઉપધાન તપમાં**.. ૧ લાખ નવકારમંત્રનો જાપ થાય છે. ૧૨૦૦ બૃહદ ગુરૂવંદન થાય છે. ૮૦૦૦, લોગ્ગસનો કાઉસગ્ગ થાય છે. ૯૦૦૦ ખમાસમણ અપાય છે, ૧૫૦૦ મમુત્થુણંના પાઠ થાય છે. ૬૦૦ નાના મોટા દેવવંદન થાય છે. ૪૭ દિવસ પૌષધ થાય એટલે ૧૪૧૦ સામાયિકનો લાભ પ્રાપ્ત થાય છે.

જૈન જગતના નભ મંડળના ચમકતા સિતારા, શાસનના સિરતાજ, ગચ્છ પ્રગતિના ઉતુંગ શિખરો સર કરનાર, બહુ દીક્ષાના દાનેશ્વરી, યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., તીર્થ પ્રેરક વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી નિત્યાનંદ વિજયજી મ.સા., આદિઠાણાની નિશ્રામાં શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયમાં ગુંજી ઉઠેલ ધર્મજાગૃતિના જયઘોષનો પડઘો શ્રી પેપરાલ તીર્થના ઐતિહાસિક ચાતુર્માસથી ભારતભરમાં સંભળાઈ રહ્યો છે.

ચાતુર્માસની શરૂઆતથી જ શ્રી પેપરાલ તીર્થની ધન્યધરા પર એક પછી એક ઐતિહાસિક શાસન પ્રભાવક કાર્યક્રમો અને તપ આરાધનાના વિવિધ દશ્યો સર્જાતા રહ્યા છે.

પૂજ્યશ્રીના મુખકમળ દ્વારા અપાયેલ પ્રેરણાનુસાર વ્યાખ્યાનથી પ્રેરાઈ ૬૫૦ થી અધિક આરાધકો નવકાર મંત્રની આરાધનામાં જોડાયા હતા. કેટલાય શ્રાવકોએ કેશ લોચ કરાવ્યો હતો. જ્યારે પૂજ્યશ્રીની નિશ્રામાં પર્યુષણ પર્વની આરાધના કરવા તેમજ મોટી સંખ્યામાં તપસ્વીરત્નો પારણા કરવા શ્રી પેપરાલ તીર્થે આવ્યા હતા.

યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ.

શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ની પ્રેરણાનુસાર સંવત ૨૦૭૧ ના ભાદરવા સુદ-૧૦ ને બુધવાર તા. ૨૩-૯-૨૦૧૫ ના રોજથી પંચમંગલ મહાશ્રુત સ્કંધાદિ ઉપદ્યાન તપનો મંગલ પ્રારંભ થયો હતો જેમાં ૬૪૦ થી અધિક આરાધકો જોડાયા હતા. જે ઉપધાન તપના આરાધકોનો માળારોપણનો કાર્યક્રમ સંવત ૨૦૭૧ ના આસો વદ-૧૨ ને રવિવાર તા. ૮-૧૧-૨૦૧૫ ના રોજ સંપન્ન થનાર છે. માળાના ચઢાવા તા. ૬-૧૧-૨૦૧૫ ના રોજ બોલાશે જ્યારે તા. ૭-૧૧-૨૦૧૫ ના રોજ ભવ્યાતિભવ્ય વરઘોડો નિકળનાર છે.

ચાતુર્માસ દરમ્યાન પંચ મંગલ મહાશ્રુત સ્કંધાદિ મહા મંગલકારી ઉપધાન તપની આરાધના કરાવવા યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમપૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. એ સંસ્કાર દાત્રી શ્રીમતી મથુરીબેન ચીમનલાલ ત્રિભોવનદાસ વોરા પરિવારના ઉદાર સખાવતી ધર્મશ્રેષ્ઠી શ્રી મહેન્દ્રભાઈ (બાબાભાઈ) ને પ્રેરણા કરી હતી. એ પ્રેરણાએ શ્રીમતી મથુરીમથુરીબેન ચીમનલાલ ત્રિભોવનદાસ વોરા પરિવારના ભાવ જગાડતાં આ અનુપમ તપ ને પૂજ્યશ્રીની નિશ્રામાં શ્રી પેપરાલ તીર્થ ખાતે સંપન્ન કરાવવા સકળ સંઘનો સહકાર મળી રહે તે માટે વિનંતી કરી હતી જેનો સંઘે સહ સ્વીકાર કર્યો હતો જેથી શ્રી સકળસંઘના પ્રોત્સાહનથી વધુ ઉત્સાહી થયેલા પોતાના સ્વદ્રવ્યનો ઉપધાન તપથી આરાધનામાં સદ્ઉપયોગ કરવાની તક મળતાં ઉદાર સખાવતી અનુમોદનીય ધર્મશ્રેષ્ઠી શ્રીમતી મથુરીબેન ચીમનલાલ ત્રિભોવનદાસ વોરા પરિવાર હરખાઈ ઉઠ્યો હતો. પરિવારના સર્વ શ્રી મહેન્દ્રભાઈ (બાબાભાઈ) વોરાએ પણ ઉપધાન તપની આરાધનામાં જોડાયેલા છે. જ્યારે શ્રી મહેન્દ્રભાઈના ધર્મપત્નિ શ્રીમતી સરોજબેન વોરા, સુપુત્રરત્ન શ્રી તેજસભાઈ વોરા, શ્રી પારસભાઈ વોરા, શ્રી શ્રેયાંસભાઈ વોરા તથા પુત્રવધુ શ્રીમતી મિકીબેન તેજસભાઈ વોરા, શ્રીમતી સપનાબેન પારસભાઈ વોરા, શ્રીમતી નિધિબેન શ્રેયાંસભાઈ વોરા, પૌત્રો-પોત્રી તેમજ સમસ્ત ત્રિભોવનદાસ મલ્લાચંદ પરિવારમાં આરાધકોની શ્રેષ્ઠ ભક્તિ કરવા હૃદયમાં છલકાતા સમુંદર જેવો ઉત્સાહ વ્યાપી ગયો હતો. ૪૭ દિવસની કઠોર પંચમંગલ મહાશ્રુત સ્કંધાદિ મહામંગલમય ઉપધાન તપની આરાધનામાં ૬૪૦ થી વધુ આરાધકોની જે રીતે શ્રેષ્ઠ ભક્તિ કરાઈ રહી છે તે અવિસ્મરણીય બની રહેશે. આજે જે આરાધકોને સેવા અપાઈ રહી છે તે વોરા પરિવારની યશોગાથા થરાદ સમાજ સાથે સાથે મધ્ય પ્રદેશ અને રાજસ્થાનના ઘેર ઘેર ગવાઈ રહી છે જે થરાદ જૈન સમાજ માટે ગૌરવની બાબત છે. આ આરાધના સુખરૂપ નિર્વિઘ્ને સંપન્ન થવા આવી રહી છે જેનો માળા રોપણનો કાર્યક્રમ તા. ૮-૧૧-૨૦૧૫ ના રોજ સંપન્ન થનાર છે. આ મંગલમય દિવસે સગા-સ્નેહીઓ અને સમાજજનોની હોંશિલી હાજરીમાં પૂજ્યશ્રી સપરિવારની પાવન નિશ્રામાં ઉપધાન તપના આરાધકો મોક્ષમાળા પરિધાન કરી ધન્યતાનો અનુભવ કરનાર છે. ત્યારે ઉપધાનતપ આયોજક શ્રીમતી મથુરીબેન ચીમનલાલ ત્રિભોવનદાસ વોરા

પરિવાર તેમજ શ્રી જયંતસેન શાસન પ્રભાવક ટ્રસ્ટ પેપરાલ દ્વારા આ પ્રસંગને દિપાવવા માટે શ્રી સકળસંઘને પધારવા તેમજ સાધર્મિક ભક્તિનો લાભ આપવા હાર્દિક અનુરોધ કરાયો છે. શ્રીમતી મથુરીબેન ચીમનલાલ ત્રિભોવનદાસ વોરા પરિવાર દ્વારા ૫૦ દિવસ દરમ્યાન કરાયેલ તપસ્વીઓની ભક્તિ તેમજ સંઘભક્તિ અનુમોદનીય અને અભિનંદનીય બની છે.

પોતાના ગુરૂની જન્મભૂમિ શ્રી પેપરાલ તીર્થની ખ્યાતિ અને વિશ્વના ગગનમાં ધર્મ જાગૃતિનો જયઘોષ ગાજતો કર્યો છે અને શ્રી ત્રિસ્તુતિક સમુદાયમાં નામ ગુંજતુ કરવામાં સિંહફાળો રહ્યો છે. એવા તીર્થ પ્રેરક વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી નિત્યાનંદ વિજયજી મ.સા., તેજસ્વીરત્ન પૂજ્ય મુનિરાજ શ્રી સિધ્ધરત્નવિજયજી, તેજસ્વીરત્ન મુનિરાજ શ્રી વિશ્વરત્ન વિજયજી અને વ્યાખ્યાન વાચક યુવા મુનિરાજ શ્રી નિપુણરત્નવિજયજી મ.સા. ના ચરણોમાં લાખ લાખ વંદન તેમજ વિશ્વ વિખ્યાત પેપરાલ પુત્ર યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમપૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ના ચરણોમાં કોટી કોટી વંદન.

વિશેષમાં તા. ૫-૧૦-૨૦૧૫ ના રોજ ઉપધાન તપના મહિમાની સમજણ સંગીતકાર શ્રી વિશાલભાઈ એ સંગીતના સૂરો સાથે આપી હતી. જ્યારે તા. ૧૭-૧૦-૨૦૧૫ ના રોજ ''પ્રભુ તારા જેવું મારે થવું છે'' આ વિષય પર સુપ્રસિધ્ધ સંગીતકાર નિલેશ રાણાવતે તે સ્ટેજ કાર્યક્રમ કરીને સહુને જકડી રાખ્યા હતા.

ઉલ્લેખનીય છે કે નીવીના સમયે અને ક્રિયા સમયે પૂજ્ય નિત્યાનંદ વિજયજી મ.સા. સહુ તપસ્વીરત્નોને સુખ શાતા પુછી આત્મીયતા દર્શાવતા રહ્યા છે તેમજ પૂજ્ય નિપુણરત્ન વિજયજી મ.સા. તેમની ભાવ વિભોર સૈલીમાં વ્યાખ્યાન આપી સહુની ધર્મભાવના જાગૃત કરતા રહ્યા છે.

ઉપધાનતપના આરાધકોની યાદીની જોઈતી માહિતી પુરી પાડવા બદલ શ્રી વિરલકુમાર બાબુલાલ વોરાનો આભાર માનીએ છીએ.

શ્રીમતી મથુરીબેન ચીમનલાલ ત્રિભોવનદાસ વોરા પરિવાર દ્વારા
આયોજીત

ઉપધાન તપના આરાધકોની યાદી

યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમપૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેવ સૂરિશ્વરજી મ.સા., તીર્થ પ્રેરક વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી નિત્યાનંદ વિજયજી મ.સા. આદિઠાણાની પાવન નિશ્રામાં શ્રી પેપરાલ તીર્થ ખાતે વિક્રમ સર્જક ઉપધાન તપની આરાધના સંપન્ન થવા જઈ રહી છે જેમાં અંદાજીત ૬૪૦ આરાધકોએ તપશ્ચર્યા કરી છે. તેમાં અંદાજીત ૪૪૦ આરાધકોએ ૪૫ નું ઉપધાન મોક્ષમાળા ૧૦૮, આરાધકોએ ૩૫, ૪૫ આરાધકોએ ૨૮ અને ૪૭ આરાધકોએ ૧૮ દિવસની ઉપધાન તપશ્ચર્યા કરી હતી જેની યાદી અત્રે પ્રસ્તુત છે. ક્રમવાર યાદી રજુ કરેલ છે.

શાહ હીનાબેન અશોકભાઈ	થરાદ
શાહ મીનાબેન પ્રવિણભાઈ	થરાદ
શાહ શીલ્પાબેન અશ્વિનભાઈ	જેતડા
ધરૂ પાયલબેન વસંતભાઈ	થરાદ
વારીયા જીનાલી વિનોદભાઈ	સુરત
વારીયા ગુણીબેન વિનોદભાઈ	સુરત
વોહેરા ઋતુબેન વિનોદભાઈ	અમદાવાદ
વોહેરા નયનાબેન વિક્રમભાઈ	અમદાવાદ
વોરા રાજુલાબેન જગદીશકુમાર	સુરત
વોરા શીલ્વીબેન પ્રબોધકુમાર	સુરત
સંઘવી સદગુણાબેન હસમુખલાલ	સુરત
વોરા શારદાબેન બાબુલાલ પરીખ અંજનાબેન રમેશભાઈ	સુરત
સંઘવી દર્ષિ સમીરકુમાર	સુરત
વોહેરા જયના પિયુષકુમાર	સુરત
અદાણી ઋત્વી નિકુલકુમાર	સુરત
વેદલીયા નિશી જયેશભાઈ	સુરત
દોશી સુધાબેન મહેન્દ્રકુમાર	સુરત
દોશી દ્રષ્ટિબેન અશ્વિનકુમાર	સુરત
સંઘવી રીયાબેન મહેન્દ્રકુમાર	થરાદ
સંઘવી સ્તુતિ દિલીપકુમાર	અમદાવાદ
સંઘવી શ્લોકા દિલીપકુમાર	અમદાવાદ
સંઘવી કેન્વી હીતેશભાઈ	થરાદ
વોહેરા માનસી દિનેશભાઈ	અમદાવાદ
ભણશાલી કમલાબેન શાંતિલાલ	થરાદ
વોહેરા યશ્વી હરેશકુમાર	મુંબઈ
વોરા રસીલાબેન હસમુખભાઈ	મુંબઈ
ભણશાલી ખુશ્બુ પ્રકાશભાઈ	મુંબઈ
વોહેરા કૃપાલી દિપકભાઈ	સુરત
સંઘવી હર્મીબેન મહેન્દ્રકુમાર	સુરત
કોઠારી પારસમલજી ભગવાનભાઈ	ઉંઝા
વેદલીયા હસમુખભાઈ મફતલાલ	ડીસા
વેદલીયા વર્ષાબેન હસમુખભાઈ	ડીસા
વેદલીયા કરૂણાબેન હીરાલાલ	ડીસા
વેદલીયા વર્ષાબેન હીરાલાલ	ડીસા
વેદલીયા રસીલાબેન પ્રવિણભાઈ	ડીસા
મોરખીયા તન્વીબેન વિક્રમકુમાર	ડીસા
વેદલીયા વર્ષાબેન ધુડાલાલ	ડીસા
દોશી ગુણીબેન હિંમતલાલ	અમદાવાદ
શેઠ વર્ષાબેન અશોકભાઈ	ડીસા
દોશી પુજાબેન નરપતલાલ	અમદાવાદ
અદાણી પુજાબેન વસંતભાઈ	અમદાવાદ
મોરખીયા પ્રભાબેન નાનાલાલ	ડીસા
મોરખીયા સુશીલાબેન ભીખાભાઈ	સુરત
મોરખીયા સુશીલાબેન દિનેશભાઈ	સુરત
ભણશાલી સુશીલાબેન ભરતભાઈ	સુરત
બલ્લુ ગુણીબેન અશોકભાઈ	સુરત
વોહેરા શાંતાબેન ભરતભાઈ	સુરત
વોહેરા સ્તુતિબેન પ્રકાશભાઈ	સુરત
દેસાઈ દ્રષ્ટિબેન ચંદ્રકાંતભાઈ	સુરત
વોહેરા આશ્વીબેન શૈલેષભાઈ	સુરત
સંઘવી વીરતીબેન દિપકભાઈ	સુરત
વોહેરા મીનાબેન વિજયકુમાર	અમદાવાદ
વોહેરા રાજવીબેન વિજયકુમાર	અમદાવાદ
સંઘવી ફેરીબેન અરવિંદભાઈ	અમદાવાદ
શેઠ કાંતાબેન વાડીલાલ	અમદાવાદ
વોહેરા સ્તુતિબેન સુરેશભાઈ	અમદાવાદ
અદાણી મિલોનીબેન નીકેશ	અમદાવાદ
સંઘવી કંચનબેન વાડીલાલ	અમદાવાદ
વોહેરા વિમળાબેન વિક્રમકુમાર	અમદાવાદ
દોશી પ્રિયાબેન મહેન્દ્રકુમાર	ડીસા
શાહ સિમીબેન નવીનભાઈ	વાસણા
શાહ ફેન્સીબેન રમેશભાઈ	વાસણા
શાહ જુલીબેન જગદીશભાઈ	વાસણા
દોશી સિન્નીબેન દિનેશકુમાર	ડીસા
બલ્લુ માયાબેન પ્રવિણચંદ્ર	થરાદ
વોરા તૃપ્તિબેન અલ્પેશભાઈ	મુંબઈ
અદાણી સુનંદાબેન નરેન્દ્રભાઈ	મુંબઈ
અદાણી નરેન્દ્રભાઈ પુનમચંદ	મુંબઈ
વોહેરા ભવ્યાબેન શૈલેષભાઈ	અમદાવાદ
વોહેરા કિનાબેન શૈલેષભાઈ	અમદાવાદ
દેસાઈ ભુમીબેન ચંદ્રકાંતભાઈ	થરાદ
સંઘવી રાહીલ મહેન્દ્રભાઈ	થરાદ
ભણશાલી યશભાઈ રમેશકુમાર	થરાદ

દોશી રૂચીબેન નટવરલાલ	ગાંધીનગર
મોરખીયા ગુણીબેન કીર્તિલાલ	લાખણી
શાહ જુલીબેન સુરેશભાઈ	લાખણી
મોરખીયા પુજાબેન દિનેશકુમાર	લાખણી
મોરખીયા જીનલબેન રસિકલાલ	લાખણી
શાહ શિતલબેન રમેશભાઈ	લાખણી
શાહ હેત્વીબેન અરવિંદભાઈ	લાખણી
દોશી અવનીબેન નવિનભાઈ	લાખણી
મોરખીયા હેલીબેન સુરેશભાઈ	લાખણી
શાહ ધ્રુવીબેન રમેશભાઈ	સુરત
શેઠ પુજાબેન કાંતિલાલ	અમદાવાદ
શાહ આંગીબેન મનિષકુમાર	અમદાવાદ
શેઠ જીનલબેન નરેશભાઈ	અમદાવાદ
શેઠ ઋતુબે ન નરેશભાઈ	અમદાવાદ
શાહ આયુષીબેન જયંતિલાલ	લાખણી
શાહ ઝલકબેન રમેશભાઈ	સુરત
શાહ મીકીબેન મહેશકુમાર	સુરત
શાહ હીમાંશીબેન પ્રકાશભાઈ	અમદાવાદ
માજની શ્વેતાબેન અશોકભાઈ	સુરત
કોરડીયા રૂષભભાઈ રમેશભાઈ	ડીસા
વેદલીયા સિધ્ધીબેન વિનોદભાઈ	ઘેસડા
મોરખીયા શ્વેનીબેન મહેન્દ્રભાઈ	પેપલુ
દોશી શ્વેનીબેન બકુલકુમાર	ડોડીયા
વીરવાડીયા પુષ્પાબેન દિનેશચંદ્ર	જેતડા
મોરખીયા પ્રિન્સી મહાસુખભાઈ	
મોરખીયા કૃપાબેન યોગેશકુમાર	અમદાવાદ
શાહ વર્ષીલભાઈ શૈલેષભાઈ	અમદાવાદ
દોશી મોક્ષીબેન અશ્વિનકુમાર	સુરત
અદાણી રવિભાઈ પુનમચંદ	અમદાવાદ
મોરખીયા યશભાઈ દિનેશભાઈ	અમદાવાદ
વેદલીયા ભુમીબેન ચેતનભાઈ	ડીસા
મોરખીયા રીન્નીબેન અશોકભાઈ	ડીસા
ધરૂ પ્રવિણચંદ્ર ગગલદાસ	ડોડીયા
ધરૂ હંસાબેન ધીરજલાલ	પેપરાલ
ધરૂ કીર્તિલાલ ગગલદાસ	અમદાવાદ
ધરૂ મયંકભાઈ કીર્તિલાલ	અમદાવાદ
વોહેરા જાગૃતિબેન અભિષેકભાઈ	સુરત

દોશી ઝીલ અશોકકુમાર	મુંબઈ
દેસાઈ જ્યોતિબેન નિલેષકુમાર	થરાદ
બલ્લુ શૈલીબેન રજનીભાઈ	સુરત
વોરા પક્ષાલભાઈ વસંતકુમાર	સુરત
વોહેરા નેન્સીબેન પરેશભાઈ	સુરત
કોરડીયા રીયાબેન નવીનભાઈ	ડીસા
વોહેરા ભરતભાઈ મફતલાલ	સુરત
બલ્લુ સુશીલાબેન પ્રફુલભાઈ	સુરત
દોશી અંજુબેન નવિનકુમાર	સુરત
બલ્લુ જીલબેન નવિનકુમાર	થરાદ
વોરા પ્રિયાબેન રમેશભાઈ	સુરત
મોરખીયા જુલીબેન પ્રકાશભાઈ	ડીસા
વોહેરા રિધ્ધીબેન નિતીનભાઈ	ડીસા
શાહ આશ્વીબેન કુમારપાળભાઈ	ડીસા
શાહ નિધીબેન કુમારપાળભાઈ	ડીસા
મોરખીયા મિશ્વાબેન વિક્રમભાઈ	અમદાવાદ
મોરખીયા યશ્વીબેન અશોકભાઈ	ડીસા
મોરખીયા શ્લોકભાઈ દિપકભાઈ	ડીસા
વોહેરા સંયમભાઈ સતિષભાઈ	સુરત
વોહેરા જીયાબેન અલ્પેશભાઈ	સુરત
વોહેરા પ્રિયાંશીબેન અલ્પેશભાઈ	સુરત
વોહેરા રૂસીલભાઈ અલ્પેશભાઈ	સુરત
વોહેરા આંગીબેન સતિષભાઈ	સુરત
સંઘવી પુષ્પાબેન બાબુભાઈ	સુરત
ભણશાલી લીલાબેન અમૃતભાઈ	સુરત
દોશી લીલાબેન બાબુલાલ	ડીસા
અદાણી કંચનબેન હસમુખભાઈ	સુરત
દોશી તન્વીબેન વિજયકુમાર	સુરત
અદાણી વર્ષાબેન અમૃતભાઈ	થરાદ
મોદી માનસીબેન મહેન્દ્રભાઈ	અમદાવાદ
મોરખીયા કંચનબેન રમેશભાઈ	લાખણી
વોહેરા શ્રુષ્ટીબેન વિનોદભાઈ	સુરત
સંઘવી નેહાબેન દિપકભાઈ	સુરત
સંઘવી આંગીબેન દિપકભાઈ	સુરત
મોદી ટવીંકલ જેકીનભાઈ	સુરત
દેસાઈ પલબેન ચિરાગભાઈ	સુરત
દેસાઈ કલ્પ મહેન્દ્રભાઈ	સુરત

દોશી અરવિંદભાઈ ભોગીલાલ	સુરત
દેસાઈ સરોજબેન મહેન્દ્રકુમાર	સુરત
વોરા આંગીબેન ભરતભાઈ	સુરત
સંઘવી હેમલબેન મહેશભાઈ	સુરત
મોદી જેનીસભાઈ ભરતભાઈ	સુરત
ધરૂ રૂપસેન હીતેશભાઈ	સુરત
પરીખ મોઘીબેન સેવંતીલાલ	મુંબઈ
વોહેરા ગુણીબેન પ્રવિણભાઈ	મુંબઈ
વોહેરા ચંદ્રિકાબેન હસમુખભાઈ	મુંબઈ
પરીખ લીલાબેન સુરેશભાઈ	મુંબઈ
દેસાઈ ટીનાબેન શૈલેષભાઈ	સુરત
મોરખીયા જીન્સીબેન ભરતભાઈ	ડીસા
કોરડીયા આયુશીબેન હીંમતલાલ	ડીસા
મોરખીયા સેજલબેન શૈલેષભાઈ	મુંબઈ
વોરા પ્રાચીબેન કીરણભાઈ	અમદાવાદ
શાહ આંગીબેન અનિલકુમાર	સુરત
શાહ રાજવીબેન ભરતકુમાર	અમદાવાદ
વોહેરા રૂચીતાબેન રમેશભાઈ	સુરત
મોરખીયા શ્રેયાબેન વિપુલભાઈ	પાલડી
વોહેરા રીયાબેન નિપુલભાઈ	અમદાવાદ
વોહેરા કલ્પનાબેન સુરેશભાઈ	અમદાવાદ
વોહેરા ખુશીબેન રાજેશકુમાર	અમદાવાદ
વોહેરા રાજવીબેન રાજેશકુમાર	અમદાવાદ
સંઘવી રીંકલબેન અરવિંદભાઈ	અમદાવાદ
અદાણી બાબુલાલ વાઘજીભાઈ	અમદાવાદ
સંઘવી હેત્વીબેન કેતનભાઈ	અમદાવાદ
સંઘવી પાર્શ્વ સ્નેહલભાઈ	અમદાવાદ
વોહેરા હેલીબેન સેવંતીલાલ	અમદાવાદ
વોહેરા જીલબેન સેવંતીલાલ	અમદાવાદ
વોહેરા મોનાલીબેન અશ્વિનભાઈ	મુંબઈ
શાહ કોકીલાબેન પ્રકાશભાઈ	મુંબઈ
ધરૂ રીયાબેન અશોકભાઈ	મુંબઈ
દોશી પ્રિયાંશીબેન જીગ્નેશકુમાર	મુંબઈ
દોશી ક્રિયાબેન જીગ્નેશકુમાર	મુંબઈ
વોરા હસુબેન સેવંતીલાલ	મુંબઈ
સંઘવી આયુષીબેન નવિનકુમાર	અમદાવાદ
ધરૂ વીરતીબેન જયેશભાઈ	અમદાવાદ
દોશી રેશાબેન વાઘજીભાઈ	અમદાવાદ
દોશી વૈરાગીબેન અશોકભાઈ	થરાદ
પરીખ પ્રિયાબેન ધર્મેશભાઈ	મુંબઈ
વોહેરા અશોકભાઈ કીર્તિલાલ	મુંબઈ
સંઘવી ઈશાબેન પ્રકાશભાઈ	મુંબઈ
દોશી નિધીબેન જયેશભાઈ	મુંબઈ
શેઠ રાજેશભાઈ બાબુલાલ	અમદાવાદ
વોહેરા રસીલાબેન દિનેશભાઈ	રાજકોટ
ધરૂ ઈન્દુબેન નવિનકુમાર	અમદાવાદ
બલ્લુ શીલ્પાબેન નવિનચંદ્ર	અમદાવાદ
શાહ પ્રવિણાબેન દિપકભાઈ	અમદાવાદ
મોદી અક્ષાલીબેન રાજેશભાઈ	અમદાવાદ
શેઠ અક્ષાલીબેન સ્મિતભાઈ	અમદાવાદ
શેઠ કંચનબેન ધીરજલાલ	અમદાવાદ
દોશી રમીલાબેન દિનેશકુમાર	અમદાવાદ
ધરૂ આશ્વીબેન નિલેશકુમાર	અમદાવાદ
બલ્લુ પંક્તિબેન વિપુલભાઈ	અમદાવાદ
બલ્લુ રૂત્વાબેન જાગૃતકુમાર	અમદાવાદ
બલ્લુ સિમોનીબેન કૈલેશભાઈ	અમદાવાદ
બલ્લુ અલકાબેન કૈલાસભાઈ	અમદાવાદ
શાહ મિલોનીબેન ગીરીશભાઈ	અમદાવાદ
દોશી જીલબેન હીતેશભાઈ	અમદાવાદ
શાહ રિધ્ધીબેન દિનેશકુમાર	અમદાવાદ
શાહ રૂત્વા હીતેશભાઈ	અમદાવાદ
દેસાઈ ખ્યાતીબેન નિતીનકુમાર	અમદાવાદ
દેસાઈ આશ્વી કલ્પેશભાઈ	અમદાવાદ
વોરા હંસાબેન નરપતલાલ	અમદાવાદ
વોરા શર્મિષ્ઠાબેન કલ્પેશભાઈ	મુંબઈ
વોરા અંજુબેન વિક્રમભાઈ	અમદાવાદ
શાહ કોકીલાબેન ભરતભાઈ	અમદાવાદ
દોશી લલીતાબેન રમેશકુમાર	અમદાવાદ
અદાણી વાઘજીભાઈ છોટાલાલ	અમદાવાદ
વોહેરા સવિતાબેન રમણલાલ	અમદાવાદ
વોહેરા રમણલાલ મફતલાલ	અમદાવાદ
દોશી કેયુરભાઈ નવિનકુમાર	અમદાવાદ
દોશી કૃણાલભાઈ દુધાભાઈ	અમદાવાદ
દેસાઈ જ્યોત્સનાબેન અશોકભાઈ	અમદાવાદ

સંઘવી પ્રિતીબેન હસમુખભાઈ	અમદાવાદ
દેસાઈ મીનાબેન હસમુખલાલ	અમદાવાદ
શાહ પુષ્પાબેન ભીખાભાઈ	અમદાવાદ
મોરખીયા દક્ષાબેન અમૃતભાઈ	અમદાવાદ
શાહ આંગીબેન પ્રકાશકુમાર	અમદાવાદ
દેસાઈ પ્રિયાબેન બિપીનભાઈ	અમદાવાદ
સંઘવી પૂર્વશીબેન કિરીટભાઈ	અમદાવાદ
સંઘવી વિધીબેન અશોકકુમાર	અમદાવાદ
અદાણી રાજવીબેન સંજયકુમાર	અમદાવાદ
શાહ રીયાબેન નિલેશકુમાર	અમદાવાદ
દોશી વસંતકુમાર છોટાલાલ	અમદાવાદ
સંઘવી ભરતકુમાર જ્યંતિલાલ	અમદાવાદ
દોશી સુરેશકુમાર માનચંદ	અમદાવાદ
બલ્લુ પ્રવિણભાઈ રાજમલભાઈ	અમદાવાદ
વેદલીયા વાસુબેન સુરેશભાઈ	અમદાવાદ
સંઘવી પુજાબેન ભરતકુમાર	અમદાવાદ
સંઘવી ગીરાબેન પ્રફુલકુમાર	અમદાવાદ
દેસાઈ અશોકકુમાર વાઘજીભાઈ	અમદાવાદ
વોરા રૂપલબેન મેહુલકુમાર	અમદાવાદ
શાહ વિધીબેન વિનોદભાઈ	અમદાવાદ
વોહેરા પ્રકાશકુમાર ચીમનલાલ	અમદાવાદ
મોરખીયા ચીંકીબેન અરવિંદભાઈ	ડીસા
વોહેરા સુશીલાબેન બાબુલાલ	સુરત
મોરખીયા પાયલબેન મિતુલકુમાર	સુરત
સંઘવી આંગીબેન અશોકભાઈ	અમદાવાદ
દોશી વૈરાગીબેન નવિનકુમાર	અમદાવાદ
દોશી રૂત્વીબેન નિતીનકુમાર	અમદાવાદ
મોરખીયા જીલબેન પ્રફુલભાઈ	અમદાવાદ
સંઘવી કોકીલાબેન ભીખાલાલ	સુરત
શાહ રસીલાબેન હીંમતલાલ	અમદાવાદ
શાહ નીરૂબેન બિપીનકુમાર	અમદાવાદ
વોહેરા રસીલાબેન કિર્તીભાઈ	અમદાવાદ
વોહેરા ચંદ્રીકાબેન કીર્તીકુમાર	અમદાવાદ
વોહેરા રમીલાબેન પ્રવિણચંદ્ર	અમદાવાદ
અદાણી રમીલાબેન ભરતકુમાર	અમદાવાદ
સંઘવી આશ્થા બાબુલાલ	સુરત
શેઠ પ્રીત કલ્પેશભાઈ	સુરત
વોહેરા વૃષ્ટિ સંજયભાઈ	સુરત
વોહેરા શારદાબેન સેવંતીલાલ	સુરત
વોહેરા ક્રીમીબેન સુરેશભાઈ	સુરત
વોહેરા પુજાબેન સુરેશભાઈ	સુરત
વોહેરા ખુશીબેન સંજયકુમાર	સુરત
વોહેરા જીલબેન હીતેશભાઈ	સુરત
વોહેરા મોક્ષી હીતેશભાઈ	સુરત
બલ્લુ ચંદ્રિકાબેન ધીરજલાલ	થરાદ
મોરખીયા દર્શનાબેન પ્રવિણભાઈ	લાખણી
શેઠ વર્ષાબેન હીંમતલાલ	
સંઘવી ન્યારીબેન વિનોદભાઈ	થરાદ
અદાણી લલીતાબેન વાડીલાલ	મુંબઈ
ભણશાલી પ્રિન્સીબેન રતિલાલ	લાખણી
દોશી ઈન્દુબેન રમેશચંદ્ર	સુરત
શાહ સજનીબેન શૈલેષકુમાર	ડીસા
વેદલીયા શીલ્પાબેન અશ્વિનભાઈ	જેટાદ
વોહેરા ચંદ્રિકાબેન ગગલદાસ	દુધ્વા
વોહેરા શારદાબેન જ્યંતિલાલ	ડીસા
વોહેરા ચંદ્રિકાબેન શૈલેષભાઈ	પેપરાલ
વોહેરા શાંતાબેન અમૃતલાલ	પાલડી
દોશી કોકીલાબેન પ્રવિણચંદ્ર	થરાદ
મોદી ગુણીબેન મનસુખલાલ	ભાચર
મોદી મનસુખલાલ મફતલાલ	ભાચર
મોદી રમીલાબેન જગદીશચંદ્ર	સુરત
શેઠ કંચનબેન અમૃતલાલ	ડીસા
વીરવાડીયા રૂત્વાબેન અતુલભાઈ	સુરત
કોરડીયા શ્રેણી હસમુખભાઈ	ડીસા
શાહ રીયાબેન મુકેશભાઈ	થરાદ
વોહેરા હસમુખભાઈ ડાહ્યાલાલ	અમદાવાદ
દોશી અરવિંદભાઈ જશરાજભાઈ	મુંબઈ
દોશી ધવલકુમાર અરવિંદભાઈ	મુંબઈ
શાહ બાબુલાલ ત્રિભોવનદાસ	કુંભારા
દોશી દિનેશકુમાર નરપતલાલ	સુરત
મોદી ચંદ્રબાળા પ્રકાશચંદ્ર	જાવરા
દોશી કંચનબેન બાબુલાલ	કુંભારા
દોશી પ્રભાબેન અરવિંદભાઈ	મુંબઈ
વોહેરા રસીલાબેન નટવરલાલ	અમદાવાદ

સંઘવી વિપુલભાઈ રસિકલાલ	અમદાવાદ
શાહ ખુશીબેન કલ્પેશભાઈ	સુરત
વોરા દિપીકાબેન વિપુલકુમાર	મુંબઈ
પરીખ લલીતાબેન રમણલાલ	મુંબઈ
મોરખીયા સાક્ષી મહેન્દ્રભાઈ	પેપલુ
અદાણી રાજવીબેન વાડીલાલ	સુરત
વોહેરા કંચનબેન તારાચંદભાઈ	અમદાવાદ
મોરખીયા કંચનબેન ભીખાલાલ	વાસણા
સંઘવી સરજુબેન હાર્દિકભાઈ	મુંબઈ
ધરૂ વિમળાબેન જયેશભાઈ	મુંબઈ
વોરા પ્રિયાંશીબેન પ્રકાશભાઈ	મુંબઈ
મોરખીયા વર્ષાબેન ભરતભાઈ	સુરત
સંઘવી મિહીરભાઈ કલ્પેશભાઈ	મુંબઈ
સંઘવી ફાલુબેન વિજયભાઈ	મુંબઈ
વોહેરા પ્રિતીબેન વિક્રમભાઈ	મુંબઈ
પરીખ જાનવીબેન ચિરાગભાઈ	મુંબઈ
પરીખ કંચનબેન કિર્તીલાલ	મુંબઈ
સંઘવી પુજાબેન પ્રવિણભાઈ	અમદાવાદ
સંઘવી વર્ષાબેન શાંતિલાલ	અમદાવાદ
સંઘવી આંગીબેન પ્રવિણભાઈ	અમદાવાદ
વોહેરા મહેન્દ્રકુમાર ચીમનલાલ	અમદાવાદ
સંઘવી કોકીલાબેન ચંદ્રકાંતભાઈ	અમદાવાદ
સંઘવી શ્વેતાબેન કલ્પેશભાઈ	સુરત
સંઘવી ચંદ્રિકાબેન નવીનભાઈ	સુરત
અદાણી ટવીંકલબેન સુરેશભાઈ	સુરત
અદાણી પુજાબેન દિનેશભાઈ	સુરત
મોરખીયા રમીલાબેન પ્રકાશકુમાર	સુરત
વીરવાડીયા ઈન્દુબેન સેવંતીલાલ	સુરત
શાહ મંજુબેન મહેન્દ્રભાઈ	સુરત
શેઠ આંગીબેન પ્રકાશભાઈ	ઉંઝા
શાહ વર્ષાબેન નરેશભાઈ	અમદાવાદ
દોશી પ્રેક્ષાબેન રાકેશભાઈ	અમદાવાદ
મોરખીયા રમેશભાઈ ચીમનલાલ	લાખણી
વોહેરા પાર્થભાઈ અશોકભાઈ	પેપરાલ
દોશી પ્રાપ્તીબેન પિયુષભાઈ	ડીસા
શાહ બિપીનકુમાર શાંતિલાલ	અમદાવાદ
વોરા અમૃતલાલ માધવલાલ	અમદાવાદ
ધરૂ મોક્ષેસ પરેશભાઈ	મુંબઈ
ધરૂ બીજલબેન પારસભાઈ	મુંબઈ
ધરૂ પારસભાઈ ધુડાલાલ	મુંબઈ
વારીયા ખુશાલભાઈ દિનેશભાઈ	સુરત
ધરૂ અમીષાબેન રોનકભાઈ	મુંબઈ
વોરા શ્રુતિબેન સુરેશકુમાર	સુરત
વોરા શ્રેયકુમાર સુરેશભાઈ	સુરત
વોરા પીનાબેન સુરેશકુમાર	સુરત
દેસાઈ ખુશીબેન નિતીનભાઈ	થરાદ
દેસાઈ શ્રેયા દિલીપભાઈ	થરાદ
દેસાઈ પ્રિયાબેન દિલીપભાઈ	થરાદ
શેઠ ગુણીબેન પ્રવિણભાઈ	અમદાવાદ
મોરખીયા માનસીબેન અરવિંદભાઈ	ડીસા
ધરૂ સંગીતાબેન અલ્પેશભાઈ	સુરત
ધરૂ આર્યનભાઈ અલ્પેશભાઈ	સુરત
વીરવાડીયા ક્રિયા નવીનભાઈ	ડીસા
ભણશાલી ગ્રેસી ભરતભાઈ	થરાદ
સંઘવી નવીનચંદ્ર ગગલદાસ	સુરત
દોશી જીનલબેન દિનેશકુમાર	સુરત
દોશી ભુમિબેન પ્રવિણચંદ્ર	અમદાવાદ
ભણશાલી ભવ્યભાઈ શૈલેષભાઈ	પાલનપુર
સંઘવી વર્ષાબેન સુરેશભાઈ	અમદાવાદ
વોહેરા જ્યોતિકાબેન રમેશભાઈ	સુરત
વોહેરા સવિતાબેન મફતલાલ	સુરત
શેઠ હીર નિતીનકુમાર	અમદાવાદ
શેઠ સાક્ષીબેન વિજયકુમાર	અમદાવાદ
મહેતા લબ્ધીબેન દિનેશભાઈ	સુરત
શેઠ અલકાબેન પ્રકાશકુમાર	ઉંઝા
વીરવાડીયા મંજુલાબેન ભોગીલાલ	ડીસા
અદાણી સ્મીતભાઈ નરેશભાઈ	થરાદ
મોરખીયા નિરાલીબેન વિરલકુમાર	અમદાવાદ
અદાણી પ્રાચીબેન દિનેશભાઈ	સુરત
વોરા સલોનીબેન ભરતકુમાર	અમદાવાદ
વોહેરા જાનવીબેન રાકેશભાઈ	અમદાવાદ
શેઠ કિમીબેન ભુપેન્દ્રભાઈ	અમદાવાદ
વોહેરા જીયાબેન મનિષભાઈ	સુરત
વોહેરા ગ્રેસીબેન પારસભાઈ	મુંબઈ

શાહ રૂતુબેન અંકિતભાઈ	સુરત
દેસાઈ રીટાબેન શૈલેષકુમાર	થરાદ
કોરડીયા જૈનમભાઈ વિનોદભાઈ	ડીસા
દોશી આંગીબેન સુરેશભાઈ	સુરત
મોરખીયા દીક્ષીબેન રાજુભાઈ	સુરત
મહેતા આશ્વીબેન સેવંતીભાઈ	સુરત
મહેતા હીનાબેન કમલેશભાઈ	સુરત
મહેતા કિષીબેન કમલેશભાઈ	સુરત
શાહ અંજલીબેન હરેશભાઈ	અમદાવાદ
ધરૂ પ્રાચીબેન અજયકુમાર	અમદાવાદ
શાહ આરજુબેન મુકેશભાઈ	અમદાવાદ
મોરખીયા શારદાબેન વાડીલાલ	અમદાવાદ
મોરખીયા અશોકભાઈ મણીલાલ	મુંબઈ
વોહેરા પ્રિતીબેન ભરતભાઈ	સુરત
દેસાઈ પ્રવિણચંદ્ર ચીમનલાલ	મુંબઈ
વોહેરા વિશ્વાબેન ભરતભાઈ	સુરત
મોરખીયા વૈશાલીબેન બીરેનકુમાર	અમદાવાદ
સંઘવી યશ્વીબેન રમેશકુમાર	અમદાવાદ
વોહેરા આશ્વીબેન ટીકુભાઈ	અમદાવાદ
શાહ કૃષીબેન અરવિંદકુમાર	અમદાવાદ
ધરૂ આશાબેન મહેશકુમાર	અમદાવાદ
શીરોઈયા શ્રુતિબેન શ્રીપાલભાઈ	અમદાવાદ
શીરોઈયા સુશીલાબેન નરપતલાલ	અમદાવાદ
સંઘવી સ્મિત શૈલેષભાઈ	મુંબઈ
શેઠ આર્ચીબેન ભરતકુમાર	અમદાવાદ
શાહ દીયાબેન અમિતભાઈ	આણંદ
માજની અલકાબેન પ્રકાશકુમાર	સુરત
વોહેરા મોક્ષીલ જીતુભાઈ	
વોહેરા હર્ષ કમલેશભાઈ	
વોરા નિલેશભાઈ બાબુલાલ	
વોરા જીગ્નેશભાઈ બાબુલાલ	
સંઘવી યશ દિનેશભાઈ	
સંઘવી દિવ્યા દિનેશભાઈ	
મોરખીયા મીશ્વા પ્રકાશભાઈ	
મોરખીયા આર્ય શ્રેણીકભાઈ	
મોરખીયા કલ્પ શ્રેણીકભાઈ	
વોહેરા પીન્ટુભાઈ પ્રકાશભાઈ	
દોશી યશ મહેન્દ્રભાઈ	
દોશી હર્ષિલ મહેન્દ્રભાઈ	
કોરડીયા વિશ્વા અશ્વિનભાઈ	
વોહેરા કીર્તીલાલ હાલચંદભાઈ	
જૈન ગુણીબેન (દીક્ષાર્થી)	
વોરા સોનલબેન નિલેશભાઈ	
વોરા ચંદ્રિકાબેન હસમુખલાલ	
વોરા શારદાબેન હસમુખભાઈ	
પરીખ બચીબેન નવીનચંદ્ર	
અદાણી નમ્રતાબેન રમેશભાઈ	
વોરા ઉજાલીબેન પ્રકાશચંદ્ર	
શાહ ધ્વની શૈલેષભાઈ	
શાહ ફેન્સી ભરતભાઈ	
શાહ જીયા રાજુભાઈ	
વોહેરા ક્રીયા હીતેશભાઈ	
દોશી રમીલાબેન નવીનભાઈ	
વીરવાડીયા પ્રિયંકાબેન રમેશભાઈ	
સંઘવી ચેતનાબેન દિનેશકુમાર	
દેસાઈ પ્રાચીબેન પિયુષભાઈ	
વોરા શૈલીબેન રોહિતભાઈ	
શેઠ નિધીબેન વિજયભાઈ	
વોરા નિશીબેન વસંતભાઈ	
સંઘવી મંજુલાબેન વિનોદચંદ્ર	
સંઘવી સવિતાબેન રમણલાલ	
સંઘવી ગુણીબેન પ્રવિણભાઈ	
વોહેરા કલાબેન રમેશભાઈ	નડીઆદ
સંઘવી ગુણીબેન ભરતભાઈ	
મોટી ગુણીબેન ફોજાલાલ	
વોરા પુષ્પાબેન વિનોદભાઈ	
જૈન સંગીતા	
જૈન પુખરાજજી	
જૈન મોહીનીબેન	
જૈન આશાબેન	
વોહેરા જલ્પાબેન જીતેન્દ્રભાઈ	
ધરૂ ઈન્દુબેન હિંમતલાલ	
શાહ મણીબેન રસીકભાઈ	
શાહ રીટાબેન પ્રકાશભાઈ	

શાહ કિરણબેન ધીરજલાલ
શાહ જયશ્રીબેન શૈલેષભાઈ
દોશી આશાબેન સમકિતભાઈ
ધરૂ ગુણીબેન રમેશભાઈ
અદાણી શારદાબેન ધનજીભાઈ
શેઠ ભારતીબેન અશોકભાઈ
શેઠ નિર્વેદ મેહુલભાઈ
જૈન સત્યવિજયજી હરણ
સંઘવી વીર દિપકભાઈ
મોરખીયા જ્યોતીબેન શ્રેણીકભાઈ
મોરખીયા પ્રભાબેન કીર્તીલાલ
વોહેરા પ્રિયા રમેશભાઈ
વોરા માહી પ્રકાશભાઈ
દોશી કોકીલાબેન મહેન્દ્રભાઈ
સુરાના સુશીલાબેન ભેરાલાલ
ગીરીયા કુસુમબેન રાજેન્દ્રભાઈ
કોરડીયા આંગીબેન અશ્વિનભાઈ
દોષી સવિતાબેન શાંતિલાલ
બલ્લુ રોશનીબેન હીરેનકુમાર
ધરૂ પીનાબેન કીરીટકુમાર
દેસાઈ આંગીબેન નરેશકુમાર
દેસાઈ આંગીબેન નરેશકુમાર
શેઠ મોક્ષાલીબેન અશોકભાઈ
વોરા રીટાબેન મનિષભાઈ
દોશી સૂર્યાંત અરવિંદભાઈ
શેઠ યશ્વી વિક્રમભાઈ
ગાંધી રમાબેન પિન્ટુભાઈ
શાહ આંગીબેન નવિનભાઈ
દોશી શારદાબેન માધવલાલ
ભણશાલી રાજ કલ્પેશભાઈ
પરીખ પુષ્પાબેન અરવિંદભાઈ
વોરા મિલનભાઈ મુકેશભાઈ
શેઠ અક્ષત સમીરભાઈ
વોરા શાંતાબેન હીરાલાલ
વોરા પ્રવિણચંદ્ર ઉગરચંદ
દોશી કાંતાબેન રમણલાલ
દોશી મથુબેન સેવંતીલાલ
વીરવાડીયા ચંપાબેન વેળશીભાઈ
વીરવાડીયા મૈત્ર નવિનભાઈ
કોરડીયા રાજવી નવિનભાઈ
દોશી દર્શન મહેન્દ્રભાઈ
સંઘવી પ્રેમીલાબેન વાડીલાલ
ધરૂ રીન્કલબેન મહાસુખલાલ
દોશી અશોકકુમાર જ્યંતિલાલ
જૈન મીઠાલાલજી પુનમચંદજી
વોહેરા ચૈતાલીબેન મૈલિકભાઈ
વોરા નેન્સીબેન કીરીટભાઈ
ધરૂ રમીલાબેન રમેશકુમાર
મોરખીયા આશ્વીબેન કુમારભાઈ
મોરખીયા નિર્મળાબેન મનુભાઈ
વોરા કંચનબેન કનકકુમાર સુરત
વોરા સુશીલાબેન પ્રબોધકુમાર સુરત
બલ્લુ ચંપકલાલ બબલદાસભાઈ અમદાવાદ
વોહેરા ઈન્દુબેન રોહિતભાઈ સુરત
વોરા મીનાબેન વિનોદભાઈ સુરત
વોહેરા સુશીલાબેન બાબુલાલ ડીસા
વોહેરા ગુણવંતીબેન રમેશકુમાર સુરત
દોશી જ્યંતિલાલ કકલદાસ મુંબઈ
શ્રીમતિ ઈન્દુબાળા મુકેશકુમાર રતલામ
શ્રીમતિ આશાબેન બાબુલાલજી રતલામ
ચોરડીયા શાંતાબેન સરદારમલજી રતલામ
ચંદ્રકાંતાબેન ફકીરચંદજી જાવરા
સંકલેચા પુષ્પાદેવી નવિનચંદ્ર રતલામ
કોઠારી રાજકુમારીબેન બ્રહ્મલાલજી રતલામ
મહેતા પદમાબેન નરેન્દ્રભાઈ ઈન્દોર
સુરાણા કાંતાબેન બાબુલાલજી રતલામ
ચોરડીયા સાધનાબેન પુખરાજી રતલામ
ખેમેશરા પુષ્પાબેન સંતોષકુમાર જાવરા
મોદી સુશીલાબેન જ્ઞાનમલજી રતલામ
વોરા વર્ષાબેન સેવંતીલાલ અમદાવાદ
મોરખીયા વર્ષાબેન મુક્તિલાલ અમદાવાદ
મોરખીયા હંસાબેન ભીખાભાઈ અમદાવાદ
અદાણી ગુણીબેન બાબુલાલ મુંબઈ
ભણશાલી રીન્કુબેન રતિલાલ લાખણી

વોરા લલીતાબેન હસમુખલાલ	અમદાવાદ
તાંતેડ ઝમકલાલ ચાંદમલજી	ધાર
શેઠ રસીલાબેન બાબુલાલ	અમદાવાદ
વોરા શારદાબેન વાઘજીભાઈ	અમદાવાદ
દોશી બાબુલાલ ટીલચંદભાઈ	થરાદ
સંઘવી ગુણવંતીબેન ચુનીલાલ	અમદાવાદ
સંઘવી રસીલાબેન રસિકલાલ	ડીસા
શેઠ પ્રિન્સી રાજેશભાઈ	અમદાવાદ
મોરખીયા શર્મિષ્ઠાબેન દિનેશભાઈ	અમદાવાદ
સંઘવી ગુણીબેન રસિકલાલ	અમદાવાદ
અદાણી મંજુબેન અમૃતલાલ	થરાદ
સંઘવી પુષ્પાબેન રમેશભાઈ	
વોરા સુશીલાબેન હીરાલાલ	અમદાવાદ
શેઠ શાન્વી અલ્પેશભાઈ	અમદાવાદ
શેઠ અલકાબેન રાજેશભાઈ	અમદાવાદ
બલ્લુ પુજાબેન નરેન્દ્રભાઈ	અમદાવાદ
દોશી આશાબેન મુકેશભાઈ	મુંબઈ
દોશી રસિકલાલ મફતલાલ	મુંબઈ
દોશી વિમળાબેન જ્યંતિલાલ	મુંબઈ
સંઘવી ચંદ્રકાંતભાઈ જ્યંતિલાલ	અમદાવાદ
વેદલીયા ગુણીબેન પ્રવિણચંદ્ર	અમદાવાદ
શાહ અશોકભાઈ બીખાભાઈ	અમદાવાદ
મોરખીયા મોઘીબેન અશોકભાઈ	અમદાવાદ
મોરખીયા વર્ષાબેન રજનીભાઈ	અમદાવાદ
ધરૂ દિનેશચંદ્ર ગગલદાસ	ડીસા
પરીખ કંચનબેન રસિકલાલ	મુંબઈ
પરીખ રમીલાબેન કિર્તીલાલ	મુંબઈ
ધરૂ ખુશીબેન હીતેશભાઈ	સુરત
વોહેરા પ્રિન્સીબેન ભરતભાઈ	સુરત
મોદી શીલ્પાબેન દિનેશભાઈ	થરાદ
વોરા કંચનબેન નવિનભાઈ	બરોડા
શાહ નેન્સીબેન કુમારપાલભાઈ	ડીસા
મોરખીયા રૂપલબેન દિપકભાઈ	ડીસા
સંઘવી રમીલાબેન કીર્તિલાલ	સુરત
શેઠ વાઘજીભાઈ ગગલદાસ	અમદાવાદ
વોહેરા રસીલાબેન મહાસુખલાલ	મુંબઈ
ધરૂ સુશીલાબેન નરેશભાઈ	થરાદ
સંઘવી સમરતમલજી ગણેશમલજી	મુંબઈ
વોરા પુજાબેન હીંમતભાઈ	અમદાવાદ
સંઘવી ચંદ્રકાંતાબેન ભુપેન્દ્રકુમાર	ઈન્દોર
વારીયા રક્ષાબેન ભીખાલાલ	સુરત
દોશી પુજાબેન મહેન્દ્રભાઈ	ડીસા
શાહ સંગીતાબેન જીગરભાઈ	ડીસા
દોશી રીચાબેન ભરતકુમાર	ડીસા
જૈન શોભનાબેન બસંતીલાલ	રાજગઢ
ખજાનચી સંગીતાબેન અશોકભાઈ	ઈન્દોર
મોરખીયા અલકાબેન પ્રકાશકુમાર	સુરત
વોરા મથુબેન ઈશ્વરલાલ	દુધવા
મોરખીયા ગુણીબેન રમેશભાઈ	લાખણી
સંઘવી રમીલાબેન રમેશભાઈ	અમદાવાદ
મોરખીયા ગુણીબેન જ્યંતિલાલ	સુરત
અદાણી ધારા કમલેશભાઈ	અમદાવાદ
ધરૂ રમીલાબેન રમેશભાઈ	અમદાવાદ
વોહેરા વિમળાબેન નરેશભાઈ	મુંબઈ
દોશી રસીલાબેન અમરતલાલ	થરાદ
વીરવાડીયા રક્ષાબેન નવીનભાઈ	ડીસા
ધરૂ ફોરમબેન મહેશભાઈ	અમદાવાદ
વોહેરા પ્રિન્સીબેન વિનોદભાઈ	અમદાવાદ
મોરખીયા જીવીબેન ભુદરમલ	થરાદ
દોશી શીલ્વીબેન સન્નીભાઈ	ડીસા
વોહેરા કોકીલાબેન વિનોદભાઈ	આનક
વોરા પુષ્પાબેન અશોકભાઈ	મુંબઈ
ધરૂ રસીલાબેન હીંમતલાલ	સુરત
વોહેરા રસિકભાઈ હાલચંદભાઈ	અમદાવાદ
દેસાઈ નીમાબેન રમેશભાઈ	અમદાવાદ
સંઘવી રમીલાબેન મહેન્દ્રભાઈ	અમદાવાદ
સંઘવી મહેન્દ્રભાઈ નરપતલાલ	અમદાવાદ
જૈન જ્યંતિલાલ ઈન્દ્રમલજી	ઈન્દોર
જૈન કોમલ પુખરારજી	થાંદલા
શેઠ શર્મિષ્ઠાબેન જીતુભાઈ	અમદાવાદ
વેદલીયા જ્યોત્સનાબેન હીરાલાલ	ડીસા
વોરા કૈલાસબેન વિનોદચંદ્ર	અમદાવાદ
દોશી રસીલાબેન હીરાલાલ	સુરત
વોહેરા ચંપાબેન બાબુલાલ	અમદાવાદ

મોરખીયા પ્રભાબેન પ્રવિણચંદ્ર	અમદાવાદ
ઓસ્વાલ આશાબેન શ્રીપાળજી	જાવરા
ચાપડોડ પ્રેમીલાબેન પારસમલજી	જાવરા
મોદી નેમાબેન ભવરલાલજી	જાવરા
શેઠ જ્યંતિલાલ મફતલાલ	ઉંઝા
અદાણી સુમિત્રાબેન શાંતિલાલ	પાલનપુર
શાહ મંજુલાબેન વર્દીચંદ	મુંબઈ
દોશી કાજલબેન હસમુખભાઈ	ડીસા
સંઘવી ખંબાબેન સમરતમલ	મુંબઈ
શાહ ટીપુબેન હુકમચંદજી	મુંબઈ
દોશી કાજલબેન હસમુખભાઈ	અમદાવાદ
બલ્લુ પુજાબેન મુક્તિભાઈ	અમદાવાદ
શાહ કમળાબેન પ્રવિણભાઈ	સુરત
દોશી સોનલબેન અશોકભાઈ	ડીસા
વોહેરા કંચનબેન મહાસુખભાઈ	સુરત
શેઠ કંચનબેન ચંદુલાલ	સુરત
સંઘવી કાંતાબેન વાઘજીભાઈ	અમદાવાદ
વોહેરા મોઘીબેન કીર્તીલાલ	
સંઘવી રસીલાબેન હીંમતલાલ	અમદાવાદ
દોશી આશાબેન સંજયકુમાર	કાલોલ
શાહ કંચનબેન વાડીલાલ	અમદાવાદ
દોશી ગુણીબેન પ્રવિણભાઈ	મુંબઈ
વોહેરા મંજુબેન જયરાજભાઈ	મુંબઈ
મોરખીયા કંચનબેન રમેશચંદ્ર	મુંબઈ
દોશી બચીબેન રમેશકુમાર	મુંબઈ
જૈન તેજુબેન માંગચનજી	કુક્ષી
જૈન ચંદનબેન રાજેન્દ્રજી	કુક્ષી
જૈન સરબતજી મહેશજી	કુક્ષી
નાઈ શારદાબેન જ્યંતિલાલ	ડીસા
શાહ રમીલાબેન રજનીભાઈ	મુંબઈ
પગારીયા પ્રેમલતાબેન અમૃતભાઈ	બડનગર
કુમઠ કિરણબેન શાંતીલાલજી	બડનગર
વોહેરા મંજુબેન નવીનભાઈ	અમદાવાદ
બલ્લુ રસીલાબેન નવીનભાઈ	મુંબઈ
વોહેરા હીરલબેન વિરલભાઈ	અમદાવાદ
સંઘવી રમણલાલ ભીખાલાલ	અમદાવાદ
વેદલીયા સુરેશભાઈ ખેમચંદભાઈ	અમદાવાદ
અદાણી ગુણીબેન વાઘજીભાઈ	અમદાવાદ
સંઘવી ડીમ્પલભાઈ મહાસુખભાઈ	અમદાવાદ
સંઘવી પ્રિતીબેન ડીમ્પલભાઈ	અમદાવાદ
વોહેરા અરૂણાબેન જ્યંતિલાલ	થરાદ
શાહ પુષ્પાબેન વિનોદચંદ્ર	અમદાવાદ
દેસાઈ ગુણીબેન મહેન્દ્રભાઈ	અમદાવાદ
શેઠ તત્વાભાઈ વિજયકુમાર	અમદાવાદ
શેઠ તીર્થ નિતીનકુમાર	અમદાવાદ
સંઘવી ગુણીબેન પ્રવિણભાઈ	અમદાવાદ
સંઘવી પ્રણિવણભાઈ જ્યંતિલાલ	અમદાવાદ
દોશી રસિકલાલ છોટાલાલ	અમદાવાદ
સંઘવી પ્રાચીબેન વસંતભાઈ	અમદાવાદ
સંઘવી વૈશાલીબેન જીગ્નેશભાઈ	અમદાવાદ
અદાણી શાંતાબેન હીરાલાલ	અમદાવાદ

રાજેન્દ્ર જયંતસેન ધામ (ધાર રોડ) ઈન્દોરમાં સ્વ. તપસ્વીરત્ના પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી શશીકલાશ્રીજી મ.સા. ની યાદમાં સ્મૃતિ સ્મારક નિર્માંક પૂર્ણતાના આરે...

પૂજ્ય સાધ્વીજી શશીકલાશ્રીજીના સ્મારક મંદિરે દર્શન-વંદન કરતા
શ્રી ધીરૂભાઈ ધરૂ તથા શ્રી કીર્તીલાલ બાબુલાલ વોરા

कुमकुम सने पगलिये

पेपराल में
पू. गुरुदेव श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरिजी की निश्रा में सम्पन्न पर्युषण पर्व का विवरण

(अशोक श्रीश्रीमाल, इन्दौर)

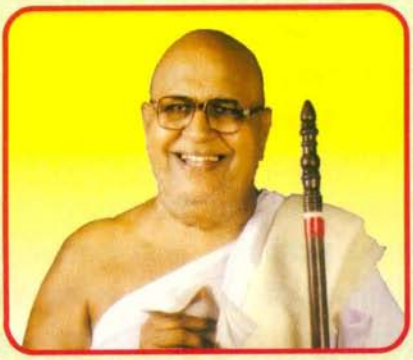

पेपराल। पेपराल की पावन धरा पर पूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के पावन सान्निध्य में पर्वाधिराज पर्युषण पर्व की आराधना भक्तिभाव पूर्वक हुई।

पर्यूषण पर्व का प्रथम दिवसः-

प्रातः लगभग 450 पोषधार्थी पूज्य गुरुदेव का वंदन कर पौषध-सामायिक-पच्चक्खान उचरने के लिए आए। पूज्य गुरुदेव ने कहा-प्रबल पुण्योदय और भाग्य के संयोग से हमें सामूहिक पौषध करने का अवसर मिला। निश्चित रूप से हम पूर्व भवों में साथ-साथ रहे होंगे, साथ में धर्मक्रिया की होगी उसी के फलस्वरूप आज हम सामूहिक क्रिया कर रहे हैं। पौषण, आत्मा का पौषध है। पौषध करना श्रावक का प्रथम दायित्व है। विशेषकर पर्व के दिनों में अति आवश्यक है। जयणा हमारा धर्म है-और पौषध के द्वारा छः काय जीवों की विराधना में अल्पता लाते हैं। पौषध में हमें सांसारिक विचारों का परित्याग करना चाहिए। न तो घर में रहना और न ही मन को घर में रखना। पौषध में व्यापार, आहार, शरीर सत्कार का त्याग और ब्रह्मचर्य नियम का पालन करना है। हमारी प्रत्येक क्रिया के साथ भावों की उत्तमता होनी चाहिए। पौषध में विनय, विनम्रता, मौन के साथ निर्दोष क्रिया का पालन करना चाहिये। सभी जीवों से मैत्रीय भाव भय का निवारण करती है। पौषध में प्रमाद से बचकर ज्ञान, ध्यान और स्वाध्याय में मन लगाना चाहिए।

पर्व आराधना पर संबोधित करते हुए पूज्य गुरुदेव ने कहा कि पर्युषण के दौरान श्रावक को जीवनाचार,

कर्त्तव्य आदि के संबंध में विचार करना चाहिये। अभयदान से जीव भयमुक्त होकर अपना जीवन जीता है। हमें जिनदर्शन, जिनाज्ञा पालन, रात्रि भोजन त्याग, सामायिक, पौषध, प्रभु मिलन, प्रवचन, श्रवण, तप–त्याग के माध्यम से इस अलौकिक पर्व को अति उत्साहपूर्वक मनाना चाहिये। हम भाग्यशाली हैं कि हमें मानव जीवन और धर्म करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। धर्म की प्रवृत्ति से संतोष की प्राप्ति होती है। पांच प्रकार के दान में अभयदान प्रमुख है। आश्रव का त्याग और संवर का आगमन –वृद्धि संसार को घटाती है। संवर की साधना सच्ची आराधना है। संवर साधक सिद्ध की ओर जाता है।

दोपहर में पूज्य श्री जिनागमरत्न विजयजी म.सा. ने अपनी प्रभावशाली शैली में प्रवचन करते हुए कहा –'हमें गर्व है कि हमें महावीर स्वामी का शासन मिला। मानव की प्रवृत्ति क्रोध, मान, माया और लोभ की नहीं होनी चाहिए। लक्ष्मणा साध्वी की माया ने उसे अनंतानंत भव करवाये। देवता स्वर्ग में सुखी नहीं हैं। वहां सामायिक पूजन का सौभाग्य उन्हें नहीं मिलता है। इसके लिए वे भी मानव जीवन के लिए तरसते हैं। संसार का अल्प सुख अत्यंत भयंकर दुःख का कारण होता है। एक रात्रि भोजन– दस हजार वर्ष की नरक आयु बढ़ाता है। हमारा महंगा बंगला मजबूरी में सस्ते में बिक जाए अथवा अधिक भाव के शेयर कम भाव में बिक जाएं तो कितना दुःख होता है, इस बात पर विचार कर देखें कि हम यह अमूल्य मानव जीवन कितने सस्ते में व्यय कर रहे हैं। मानव जीवन का प्रथम लक्ष्य संयम और अंतिम लक्ष्य मोक्ष ही होना चाहिये। पद, प्रतिष्ठा और पैसा हमारे लिए तुच्छ है। शरीर में से आत्मा निकल जाने के बाद इसकी कीमत मात्र श्मशान की राख के बराबर होती है, जो नदी में प्रवाहित कर दी जाती है। परमात्मा की प्रतिमा राग द्वेष रहित होती है। भगवान महावीर ने दीक्षा के पहले दिन से और केवल ज्ञान प्राप्ति के बाद तक अनेक उपसर्ग सहन किए पर उन्होंने यह सब यह दिखाने के लिए किया कि कर्म को भुगतना ही होगा। हमारे सामने पिता, गुरु अथवा मंदिर में प्रतिमा दिखे तो हम कोई भी पाप अथवा गलत कार्य करने से बचते हैं। फिर परोक्ष में हमें केवल ज्ञानी और वर्तमान में महाविदेह में विहाररत प्रभु सीमंधर स्वामी के देखने का हमें आभास क्यों नहीं होता? हमारे प्रत्येक कार्य पर उनकी निगाहें हैं इसलिए हमें हर पाप–प्रवृत्ति से बचना चाहिये।

पर्युषण पर्व का द्वितीय दिवसः–

परम पूज्य गुरुदेव ने कहा कि इन आठ दिवसों में आठ कर्मों को समझना और उन्हें पतला करना है। पर्युषण क्यों आते हैं जो इसे समझ लेता है वह अपने

को संभाल लेता है। श्रोता वही है जो श्रवण के पश्चात् सुनी हुई अच्छी बातों पर अमल करे, चिंतन करे। अन्यथा प्रवचन या प्रभु की वाणी सुनने के पश्चात् उसे अपनी बुद्धि से, तर्क से, विश्लेषण में कांट-छांट करे, वह श्रोता नहीं बल्कि सरोता है। प्रभु की वाणी पर अटूट विश्वास ही आत्मा का उद्धारक है। रोहणिया चोर की कहानी में उन्होंने बताया कि चोर ने न चाहते हुए भी प्रभु की वाणी सुनी जिससे उसका जीवन परिवर्तित हो गया। महावीर की वाणी से कठिन काम सरल हो जाता है। हमारी आत्मा की उन्नति में बाधक आहार संज्ञा को तप से, परिग्रह संज्ञा को दान से, मैथुन संज्ञा को शील तथा भय संज्ञा को भावना से दूर किया जा सकता है। जीवन में आश्रव-कषाय से बचो। क्रोध, मान, माया, लोभ अत्यंत घातक हैं। क्रोध को क्षमा से, मान को विनय से, माया को विवेक और सरलता से, लोभ को संतोष से विजय प्राप्त करना है।' दोपहर में प्रवचन करते हुए बालमुनि पूज्य जिनागम रत्न विजयजी ने कहा 'प्रभु की जबर्दस्त कृपा एवं भवों-भव के संचित पुण्यों से हमें यह मानव जीवन मिला है। जिसे हम सहज समझ रहे हैं, वह अनमोल है। इस बात का चिंतन नहीं कर पा रहे हैं। हमने जीवन में हजारों प्रवचन सुने होंगे, यह सौभाग्य का विषय है किन्तु इतना सुनने के बाद भी परिणति नहीं हो पाई तो यह हमारा दुर्भाग्य है। त्रियंच गति के जीव में 'चण्डकौशिक' ने सिर्फ एक बार 'बुज्झ-बुज्झ' सुना, रोहणिया चोर ने श्रद्धा नहीं होने पर भी मात्र एक बार भगवान के शब्द उसके कान में पड़ने पर, अर्जुन माली, दृढ़ प्रहारी जैसे खूनी भी मात्र पद शब्दों से मुनि बन गए तो फिर हम तो अपने को सच्चा श्रावक समझते हैं, हमारा परिवर्तन क्यों नहीं हो रहा है? यह बात विचारणीय है। पानी का स्वभाव शीतलता का है, कितना भी गर्म करो, कुछ देर बाद पुनः अपने गुण को, शीतलता को ग्रहण कर लेता है। ऐसे ही मानव का स्वभाव भी शीतलता का है। कदाचित् कारणों से यदि क्रोध आ भी जाए तो पुनः पानी की तरह शीतल हो जाना चाहिये। अंगारे पकड़े रखने की प्रवृत्ति से परिणति राख की ही होती है। जीवन में आई हर दुर्घटना संभलने का अवसर देती है। जंबुकुमार दीक्षा के प्रबल भाव लेकर माता-पिता की आज्ञा लेने गए। ठीक उसी समय उनके सामने पत्थर का गिरना हुआ। सोच में तत्काल परिवर्तन आया और तत्काल दीक्षा के भावों को जिसने प्रबल किया। हमारे कितने ही एक्सीडेंट होते हैं- हमने क्या सबक सीखा? आपने कहा कि अहंकार अथवा अभिमान केवलज्ञान में बाधक है। हमारी धर्म, तप, साधना, आराधना, दान की प्रवृत्तियाँ सदैव आत्म कल्याण की भावना से होनी चाहिए, न कि

अपेक्षा भाव से। अपेक्षित भावना उपेक्षा का हेतु बनती है। आत्मा को जागृत करने हेतु नरक परमाधामी के दृश्य अथवा भय सदैव रहना चाहिए। हमारे देखने, समझने, क्रियान्वयन में दृष्टि हमेशा सकारात्मक होना चाहिये। मानव जीवन की सार्थकता इसी में समाहित है। पर्युषण पर्व के दौरान हजारों की संख्या में आराधक विभिन्न प्रकार की आराधनाओं में जुटे। प्रातः अष्टान्हिका पर प्रतिदिन प्रवचन परम पूज्य गुरुदेव तथा वरिष्ठ मुनिभगवंत श्री वीररत्न विजयजी, पूज्य सिद्धरत्न विजयजी, पूज्य श्री विद्वद्रत्व विजयजी के मुखारबिंद से श्रवण कराए जाते थे।

पर्युषण पर्व का तृतीय दिवस :-

आराधक अपनी नियमित धार्मिक क्रियाओं में संलग्न है। पूज्य वीररत्न विजयजी म.सा. ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा-'ईर्ष्या महा भयंकर रोग है। यह बीमारी जिसे लग जाती है, उसे छोड़ती नहीं। ईर्ष्या की आग से बचना चाहिये।' आज पूज्य साध्वी श्री अमृतरसाश्रीजी म.सा. की पांचवी अट्ठाई का पारणा था। वे परमपूज्य गुरुदेव की पावन प्रेरणा और आशीर्वाद से लगातार आठ अठाई के संकल्प के साथ उनकी तपाराधना चल रही है। आज कल्पसूत्र व्होराना में चढ़ावा का लाभ श्री भुदरमल रायचन्द्रभाई उंदरवा वालों ने लिया। वासक्षेप से पूजन करने का लाभ झमसा मोरखिया बागजीभाई लवाणा, अमोलक भाई नेमसी भाई थराद, वेदलिया हालचंद भाई डीसा, कांतिलालजी सोहनलालजी वाणीगोता डोसी, जगदीशभाई वागजीभाई निम्बावाल तथा ज्ञान की आरती का लाभ श्री बाबुलाल दलसाचन्द्र भाई कुंभारवाला परिवार ने लिया। पूज्य अर्पण प्रियाश्रीजी म.सा. की मास क्षमण तपस्या एवं अन्य श्रमण-श्रमणियों की तपस्या निमित्त चौवीसी भक्ति का आयोजन हुआ। दोपहर में पूज्य जिनागमरत्न विजयजी म.सा. ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा कि कर्म सत्ता को परास्त करने में हमें जबर्दस्त प्रयास और पुरुषार्थ करना होगा. जो कार्य कल होना है उसे आज और अभी करना होगा। उन्होंने कहा कि धर्म आत्मा में छिपा है। धर्म का सार प्राप्त होने के बाद भी प्रमाद करने वाला मूर्ख है। मृत्यु अमीर और गरीब दोनों की होती है। दोनों को श्मशान में एक ही स्थल पर जलाया जाता है, दोनों की अंतिम परिणति राख है। इतना सब कुछ समझने के बाद भी संसार में उलझना निरा मूर्खता है। उन्होंने कहा कि एक छोटी सी निंदा भयंकर वेदना का कारण बन जाती है। साक्षात् परमात्मा तो इस पंचम आरे में नहीं मिले पर प्रतिमा रूपी परमात्मा तथा गुरु भगवंतों का सान्निध्य हमें हमारे लक्ष्य की ओर अग्रेसित करा सकते हैं। परम

पूज्य के दर्शनार्थ एवं पर्युषण में सम्मिलित होने के लिए समीपस्थ क्षेत्रों के श्रीसंघों, तपस्वियों का पच्चक्खान के लिए आने का क्रम लगातार जारी रहा। प्रतिदिन सायंकाल प्रभु मधुकर महावीर स्वामीजी की अति आकर्षक अंग रचना और संगीतमय प्रभु भक्ति निरंतर चली ।

पर्युषण पर्व का चतुर्थ दिवसः-

पर्युषण पर्व के चतुर्थ दिवस पूज्य गुरुदेवश्री को कल्पसूत्र व्होराया गया। ज्ञान की आरती के पश्चात् कल्पसूत्र का वाचन करते हुए परमपूज्य गुरुदेव ने कहा - कल्पसूत्र पुण्यवान जीव को ही सुनने को मिलता है। एकाग्रचित्त हो, पावन भूमि पर श्रद्धापूर्वक इसका श्रवण करने वाला जीव आठवें भव में मोक्ष जा सकता है। कल्पसूत्र, सूत्रों में प्रधान सूत्र है।

इस अवसर पर कल्पसूत्र का वाचन पूज्य मुनिराज श्री सिद्धरत्न विजयजी, पूज्य विद्वरत्न विजयजी एवं पूज्य जिनागम विजयजी ने क्रमशः किया। दोपहर के व्याख्यान में पूज्य जिनागम विजयजी म.सा. ने कहा कि चारित्र मोहनीय कर्मों के क्षयोपशम हों तो संसार अथवा संसार के भाव छूटें। एक समय अथवा पल का प्रमाद भी अनंत दुर्गतियों का हेतु है। हमारे चंचल मन की प्रवृत्ति धर्मस्थान की बजाय मनोरंजन के स्थलों की ओर अधिक आकृष्ट करती है। संवत्सरी का चार घंटे का प्रतिक्रमण जो वर्ष में एक बार होता है, अनंतानंत भवों से छुटकारा दिलाता है, समस्त जीवों से प्रायश्चित होता है, किन्तु ऐसा करना हमें भारी लगता है। इसके विपरीत सिनेमाघर या फुहड़ सीरियल में घंटों समय बिताने में हमें आनंद की अनुभूति होती है। मन की यह चंचल प्रवृत्ति और उसका अंधानुकरण हमारे दुखों का कारण है जो हमें नरक की ओर ले जाने वाली है। हमने मनुष्य भव पाया, उत्तम देव, गुरु धर्म मिला, तप-आराधना-साधना से उच्चता पाई फिर हमारी स्थिति ठीक वैसी हो जाती है जैसे बहुत ऊंचाई पर उड़ती चील की होती है जो जमीन पर मरे हुए चूहे या सांप को देखकर तुरंत अधोगति की ओर लपक जाती है। हम भी संसार के चंद सुखों के लिए अपना अमूल्य जीवन दांव पर लगा रहे हैं। हम सांसारिक प्रवृत्तियों में तेजी से बढ़ते हैं। इससे बचने के लिए इस बात का चिंतन करें कि मृत्यु के बाद क्या होगा? धनपति करोड़ों की सम्पत्ति अपने पीछे छोड़ जाते हैं। सम्पत्ति परिवार में भाइयों में विवाद करवाती है। क्या धनपतियों को मृत्यु के समय शांति रहती है? क्या वह समाधि मरण है? एक साधु जिसके पास कुछ नहीं होता जब कालधर्म को प्राप्त करता है तो असीम शांति और समाधिमरण प्राप्त करता है। मिथ्यात्वशल्य सातवीं नरक में भेज देता है। श्रीकृष्ण महाराजा अपनी पुत्रियों

से कहते–दासी बनना हो तो शादी करो और रानी बनना हो तो प्रभु श्री नेमीनाथजी के पास प्रवज्जा ग्रहण करो। हमें संयम जीवन की अनुमोदना अवश्य करते रहना चाहिए यह चारित्र मोहनीयकर्म का अनावरण करेगा। श्रीकृष्ण महाराजा ने अपने राज्य में घोषणा करवा दी थी कि – जो व्यक्ति प्रभु के पास दीक्षा लेना चाहता है, वह खुशी से ले सकता है। उनके परिवार की व्यवस्था राजकोष से की जाएगी। संयम तथा साधुओं की जबरदस्त वैय्यावच्च और भावपूर्ण वंदना से तीर्थंकर गौत्र का उपार्जन श्रीकृष्ण महाराजा ने किया। सामायिक, प्रतिक्रमण, संयम की पाठशाला है।

कार्यक्रम के आरंभ में उल्लासपूर्ण वातावरण में नाचते–गाते, ढोल–बाजों के मध्य एक शोभायात्रा के रूप में कल्पसूत्र को लाभार्थी परिवार द्वारा व्याख्यान मंडप में लाया गया और गुरुदेव श्री के कर कमलों में अर्पित किया गया।

पर्युषण पर्व का पंचम दिवस :–

आज भगवान महावीर स्वामी का जन्मोत्सव मनाने एवं परमपूज्य गुरुदेव श्री की पावन सान्निध्यता पाने के लिए डीसा, अहमदाबाद, सूरत, लाखणी, जेतणा, थराद, वासणा, अभंण उंदरण, सांचोर, मुंबई, मालवा, लवाणा, नडियाद, आणंद आदि अनेक स्थानों से श्रद्धालु–गुरुभक्तों का आगमन आरंभ हो गया। पूरा मंडप खचाखच भरा था। माता त्रिशला को आए चौदह स्वप्न का भक्तों को दर्शन कराना, सोने की माला और फिर फूलों की माला अर्पण करना। उत्साह से बढ़–चढ़कर सपनों की बोली लेकर सभी दर्शकों को दर्शन कराया गया। भगवान का जन्म वाचन गुरुदेव ने वांचा– जैसे ही गुरुदेव के मुख से 'माता त्रिशला ने बालक को जन्म दिया' शब्द निकले जय–जयकार के नारे, गोले बधारना, घंटी, बाजा, नांद, शहनाई के स्वर गूंजने लगे। सभी खुशी से झूमने लगे। एक–दूसरे को बधाई देने लगे। सभी को छापे लगाये गए। पालना झुलाया।

पर्युषण पर्व का षष्ठम् दिवसः–

कल्पसूत्र का वाचन मुनिभगवंत श्री सिद्धरत्न विजयजी म.सा., श्री विद्वत्वरत्न विजयजी तथा बालमुनि श्री जिनागमरत्न विजयजी म.सा. के मुखारविंद से किया गया। भगवान महावीर स्वामी की बाल्यावस्था, दीक्षा, उपसर्ग, केवलज्ञान आदि प्रसंगों का सुन्दर चित्रण हुआ। विशेषकर उपसर्ग में प्रभु का समतापूर्वक इन्हें सहन करना के मार्मिक दृश्यों को अध्यात्म व कर्म सिद्धान्त के साथ जोड़कर प्रस्तुत किया गया जिसने श्रोताओं को झकझोर दिया।

दोपहर के प्रवचन में मुनिश्री

जिनागमरत्न विजयजी म.सा. ने कहा कि जिससे आत्मा को सुख मिलता है वही धर्म है। हमारे जीवन में तीन बड़े गुंडे लगातार हमारा पीछा कर रहे हैं–1. रोग, 2.बुढ़ापा, 3. मृत्यु। हमारा जन्म आराधना के लिए हुआ किन्तु हम विराधना का मार्ग अपना लेते हैं। मनुष्य ज्ञान की गहराई में नहीं उतरता ऊपरी तर्क–कुतर्क करता है। विराधना के परिणाम का या तो उसे भय नहीं है अथवा उससे आँखें मूंद रहा है। सम्पूर्ण शरीर रोम–रोम से भरा पड़ा है। न जाने किस समय वेदनीय कर्म का उदय हो जाए भरोसा नहीं। वेदनीय कर्म का क्षय करने का सबसे बड़ा उपाय तप है। गौतम बुद्ध–राजकुमार के रूप में नगर भ्रमण पर निकले। मार्ग में रोगी, वृद्ध और मृत्यु के तीन दृश्य देखे। सारथी से पूछने पर ज्ञात हुआ, कि क्या राजा और क्या रंक। ये अवस्थाएं तो प्रत्येक जीव के लिए पूर्व निधारित हैं। गौतम बुद्ध सोच में पड़ गए– क्या मेरी अवस्था भी ऐसी होगी? चिंतन की धारा बही और अंततः चल पड़े ज्ञान की खोज में, सत्य की खोज में। मनुष्य भव हमें बार–बार नहीं मिलता। संयम हमारा प्रथम लक्ष्य हो।

पर्युषण पर्व सप्तम दिवस :–

पेपराल में तपस्या का मेला लगा था। श्रमण–श्रमणी भगवंत बड़ी तपस्याओं में रत हैं। समीपस्थ क्षेत्रों के तपस्वियों ने भी गुरुदेवश्री के पास पहुंचकर व्रत–पच्चक्खान लिए। गुरुदेवश्री ने मांगलिक सुनाकर तथा वासक्षेप कर तपस्वियों की सुख–शाता पूछते हुए आशीर्वाद दिया। कल्पसूत्र का वाचन करते हुए पूज्य मुनि भगवंतों ने प्रभु आदिनाथ एवं प्रभु नेमिनाथ स्वामी के चारित्र का वाचन किया। कल्पसूत्र के अनेक छोटे–छोटे कथानकों के माध्यम से आत्मकल्याण का मार्ग बताया। प्रतिदिन दोपहर में जिन मंदिरजी में पंच कल्याणक पूजन तथा गुरुदेव का अष्टप्रकारी पूजन हुआ। दोपहर में पूज्य साधु–साध्वीजी भगवंतों की तपस्या निमित्त चोबीसी–सांझा–गीत तथा सायंकाल मधुकर संगीत ग्रुप द्वारा शानदार भक्ति का कार्यक्रम हुआ। अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक शाखा डीसा, थराद, लाखणी तथा म.प्र. परिषद् के प्रांतीय महामंत्री श्री मोहितजी तांतेड़, पारा परिषद् के साथी लगातार अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। अनुमोदनीय एवं अनुकरणीय सेवाओं के लिए ट्रस्ट ने धन्यवाद दिया। अगले दिवस संवत्सरी होने से विभिन्न स्थलों से श्रद्धालु भक्तों का आवागमन बढ़ गया है। म.प्र. त्रिस्तुतिक श्रीसंघ के प्रादेशिक अध्यक्ष श्री सुरेश जी तांतेड़ सहित म.प्र. व अन्य प्रांतों के भक्तों का आना शुरू हो गया । दोपहर में अपनी चिर परिचित प्रभावी शैली में मुनि श्री जिनागमरत्न विजयजी म.सा. ने कहा–मित्र से क्षमा मांगना उतनी बड़ी बात नहीं जितनी

बड़ी बात उस व्यक्ति से क्षमा मांगना जिसके प्रति द्वेष ग्रंथि हो। करोड़ों वर्ष तक साधना की, नीरस आहार लिया पर एक सूक्ष्म जीव से भी क्षमा नहीं मांगी तो हमारा तप निरर्थक हो जाएगा। इस ठसाठस भरे सकल विश्व में एक जीव के प्रति एक छोटी सी भी रही द्वेष की ग्रंथि मोक्ष मार्ग में बाधक बन सकती है जो प्रत्येक प्राणी का परम लक्ष्य होता है। मात्र और मात्र क्षमारूपी जल से उसे निर्मल किया जा सकता है। मात्र दो अक्षरों क्षमा में ही मोक्ष छिपा है। हम प्रतिक्षण प्रभु से प्रार्थना करते हैं– हे प्रभु मेरे मन मंदिर में आप विराजमान हों। प्रभु भी आपकी प्रार्थना स्वीकार करना चाहते हैं पर आपके हृदय में राग–द्वेष का कचरा भरा होता है। इस राग–द्वेष के कचरे को भी आप स्वेच्छा से रहने देना चाहते हो तो फिर प्रभु को विराजमान कहाँ और कैसे करेंगे? इस कचरे को भी क्षमा के जल से स्वच्छ कर दें। आज तक कोई भी आत्मा बिना क्षमा भाव के केवल ज्ञानी नहीं हुई। गजसुकुमाल मुनि सोमिल ब्राह्मण के अंगारों की पगड़ी को मोक्ष की पगड़ी मानते हुए सोमिल को हर पल क्षमा कर रहे थे। कुरगडु की भात की थाल में थूकने पर भी वे उसे घी की उपमा दे रहे थे। मृगावतीजी, चंदनबालाजी के उल्हाने को अपने जीवन का प्रायश्चित समझकर, मेतार्थ मुनि ने कोचपक्षी द्वारा आने के जवले खाते हुए देखने के बाद भी जीवदया का उत्कृष्ट उदाहरण दिया। दोषी को दोष रहित मानते हुए केवल ज्ञानी और मोक्ष गामी हुए हैं। ऐसे अनेक उदाहरण जैन इतिहास में वर्णित हैं।

संवत्सरी महापर्व :– सुबह से क्षमायाचना का दौर आरम्भ हो गया। बारसा सूत्र का वाचन साधु–साध्वी भगवंत ही करते हैं। बारसा सूत्र में सम्पूर्ण कल्पसूत्र का सार है। बारसा सूत्र के पाना दर्शन का लाभ मालवा के थांदला शहर के श्री समरथमलजी फुलपंगर ने लिया। पूज्य गुरुदेवश्री ने बारसा सूत्र का आरम्भ कर बालमुनि श्री प्रत्यक्षरत्न विजयजी जिन्हें 11 उपवास की तपस्या भी चल रही थी और जो मात्र 2 वर्ष की दीक्षा पर्याय में अन्य अध्ययन के साथ बारसा सूत्र की गाथाओं को भी कंठस्थ करते जा रहे थे, उन्हें वाचन हेतु प्रदान किया। बालमुनि ने बहुत ही मधुर एवं स्पष्ट शब्दों में बारसा सूत्र का अविरल वाचन किया। सिद्धी तप कर रहे मुनिराजश्री निपुणविजयजी म.सा. ने बीच–बीच में रोचक तथ्यों के माध्यम से सूत्र का भावार्थ समझाया। मुनिराजश्री चारित्ररत्न विजयजी म.सा., पू. जिनागमविजयजी म.सा. सहित सभी मुनि भगवंतों ने बाल मुनि को प्रोत्साहित किया। बारसा सूत्र श्रवण के पश्चात् पूज्य गुरुदेवश्री की पावन निश्रा में चैत्य परिपाटी आरंभ हुई जिसमें थांदला (म.प्र.) के श्री

समरथमलजी फुलपंगर संघवी–संघपति बने। अष्ट द्रव्य सामग्री के साथ विशाल चैत्य प्रवाडी में सभी तपस्वी साधु–साध्वी पौषधधारी व विशाल जनसमूह उपस्थित था। मंदिरजी में चैत्यवंदन –गुरु वंदन हुआ। दोपहर पश्चात् पूरे वर्ष का महत्त्वपूर्ण सार संवत्सरी प्रतिक्रमण आरंभ हुआ जिसमें हजारों की संख्या में श्रद्धालु उपाश्रय में उपस्थित रहे। पूज्य साध्वीजी की निश्रा में बहनों ने प्रतिक्रमण किया। इस प्रतिक्रमण में अतिचार अजित शांति स्तवन तथा अन्य महत्वपूर्ण सूत्र बहुत ही छोटे–छोटे बालक जिनकी उम्र 10 वर्ष से कम थी, उन्होंने बहुत ही शुद्धता व स्पष्टता के साथ बोले। छोटी उम्र की इन प्रतिभाओं को आशीर्वाद देते हुए पूज्य गुरुदेव अत्यंत भावुक हो उठे। उनकी आँखों से खुशी के आँसू झलक गए। पूज्य गुरुदेव ने कहा कि चन्द्रगुप्त का सपना 'धर्म की गाड़ी के पहिए को छोटे–छोटे बछड़े खींचेंगे' आज साकार होता दिखाई दे रहा है। अतिचार में अपने समस्त दोषों का प्रायश्चित कर सभी ने गुरुदेव श्री व संघ से क्षमायाचना की, पश्चात् सम्पूर्ण संघ ने गुरुदेव व मुनिमंडल से तथा परस्पर संघ व समाज से क्षमायाचना की। इस अवसर पर परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेश धरू, महामंत्री श्री अशोक श्रीश्रीमाल, परिषद् मार्गदर्शक श्री जे. के. संघवी ने सभी से क्षमायाचना की। प्रतिक्रमण के पूर्व और पश्चात् क्षमा का सिलसिला चलता रहा।

पंचमी – समस्त पौषधधारियों ने प्रातः आवश्यक धार्मिक क्रियाओं के पश्चात् पौषध की जयणा की। आज सभी तपस्वियों के पारणे का लाभ नडियाद निवासी श्री बाबुलालजी रमेशजी नडियाद परिवार ने लिया। सुबह से ही आसपास के संघ, परिषदें परम पूज्य गुरुदेव से खम्मत खामना कर दर्शन वंदन का लाभ ले रहे थे। अ. भा. त्रिस्तुतिक श्रीसंघ के अध्यक्ष वाघजी भाई ने सम्पूर्ण श्रीसंघ तथा परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेश धरू ने सम्पूर्ण परिषद् परिवार की ओर से क्षमायाचना की। इधर चौसठ प्रहरी पौषध में लगभग 400 से अधिक पौषध धारियों ने जिनमें श्री जे.के.संघवी, श्री मोहनजी ढालावत, श्री रमेश धरू, श्री अशोक श्रीश्रीमाल, श्री रमेशजी व्होरा बड़नगर, श्री रमेश धरू पेपराल, श्री विपुल जैन, श्री मफतलाल, श्री अशोक भूरमल आदि ने परस्पर क्षमायाचना कर आगे पुनः साथ–साथ पौषध करने के वादे के साथ विदाई ली। श्री बाघजी भाई, रमेशजी नडियाद तथा श्री जयंतसेन शासन प्रभावक ट्रस्ट के ट्रस्टी, डीसा–लाखणी परिषद् के प्रमुख सभी तपस्वियों को अपने हाथों से पारणा करवा रहे थे। ट्रस्ट की ओर से सभी को प्रभावना वितरित की गई।

पेपराल में नवकार आराधना -आँखों देखी

(अशोक श्रीश्रीमाल, इन्दौर)

पेपराल की पावन धरा गुरु जन्मभूमि, तीर्थभूमि हो, जिनके रोम-रोम में नवकार व्याप्त है जो पिछले 5-7 वर्षों से लगातार सामूहिक नवकार आराधना करवा रहे परम कृपालु गुरुदेव की पावन सान्निध्यता के साथ-साथ संख्या में लगभग शतक मुनि भगवंतों एवं साध्वीजी भगवंतों की उपस्थिति ने जिस तपोभूमि को और भी अधिक ऊर्जा से युक्त कर दिया हो भला किस का मन यहाँ नमस्कार महामंत्र की आराधना में संयुक्त होने का नहीं करेगा।

नियमित आराधकों के साथ नये आराधकों में भी पेपराल में आराधना से जुड़ने का अति उत्साह था। अति वर्षा से यद्यपि व्यवस्था प्रतिकूल होने की संभावनाएँ बनीं थीं पर ''जिसके पास नवकार हो उसका क्या बिगाड़ेगा संसार।''

आराधना आरंभ होने के एक दिन पूर्व तक सभी आराधकों ने पेपराल की स्पर्शना और नयनों से मधुकर महावीर की अत्यन्त लुभावनी प्रतिमाजी, प्रातः स्मरणीय गुरुदेव श्रीमद् विजयराजेन्द्र सूरिजी म.सा. के दर्शन-वंदन का अनुपम लाभ लेकर 'हृदय सम्राट गुरुदेव श्री' को उनकी जन्मस्थली पर निहारने और उनका आशीर्वाद प्राप्त करने का सुअवसर प्राप्त कर लिया था।

पेपराल जहाँ चातुर्मास प्रारंभ होते ही वर्षा ने उग्र रूप में तांडव नृत्य प्रस्तुत किया था। सारी व्यवस्थाएं तहस-नहस कर ऐसा लग रहा था वर्षा का यह क्रम आयोजकों, आराधकों के साथ अन्य सभी लोगों की आस्था-श्रद्धा और विश्वास की परीक्षा लेना चाहता है। इस घटना में नमस्कार महामंत्र और पूज्य गुरुदेव की साधना का प्रत्यक्ष प्रभाव परिलक्षित हुआ। गुरुदेवश्री के आशीर्वाद से श्रीसंघ, ट्रस्ट-समितियों, परिषद् परिवार, समस्त गुरुभक्तों ने मुनि-भगवंतों से मार्गदर्शन प्राप्त कर सम्पूर्ण व्यवस्था इतनी शीघ्रता से पुनः सम्पादित कर दी मानों कुछ हुआ ही नहीं था।

डीसा परिषद्, लाखणी परिषद् एवं थराद परिषद् आवास व्यवस्था, रजिस्ट्रेशन, सूचना-प्रसारण आदि के कार्य मुस्तैदी से संभाल रहे थे। पूज्य मुनिराज श्री सिद्धरत्न विजयजी एवं श्री विद्वत्वविजयजी म.सा. के साथ आराधक परिषद् के साथियों ने मंडप में नियमित व्यवस्था का जायजा लिया और तैयारियाँ पूर्ण करवाईं। इस समय तक लगभग 625 से अधिक आराधक यहाँ पदार्पण कर चुके थे।

दिनांक : 21 अगस्त 2015

आराधना का प्रथम दिवस

प्रातःकालीन आभा सूर्योदय का संदेश दे रही थी। आराधक अपने स्थान निश्चित करने मंडप में आने लगे थे। परस्पर अभिवादन और परिचितों से मिलने का दौर भी आरंभ हो गया। मंडप धीरे-धीरे भरने लगा। विधिकारक श्री त्रिलोकजी कांकरिया, कोषाध्यक्ष श्री रमणिकलालजी मेहता और चिर-परिचित आवाज और अंदाज में प्रतिदिन बोली लगाने के लिए सुरेशजी कोठारी टाण्डा अपने-अपने मोर्चे पर तैयार थे। मंडप में ही प्रातः का प्रतिक्रमण सम्पन्न हुआ।

जय-जयकार के नारे और जिन शासन के राजा पधार रहे हैं कि सुमधुर धुन के मध्य परमपूज्य गुरुदेवश्री का शुभ मुहूर्त में आगमन हुआ। गुरुदेव की मंगलवाणी के साथ नव दिवसीय आराधना के प्रथम दिवस के प्रथम सत्र का शुभारंभ हुआ। नवदिवसीय आराधना में गुरुदेवश्री के साथ मुनिश्री वीररत्न विजयजी, श्री सिद्धरत्न विजयजी, श्री विद्वत्वरत्न विजयजी, श्री निपुणरत्न विजयजी, श्री जिनागमरत्न विजयजी म. सा. ने व्याख्यान दिए। पूज्य गुरुदेव की पावन निश्रा में श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा, श्री रमेशचन्द्रजी मेहता बामनिया, 'नाकोड़ा आशीर्वाद' परिवार ने विराजमान की।

नमस्कार महामंत्र के चित्र पर पेपराल के धरू परिवार व गुरुदेव के चित्र पर श्रीमती चांदबाई चांदमलजी तांतेड़ ने पुष्पमाला अर्पित की। स्नात्र पूजा का अनुपम कार्य सम्पन्न हुआ। इसके बाद परमपूज्य गुरुदेव के कर कमलों से नवकार वाली माला को वासक्षेपित करवाने का दौर आरंभ हुआ। नव दिवस और उसके बाद भी प्रतिदिन जाप किए जाएंगे। आराधकों ने गुरुवंदना के साथ वासक्षेपरूपी आशीर्वाद प्राप्त किया। प्रथम नव

पुण्यशालियों ने परिवार के साथ नमस्कार महामंत्र और गुरुदेव के चित्र पर वासक्षेप से पूजा की और नवकार को अपने हृदय मंदिर में स्थापित किया।

वासक्षेप पूजन के बाद देववंदन हुआ। देववंदन में गुरुदेवश्री द्वारा रचित 'नवकार के स्तवन' की बहुत ही मधुर कंठ और मधुर धुन से प्रस्तुति दी गई जो मनमोहक थी। देववंदन के पश्चात् नवकार आराधकों को प्रवचन के माध्यम से नवकार की महिमा से अवगत कराते हुए गुरुदेव ने कहा कि नवकार के इन पांच पदों को हृदय मंदिर में विराजित करना है। नमस्कार, नम्रता सिखलाता है। आत्मा, अनादिकाल से आज तक इस संसार में परिभ्रमण करती हुई क्रोध, मान, माया, लोभ के दोषों से कलुषित हो गई है। हम इसके वास्तविक स्वरूप को पहचान नहीं पा रहे हैं। नवकार में श्रद्धा, आत्मा के दर्शन करा सकता है। नमस्कार विनम्रता के साथ प्रभु के आगे ऐसे झुकाता है कि फिर आराधक को अन्य किसी के आगे झुकना नहीं पड़े। जिसके हृदय में नवकार बैठ गया हो, वह प्रभु के स्मरण में लीन बनेगा प्रभु की आज्ञा अर्थात् जिनाज्ञा शिरोधार्य करता हुआ मैत्री, प्रमोद, कारुण्य माध्यस्थ भावों की उच्चता से दान-शील-तप और भाव की आराधना में संलग्न रहेगा। गुरुदेव ने कहा कि अपनी चिंताओं का सारा भार नवकार को देकर आप निश्चिंत हो जाओ। नवकार की शरण नम्रता से स्वीकारें, दीनता से नहीं। शरणागत की रक्षा करना, नवकार का दायित्व है। नवकार की गोद में बैठने से माँ की गोद जैसी अनुभूति होती है। इस तरह पूज्य गुरुदेव ने अत्यन्त भावपूर्वक नवकार स्मरण करने का उपदेश सभी आराधकों को दिया।

अगले सत्र में 'सम्प्रति महाराजा' बनकर 68 अक्षरों पर स्थित 68 तीर्थों की सुन्दर भावयात्रा के प्रथम चरण अर्थात् 'णमो अरिहन्ताणं' सप्त अक्षरिया शब्द आधार पर भाव यात्रा का लाभ श्री पारसजी भगवानजी कोठारी सियाणा-चैन्नई ने लिया। पूज्य गुरुदेव श्री की पावन प्रेरणा, निश्रा और आशीर्वाद से पेपराल में साधु-साध्वीजी समुदाय में तपस्या, उग्र तपस्या का दौर भी आरंभ हुआ।

नवकार आराधन के प्रथम दिवस पूज्य साध्वीजी श्री ध्यानदृष्टाश्रीजी म.सा. के मासक्षमण के पारणे पर पूज्य गुरुदेव तथा गुरुभक्त साध्वीजी की स्थिरता स्थल पर पहुँचे जहाँ सभी ने तप अनुमोदना की।

कोकाजी भगवानजी कोठारी परिवार बड़े ही ठाठ बाट से सम्प्रति

राजा बनकर आराधकों के साथ आराधना मंडप में पधारते हैं। पूज्य गुरुदेव को वंदना कर सप्त अक्षरीय प्रथम पद की भावयात्रा की विनती करते हैं, जिसे गुरुदेव स्वीकार करते हैं। अत्यन्त हर्षाभिभूत हो सभी आराधकों को भावयात्रा में पधारने का निमंत्रण देते हैं।

प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी सुमधुर संगीत का जादू बिखेरने नागदा का मधुकर संगीत ग्रुप राजू-कैलाशभाई अपनी प्रस्तुतियों से सभी को मोहने को तैयार था। चित्र पटल पर प्रथम पद अंकित था प्रथम पद का प्रथम अक्षर 'न'। पूज्य वीररत्न विजयजी ने भावयात्रा करवाते हुए।

(न) नवकारा पार्श्वनाथ तीर्थ छत्रालः- अहमदाबाद-मेहसाणा मार्ग पर कलोल के समीप तीर्थ की महिमा एवं इतिहास के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि मेहसाणा पर कलोल के समीप पूज्य गुरुदेव को स्वप्न आया। स्वप्न में कोई मुझे कह रहा है-'सभी लोग तीर्थंकर भगवान के मंदिर बनवाते हैं। तुम मेरा अर्थात् नवकार का मंदिर बनाओ। लगभग 30 वर्ष पूर्व की बात है। स्वप्न को साकार करने के लिए पुण्यार्थियों ने गुरु आज्ञा पालन कर अपनी लक्ष्मी का सदुपयोग किया। विभिन्न लाभार्थियों ने लाभ लिया। ऊपर पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा, मंदिर के आजू-बाजू गौतमाचार्यजी गुरुदेव की प्रतिमा, नीचे अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु अर्थात पंच परमेष्ठियों की प्रतिमाओं का सुन्दर जिनालय है। श्री बाघजीभाई व्होरा यहाँ के ट्रस्टी अध्यक्ष हैं। सुन्दर व्यवस्था है। निर्माण कार्य सतत चल रहा है।

भाव यात्रा के सम्प्रति महाराजा के पूर्व भव का वृत्तांत बताते हुए गुरुदेव कहते हैं कि पूर्व भव में वे एक भिखारी थे। भिखारी के रूप में उन्होंने साधु मुनिराज से भिक्षा की अपेक्षा की। आचार्य ने पहले दीक्षा फिर भिक्षा का उपदेश दिया। भूखा-प्यासा जीव था, दीक्षा स्वीकार कर ली। दीक्षा लेते ही साधु की वैयावच्च-सेवा होने लगी। भिक्षा में प्राप्त भोजन भूख से अधिक मात्रा में ले लिया। संयम जीवन की अनुमोदना करते-करते अजीर्ण से मृत्यु को प्राप्त हुए थे। पूर्व भव में सम्प्रति राजा, अगले भव में जिनधर्म के सच्चे उपासक बने। सवा लाख मंदिर एवं सवा करोड़ प्रतिमाएँ भरवाईं। प्रतिदिन एक जिनालय के निर्माण का संकल्प लेकर ही अन्न-जल ग्रहण करते थे। आज भी भारत भूमि पर सम्प्रति महाराजा के काल के अनेक मंदिर स्थित हैं।

(मो) मोहनखेड़ा तीर्थ :– त्रिस्तुतिक श्रीसंघ का केन्द्र बिन्दु और मालवा का प्रसिद्ध तीर्थ है। प्रातः स्मरणीय श्रीमद् गुरुदेव विजय राजेन्द्रसूरि म.सा. की प्रेरणा से राजगढ़ निवासी दोनलाजी लुणाजी जमींदार परिवार द्वारा बनाए गए इस तीर्थ का उल्लेख किया । मोहनविजयजी के नाम पर इसे मोहनखेड़ा नाम दिया गया। राजेन्द्रसूरिजी म.सा. का अंतिम संस्कार भी यहीं हुआ है। पूज्य यतीन्द्रसूरिजी म.सा. व विद्याचन्द्र सूरिजी म.सा. की समाधि स्थल भी यहाँ है। हेमेन्द्रसूरिजी व जयप्रभा विजयजी की समाधि स्थली भी है। श्री यतीन्द्रसूरिजी एवं श्री विद्याचन्द्र सूरिश्वरजी म.सा. की पावन प्रेरणा से इस तीर्थ ने क्रमशः विशालता प्राप्त की।

यहाँ शत्रुंजयावतार आदिनाथ प्रभु की अत्यन्त आकर्षक प्रतिमा स्थापित है। अर्ध शताब्दी पर्व यहाँ मनाया गया है। तीर्थभूमि पर 'नवकार के नवखंड' के आधार पर जैन इतिहास पर आधारित बहुत ही सुन्दर म्यूजियम – जयन्तसेन म्यूजियम यहाँ स्थापित है, जिसके नवखंडों में प्रभु का, साधु–भगवंतों का, ऐतिहासिक महापुरुषों का जीवन वृतांत है। म्यूजियम में आवास एवं भोजन की अति उत्तम व्यवस्था है। ध्यान केन्द्र, विशाल सभागृह, श्रमण–श्रमणी विहार बने हुए हैं। कीर्ति स्तंभ आकर्षण का केन्द्र है। पूज्य गुरुदेव की यहाँ खड़ी प्रतिमा स्थापित है।

(अ) अष्टापद तीर्थ :– चार कोस की एक सीढ़ी, कुल आठ सीढ़ी या पद इस तरह कुल अष्टपद के साथ अष्टापद तीर्थ विख्यात है। प्रथम पद के (न,मो के बाद) तृतीय अक्षर (अ) पर आया तीर्थ अष्टापद तीर्थ प्रायः विलुप्त है। प्रभु आदिनाथ की निर्वाण भूमि है तथा भरत महाराजा ने नयनाभिराम प्रतिमा भरवाई थी। रावण और मंदोदरी रानी ने अत्यन्त भावपूर्वक यहाँ भक्ति की थी। रावण ने भक्ति की शिखरता को प्राप्त कर तीर्थंकर गौत्र का उपार्जन किया। यही रावण आने वाली चौबीसी में तीर्थंकर बनेंगे। भगवान महावीर के समय लब्धीधारी ही जाते थे। गौतम स्वामी ने सूर्य की किरणों के सहारे अष्टापद जाकर वंदना की तथा 'जग चिंतामणि' चैत्यवंदन की रचना की। इसी लब्धी के आधार पर 1500 तापसों को यात्रा करवाकर खीर से पारणा करवाया। तीर्थ की स्पर्शना से आत्मा मोक्षगामी हो जाती थी।

गौतम स्वामी की लब्धि अपार थी। उनके हाथों दीक्षित केवली हो जाते।

500 तापस गुरु की लब्धि व गुण गाते। 500 इतने प्रभावशाली तो इनके गुरु कितने जबरदस्त प्रभावक होंगे यह विचार करते-करते और 500 समवशरण देखकर केवली हो गए। भाव से आज भी यात्रा की जा सकती है।

(रि) रिंगनोद :- चौथी भाव यात्रा मालवा के रिंगनोद नगर की आती है जो मोहनखेड़ा के समीप स्थित है। मूलनायक चंदा प्रभु हैं। जिनालय 100 वर्ष से अधिक का होकर तीर्थ हो गया है। गुरुदेव के भक्तों की नगरी है।

(हं) हंत्थुणी:- राजस्थान में सुमेरपुर के पास स्थित है। महावीर स्वामीजी की लाल रंग की प्रतिमाजी है।

(ता) तालनपुर तीर्थ :- डुंगरव निमाड़ में श्री राजेन्द्रसूरिजी की परीक्षा भूमि कुक्षी के निकट आया तीर्थ है। प्राचीन समय में इसका नाम तुंग्यापुरी था। सभी के द्वार खुले रहते थे। प्रभु महावीर स्वामी का यहाँ विचरण हुआ था। गौतम स्वामी ने श्रावकों की परीक्षा लेने के लिए वे जीमने हाथ में ओधा लेकर निकले। सभी कतारबद्ध हो देखते रहे। किसी ने भी वंदन नहीं किया। पुनः बाँये हाथ में ओघा लेकर वापसी की तो वे ही श्रावक विधि सहित आदरभाव से वंदना करने लगे। गौतम स्वामी के पूछने पर श्रावकों ने कहा -पहली बार आप जिमने हाथ में ओघा रखकर- जिन आज्ञा में नहीं थे। जिनाज्ञा का उल्लंघन करते हम कैसे वंदना करते? गुरुदेव कहते हैं कि पहले कैसे श्रावक और गुरु होते थे। एक अन्य वृत्तांत में उन्होंने बताया कि तुंग्यापुरी पर मुगलों का आक्रमण हुआ। श्रावकों ने प्रतिमा बावड़ी और जमीन में पदरा दी। समय आने पर खेतों में से निकली। तालनपुर में एक व्यक्ति को आये सपने के आधार पर बावड़ी में से तैरती तगारी में ताजे फूलों के साथ दीपक सहित प्रतिमाजी निकाली गई। पूज्य राजेन्द्रसूरिजी म.सा. के द्वारा प्रतिष्ठित है। वर्तमान में इसका जीर्णोद्धार सहित बड़ोदा-कुक्षी हाईवे पर भव्य जिनालय मोदी परिवार थराद के सुकृत लक्ष्मी से बना है। विशाल यात्री धर्मशाला स्थित है। इसी मार्ग पर नानपुर-लक्ष्मणीजी तीर्थ भी है।

(णं) नंदीवर्धन - नांदिया तीर्थ :- भगवान महावीर स्वामी के जीवनकाल में भाई नंदीवर्धन ने जीवित प्रतिमा तीर्थ बनवाया था।

आज के एकासना के लाभार्थी धरू श्री तलकसी भाई मनजीभाई परिवार पेपराल हस्ते रमेशभाई बच्चुलाल धरू पेपराल हाल मुंबई परिषद् के राष्ट्रीय

अध्यक्ष ने लिया। भावयात्रा के दौरान पूज्य गुरुदेवश्री ने उपधान तप पेपराल में होने का भादवा सुदी 10 से आसोज सुदी 11 की तिथि दी साथ ही पर्युषण पर्व पर तप पौषध हुए।

गुरुदेव ने सिद्धांचल महातीर्थ नवाणु यात्रा अगसर सुदी सातम दिनांक 18.12.2015 से आरंभ करने का मुहूर्त दिया। दोसी लल्लुभाई जयचन्द्रभाई परिवार थराद को यह लाभ मिला। साथ ही मालाजी अदाणी परिवार थराद वालों को थराद से शंखेश्वर पार्श्वनाथजी का व नारायणचन्द्र धरमचन्द्र परिवार को वल्लभीपुर से शत्रुंजय तीर्थ (सोमवार 14.12.2015) छःरिपालक संघ का मुहूर्त देकर सभी को हर्षोत्साह से भर दिया।

दिनांक : 22 अगस्त 2015

द्वितीय दिवस : 'णमो सिद्धाणं'

आज की भाव यात्रा के संघवी हैं रमणलाल अचलचन्दजी सियाणा। कुमारपाल बनकर भावयात्रा की विनती गुरुदेव से की, जिसे कृपालु गुरुदेव ने स्वीकार कर पुण्यार्जन का आशीर्वाद दिया।

कुमारपाल ने अट्ठारह फूलों से अत्यन्त भाव विभोर होकर प्रभु की, भक्ति की फलश्रुति अट्ठारह देश के राजा बने। जैन धर्म के प्रतिपालक हेमचन्द्राचार्य के वे शिष्य थे। जयणा धर्म का जबर्दस्त पालन करवाते थे। पशुओं तक को छाना पिलाया जाता था। 'मार' शब्द उच्चारित करना तक अपराध था। अपनी आमदनी का एक बड़ा हिस्सा जिन मंदिर निर्माण और जिर्णोद्धार के कार्यों में लगाते थे। परमात्मा के परम उपासक थे।

(न/ण) नर्दुल तीर्थ :- नाडोल गुजरात में आया है। प्राचीन तीर्थ हमारे भावों की वृद्धि और भवों की अल्पता लाने वाले होते हैं। पद्म प्रभु की प्रतिमा स्थापित है।

(मो) मोटा पोसिना :- गुजरात में तारंगाजी की तलेटी में बसा प्रभावकारी तीर्थ है। एक गाय प्रतिदिन एक निश्चित स्थान पर अपने थनों (आंचल) से स्वतः दूध की धारा छोड़ती थी। स्थल का अवलोकन करने पर भूगर्भ से पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा निकली, जिन्हें विघ्नहरा पार्श्वनाथ नाम दिया गया। आज भी प्रभावशाली दर्शन

का प्रत्यक्ष अनुभव कर सकते हैं। किसी भी संघ के प्रवास पर यहाँ शिखर की ध्वजा अपने आप लिपट जाती है। आभास हो जाता है कि छःरी पालक संघ का आगमन हो रहा है।

(सि) सिद्धांचल तीर्थ :- पंच परमेष्ठि के पांच पदों में पांच महातीर्थ समाये हुए हैं। (अ) अष्टापदजी, (सि)-सिद्धांचलजी, (आ)-आबु तीर्थ, (उ) -उज्जयंतजीरी (गिरनार), (स) -सम्मेदशिखरजी।

सिद्धांचल तीर्थ शाश्वत तीर्थ है। सिद्ध भगवंतों का अंचल याने सिद्धांचल। कर्मरूपी शत्रु पर विजय प्राप्त कराने वाला तीर्थ है शत्रुंजय। प्रत्येक जीव को ऊर्ध्वगामी या ऊपर ले जाने की बात करता है। भगवान ऋषभदेवजी नवाणु पूर्व बार आये थे। अनंत-अनंत की सिद्धभूमि है। यहाँ के कण-कण में सिद्ध है, इसी आशय को लेकर प्रभु नेमिनाथजी, सिद्धांचल तीर्थ पर नहीं पधारे क्योंकि यहाँ पग रखने लायक भूमि भी सिद्ध रहित नहीं है। तथापि 23 तीर्थंकरों ने तीर्थ की स्पर्शना की। भगवान मोक्ष पधारे पश्चात् मंदिर बना। भरत चक्रवर्ती छःरिपालक संघ लेकर आए थे। भगवान की प्रतिमा ने सात बार श्वाँस ली थी। प्रतिमा अत्यन्त प्रभावकारी है। हजारों की संख्या में श्रद्धालुजन कार्तिक पूर्णिमा से चातुर्मास आरंभ होने तक प्रतिदिन यात्रा कर अपनी आत्मा को मोक्ष की ओर ले जाने की भावना भाते हैं। भवी जीव ही इस तीर्थ पर आकर दादा के दर्शन कर सकता है। श्रद्धालु नवाणु यात्रा, अट्ठम कर ग्यारह और छट कर सात यात्रा करते हैं। प्रतिवर्ष छःरिपालक संघ सैकड़ों की संख्या में यहाँ पहुँचते हैं।

नीचे तलेटी से वंदना आरम्भ होती है। पालीताणा धर्मशालाओं का शहर है। यतीन्द्रभवन सहित अनेक धर्मशालाओं का जीर्णोद्धार कार्य, नवीन धर्मशालाओं का निर्माण गुरुदेवश्री की पावन प्रेरणा से हुआ है।

(द्धा) धानेराः- बनासकांठा जिले की यह पावन भूमि पेपराल के समीप स्थित है। प्रभु शांतिनाथजी की प्रतिमा स्थापित है। प्रातः स्मरणीय गुरुदेवश्री राजेन्द्रसूरिजी म.सा. का जिनालय भी बना है।

(णं) नंदीश्वर द्वीपः- एक-एक मंदिर में 56-56 मंदिर। मंदिर में ऋषभदेवजी, चन्दाननजी, वारिषेणजी, वर्द्धमान स्वामीजी की प्रतिमाएं। देवता भक्ति करते हैं पर्यूषण पर्व पर आकर पर्व मनाते हैं। द्वितीय दिवस के एकासने के लाभार्थी डायालाल रामचंद्र भाई रहे।

दिनांक : 23 अगस्त 2015

आराधना का तृतीय दिवस

णमो आयरियाणं :– आज की भावयात्रा पेथडशाह मंत्री की अगुवाई में हुई जिसका लाभ मोरखिया गगलदास गमानदासजी लाखणी ने लिया। आचार्य पद है। आचार्यश्री की पावन जन्मस्थली है। पूज्य गुरुदेवश्री अपनी जन्मस्थली पधारे। जहाँ पालने में नन्हें पूनमचंद झूल रहे थे। समस्त आराधक मंत्रीश्वर पेथडशाह परिवार के साथ जन्मस्थली की वंदना कर गाजे–बाजे के साथ नवकार आराधना मंडप में भावयात्रा हेतु पहुँचते हैं।

पेथडशाह जिन्हें धर्म के प्रति अटूट आस्था है और प्रभु भक्ति की तल्लीनता ऐसी की पुष्प पूजा के समय राजा के स्वयं पहुँचने का भी उन्हें पता न चला। ऐसे मंत्रीश्वर आज भावयात्रा में 'नमो आयरियाणं' सप्त अक्षरी भावयात्रा कराएंगे।

न = नगपुरा उवस्सगरम् तीर्थ (पार्श्वनाथ प्रभु)

मो = मोणासा तीर्थ गुजरात (आदिनाथ प्रभु)

आ= आबुजी देलवाड़ा तीर्थ

नेमिनाथजी भगवान की प्रतिमा, आदिनाथ प्रभुजी। विमलशाह ने अपनी पत्नी के साथ प्रवास के दौरान एक बालक की विपरीत हरकत देखकर अंबिका देवी से वरदान में बेटा नहीं मांगा। देराणी–जेठाणी का गोखला। और भी इस तीर्थ की बहुत महिमा है।

य = यशनगर तीर्थ
आचार्य–साधु भगवंत आते थे
खरतरगच्छ की भूमि रही ।

रि = रिछेड़ तीर्थ
मेवाड़ की भूमि पर आया,
तपागच्छ की भूमि रही।

या = यादवपुर
नेमिनाथजी भगवान
की प्रतिमा

णं = नाडलाई तीर्थ

गोरवाड की भूमि पर स्थित है। नंदी कुलवती तीर्थ दो पहाड़ 1. यादव टेकरी और 2. शत्रुंजय टेकरी के मध्य स्थित है। पद्मकुमारजी वल्लमीपुर से तीर्थ मंदिर अपने बल से उठाकर लाये।

अपने गुरुवर को 'आचार्य पद' नमो आयरियाणं भावयात्रा के दिवस पर साध्वी पूज्य विज्ञानलताश्रीजी ने अट्ठाई का तप स्थिरता स्थल पर गुरुदेवश्री की अगवानी की। आज उनका अट्ठाई का पारणा था।

जापानी नवकार आराधक दल पहुँचा

प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी नवकार मंत्र आराधना हेतु जापान का आराधक दल यहाँ पहुँचा। सामान्यतः दो-तीन दिन रुकने वाला दल इस वर्ष गुरुजन्म भूमि पर आठ दिन रुका और सम्पूर्ण क्रियाओं में हिस्सा लिया। नवकार मंत्र की माला, आरती, प्रभु पूजन, एकासना, वासक्षेप पूजा, भावयात्रा, नृत्य आदि सभी क्रियाएं भावपूर्वक कर अपने आपको इस बात के लिए भी धन्य मान रहे थे कि संयोग से हमें ऐसे गुरुवर मिले जिससे हम भी भव पार हो जाएंगे। विनम्रता, विनयता और विवेक के साथ स्व-अनुशासन से अपने सभी नियमित धार्मिक अनुष्ठान कर सभी आराधकों ने सभी का मन मोह लिया।

दिनांक : 24 अगस्त 2015

नवकार आराधना का चतुर्थ दिवस

आज की भावयात्रा 'णमो उवज्झायाणं' पद के सात अक्षरों पर आधारित सात तीर्थों की यात्रा की विनती झांझडशाह मंत्रीश्वर बनकर संघवी हालचंद्र खेंगारभाई परिवार ने गुरुदेवश्री से की। सभी अत्यन्त उल्लासपूर्वक आराधक परिवार के साथ आराधना मंडप में आए।

परमपूज्य गुरुदेव ने कहा-नवकार से परमशांति का लक्ष्य पा सकते हैं, क्योंकि नवकार शांतिप्रदाता है। नवकार इस भव में और परभव में भी सदैव उपकारी रहा है, रह रहा है और सदैव रहेगा। आज नवकार की आराधना की तो अगले भव में फिर नवकार मिलेगा और यही नवकार बाद में मुक्ति दिलाएगा। नवकार को हृदय में स्थापित करना है। नवकार आधि, व्याधि और उपाधि तीनों से मुक्त करता है। हमारी जितनी श्रद्धा होगी, उतना ही लाभ होगा और नवकार के प्रभाव से परम आनंद की प्राप्ति होगी। नवकार से मांगना है तो सिर्फ अलौकिक सुख माँगें, लौकिक सुख तो अपने आप मिल जाएंगे। जैसे किसान मेहनत अनाज के लिए करता है पर घास-फूस व अन्य सामग्री तो अपने आप मिल ही जाती है।

नवकार हर पल–हर क्षण मित्रवत साथ रहे, सदा नाथ रहे। पेथडशाह के पुत्र झांझडशाह ने पिता की ही तरह अनेक संघ निकाले। थराद में पेथडशाह द्वारा ओम् संघवी के नेतृत्व में निकाले गए छःरिपालक संघ में थराद निवासियों ने अत्यंत अल्प समय में घर–घर से भोजन के माध्यम से अभूतपूर्व व्यवस्था दी।

(ण) = नलिया तीर्थ (कच्छ में आया)

(मो)= गुजरात के पाटन जिले में स्थित मोढेरा तीर्थ

(उ)= उज्जयंतगिरि (गिरनार तीर्थ)

सौराष्ट्र की पावन धरा, प्रभु नेमिनाथजी का दीक्षा स्थल, केवल, मोक्ष, कल्याणक भूमि। समवशरण मंदिर स्थित है। राजुल की गुफा, ऊपर अंबाजी का मंदिर है। पहाड़ इतना ऊँचा है कि बादलों से बातें करता प्रतीत होता है। राजुल को छोड़ा–रथनेमि राजुल पर मोहा पर राजुल के उपदेश से पुनः शुद्धभाव में आया। सबसे उच्च शिखर पर दत्तात्रय–सुदत्त–चारुदत्त (3 दत्त) के कारण वैष्णव ने जैनों की कमजोरी के समय दत्तात्रय पर अधिकार कर लिया। आने वाले चौवीसी में 24 तीर्थंकर इस भूमि से मोक्ष जाएंगे। वस्तुपाल तेजपाल ने मंदिर बनवाया है।

(व)= वरमाण – भगवान महावीर स्वामीजी की भव्य प्रतिमा दर्शनीय, वंदनीय, पूजनीय है।

(झा)= झाबुआ तीर्थ मोहनखेड़ा तीर्थ के समीप स्थित है। बावन जिनालय मंदिर हैं। संवत् 1958 में राजेन्द्रसूरिश्वरजी म.सा. ने प्रतिष्ठा करवाई थी। वर्तमान में भी निर्माण कार्य चल रहा है।

(या)= यादगिरि तीर्थ – कर्नाटक में स्थित तीर्थ में सुमतिनाथजी भगवान का मंदिर स्थित है। गुरुमंदिर–देवरी व चरणपादुका है। पूर्व के मंदिरों को आक्रमणकारियों ने तोड़ा था।

(णं)= नंदनवन – पालीताणा मार्ग पर धंधुका के आगे स्थित नंदनवन में मुनिसुव्रत स्वामीजी का जिनालय है। विशाल धर्मशाला है।

उपरोक्त तीर्थों की भावयात्रा अत्यन्त उत्साह से मधुकर संगीत मंडल की आकर्षक प्रस्तुति में की गई। पेपराल में पूज्य मुनि भगवंतों एवं साध्वीजी भगवंतों की तपस्या अनुमोदनार्थ सम्पूर्ण आराधक परिषद् की ओर से दोपहर में सामूहिक चौबीसी आयोजित की गई थी।

आज के एकासना के लाभ बी.एम.शाह सूर्यप्रकाश उर्फ मुन्नाभाई भंडारी परिवार चैन्नई ने लेकर लक्ष्मी का सदुपयोग किया।

दिनांक : 25 अगस्त 2015

पंचम दिवस

'नवकार हमें जन्म से मिला इसलिए हम इसे सहज समझते हैं पर जिन्हें नया मिला है उनके लिए इसकी महत्ता चिन्तामणि रत्न जैसी है। नवकार का जाप जीभ से नहीं हृदय से करो। अरिहंत विश्वव्याप्त हैं। अरिहंत में विश्व है और विश्व में अरिहंत व्याप्त हैं। अरिहंत को नमस्कार से संसार के समस्त जीवों को नमस्कार हो जाता है। नवकार को पूर्ण भाव से जपें। गिनने का भाव नहीं रखें। जितना जाप करेंगे उतने पाप खपेंगे, यह भाव रखें।'

आज की भावयात्रा अवंतिका के महाराजा विक्रमादित्य के रूप में संघपति बनकर उज्जैन के ही आराधना परिषद् के श्री रमणिकलालजी प्रकाशचन्द्रजी, सुभाषजी राजमलजी कोठारी एवं परिषद् साथियों ने गुरुदेव श्री की पावन सान्निध्यता में भावयात्रा करवाई।

(न)= नवसारी– गुजरात में बड़ोदा–मुंबई हाईवे पर स्थित तीर्थ में चिंतामणि पार्श्वनाथ प्रभु का जिनालय सुशोभित है।

(मो)= मोदरा तीर्थ – जालोर जिले के मोदरा चामुंड वन क्षेत्र में स्थित है। सुमतिनाथ प्रभु का जिनालय है। शेर–चीते और अन्य पशुओं की वनभूमि है। राजेन्द्र सूरिश्वरजी म.सा. ने ध्यान लगाया था।

(लो)= लोद्रव तीर्थ राजस्थान में है।

(ए)= एकलिंगजी– श्री शांतिनाथजी भगवान की प्रतिमा स्थित है।

(स)= सम्मेदशिखरजी – बिहार में पर्वतीय क्षेत्र में स्थित अत्यंत एवं अनंत आस्था के केन्द्र हैं। बीस तीर्थंकर प्रभु की मोक्षभूमि है। सामला पार्श्वनाथ प्रभु का मुख्य जिनालय है। शिखरजी की यात्रा में टुकदर्शन, चन्द्रप्रभुजी के टुक दर्शन एवं तलेटी पर भोमियाजी महाराज अधिष्ठायक देव हैं। अनेक धर्मशालाएं निर्मित हैं।

(व)= गोरवाड़ की पंचतीर्थी में वरकाना तीर्थ। प्राचीन 515 वर्ष पूर्व की पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा विराजित है।

(सा)= सागोदिया तीर्थ रतलाम– म.प्र. के रतलाम के समीप स्थित सागोदिया तीर्थ। भगवान आदिनाथजी प्रभु मूलनायक हैं। सिद्धांचल की कृति बनी हुई है।

(हु)= हुबली तीर्थ – मारवाड़ और गुजरात के लोगों की बहुलता और आस्था का केन्द्र है।

(णं)= नंदीग्राम– पांचवे दिवस की

आराधना में एकासने के लाभार्थी कटारिया भंवरलालजी पुखराजजी संघवी धाणसा रहे। आज आराधकों एवं परिषद् यात्रियों द्वारा बस से भोरल, कंकुचिमन तथा म्होटा महावीर थराद धर्मस्थलों का दर्शन, वंदन, पूजन किया गया।

दिनांक : 26 अगस्त 2015

छठा दिवस

नवकार मंत्र आराधक प्रातः से ही अपनी दैनिक धार्मिक क्रियाओं में जुड़ गए। प्रतिक्रमण के बाद सबसे पहले नवकार माला का जाप हुआ पश्चात् अगले क्रम में गुरुदेव का आगमन, वासक्षेप आदि क्रियाएं सम्पन्न हुई।

'ऐसो पंच नम्मुकारो' पद की भावयात्रा संघवी- आभु संघवी थराद। आभु संघवी ने थराद में जिन शासन की ध्वजा फहराई जो गुजरात और समाज का गौरवशाली नगर है। आभु संघवी ने अनेक अवसरों पर थराद को गौरवान्वित किया था। आभु संघवी बना थराद का हाकम-चंदा संघवी परिवार। अष्ट पदीय या आठ तीर्थों की इस भाव यात्रा में एलुर तीर्थ, जालोर का स्वर्णगिरि तीर्थ, गुजरात में पंचासरा, चन्द्रावती चाणसा तीर्थ नडियाद, मुछाला महावीरजी कापरड़ाजी तीर्थ तथा जावरा के समीप रोजाना तीर्थ की मनोरम भाव यात्रा अत्यन्त मधुर स्वर लहरियों व नृत्य के साथ सम्पन्न हुई।

शतावधान

दोपहर में पूज्य आचार्य देवेश श्रीमद् जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. की पावनकारी निश्रा में उन्हीं के लघु शिष्य 17 वर्षीय बालमुनि श्री प्रत्यक्षरत्न विजयजी म.सा. ने शतावधान का अद्भूत सफल प्रयोग कर पूज्य गुरुदेव का आशीर्वाद प्राप्त किया। पूज्य गुरुदेवश्री ने इन बालमुनि को त्रिस्तुतिक समुदाय के इतिहास में श्रमण समुदाय में 'प्रथम शतावधानी' पद से सुशोभित करते हुए कहा कि मुनिराजश्री जिनागमरत्न विजयजी एवं मुनिराज श्री प्रत्यक्षरत्न विजयजी ने अर्द्ध शतावधान बीजापुर में किए थे। दोनों मुनिराज ने अपनी स्मरण शक्ति, एकाग्रता पर जबरदस्त नियंत्रण कर समर्पणता से इस विद्या को हासिल किया है। श्रमण संस्कृति-जैन संस्कृति में आज से 980 वर्ष पूर्व तक स्मरण शक्ति के आधार पर ही ज्ञान का आदान-प्रदान होता था। भद्रबाहु स्वामी ने 14 पूर्व

स्थूलिभद्रजी की सात बहनें क्रमशः 1 से 7 तक की कोई भी रचना सुनने पर ऐसे ही दोहरा देती थीं। धीरे-धीरे स्मरण शक्ति में ह्रास होता देख वल्लभीपुर में 500 आचार्यों ने मस्तिष्क में, स्मृति में संचित ज्ञान को पुस्तकों का रूप दिया जिससे ज्ञान प्रवाहमान बना रहे।

राजा भोज ने धनपाल कवि के 52 हजार श्लोकों के ग्रंथ को नाराज होकर जलवा दिया था। कविवर हताश हो गए। ऐसे में उनकी पुत्री तिलक मंजरी ने पिता को यह कहते हुए विस्मित कर दिया कि जब आप रचना कर पन्ने रख देते थे तब मैं उन्हें पढ़ लेती थी। मुझे वे सभी कंठस्थ हैं। इतना ही नहीं उसने अपनी स्मरण शक्ति से ज्यों का त्यों पुनः लेखन भी कर दिया।

शतावधान के प्रदर्शन पर अभिभूत गुरुदेव ने चन्द्रगुप्त मौर्य के स्वप्न फल 'गाड़ी को छोटे छोटे बछड़े खींचेंगे' का उल्लेख करते हुए कहा कि बालमुनियों के रूप में मुझे सपना साकार होते दिखाई दे रहा है। इस अवसर पर स्थानीय ट्रस्ट, अ.भा.श्री श्वेताम्बर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ, अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् ने बालमुनि की अद्भूत क्षमता की अनुमोदना की। पूज्य बालमुनि प्रत्यक्षरत्न विजयजी ने इसे परमपूज्य गुरुदेव एवं अग्रज मुनिभगवंतों का आशीर्वाद निरुपित किया। प्रथम महिला शतावधानी बहन निलिशा सेठिया भी सहयोग के लिए धन्यवाद की पात्र हैं।

आज राजगढ़ आराधना परिषद् द्वारा पूज्य साधु-साध्वीजी भगवंतों की तपस्या निमित्त सामूहिक सामायिक का आयोजन रखा गया था। एकासना लाभार्थी-मोरखिया बिजूबेन मोहनलाल गमानचन्द्र लाखणी परिवार था।

दिनांक : 27 अगस्त 2015

सप्तम दिवस

नवकार आराधना का सप्तम दिवस 'सव्वपावप्पणासणो' अक्षरों की भावयात्रा का था। वस्तुपाल तेजपाल बनकर भंसाली कांतिलाल भादरमल ने भावयात्रा का लाभ लिया। प. पूज्य गुरुदेव ने कहा-नवकार सम्पूर्ण विश्व में मैत्रीय भाव का प्रचारक व प्रदायक है। जहाँ मैत्री भावना का अभाव है वहाँ नवकार नहीं रह सकता। आज की भावयात्रा में स्तंभनपुर, वल्लभीपुर, पावापुरी, बही पार्श्वनाथ, परासली, नागेश्वर, सत्यपुर,

नोधणवदर तीर्थ का समावेश हुआ। अष्टप्रकारी द्रव्य से भावयात्रा की गई।

आज दोपहर में बाग-कुक्षी की आराधना परिषद द्वारा तपस्या अनुमोदनार्थ सामूहिक सामायिक सह चौबीसी का आयोजन किया गया। आज के एकासने के लाभार्थी-श्री छगनलालजी धरमचंदजी परिवार नैनावा वाले थे।

दिनांक : 28 अगस्त 2015

अष्ठम दिवस

नवकार मंत्र आराधना के दौरान विभिन्न प्रकार की तपस्याएं चल रही हैं। कोई मासक्षमण, श्रेणी तप, सिद्धितप, भक्तामर तप, संतीकर तप, वर्षी तप, अट्ठाई, गुरुतप, उवस्सगहरणतप तो कोई आयम्बिल, पौषध, मौन लोच आदि विभिन्न प्रकार की तपस्याओं के साथ नवकार की साधना कर रहे हैं। निश्चित रूप से ये सभी अनुमोदनीय हैं। नवकार आराधक परिषद् की ओर से इन सभी तपस्वियों का बहुमान बहुविधि से तिलक,माला, श्रीफल, साफा, शाल आदि से विभिन्न लाभार्थी परिवारों ने किया। तिलक लगाकर श्रीमती लीलाबाई भंडारी झाबुआ ने, माला से -श्री गुमानमलजी पारसजी गांधी मूथा सायला, श्रीफल व कवर से श्रीमती कांताबेन बाबुलालजी नडियाद रमेशभाई नडियाद ने, शाल-साफा से छत्रगौता अशोककुमार कुंदनमल सायला परिवार ने किया। चांदी के बहुमान पत्र से अभिनंदन, वाचन करने का लाभ परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशभाई धरु ने लिया। कार्यक्रम के दौरान श्री रमणिकलालजी तलेरा उज्जैन का उनकी सेवाओं के लिए बहुमान किया गया।

आज की भावयात्रा पूज्य बप्पभट्टसूरिजी के शिष्य आमराजा के वेश में प्रतापजी-पुखराजजी सियाणा वालों ने लिया। 'मंगलाणं च सव्वेसि' पद के अक्षरों के साथ संघपति के रूप में उन्होंने भावयात्रा की। मंडपाचल (मांडव), गंगाणी तीर्थ, लाखणी, नानपुर, चंपापुरी, संवली विहार भड़ुच, वेलार, सिद्धपुर तीर्थ भावयात्रा में समाहित हुए।

आज के एकासने के लाभार्थी देसाई रुखनबेन मफतलाल राजमलभाई थराद वाले रहे।

दिनांक : 29 अगस्त 2015

नवम दिवस

नवकार आराधना का नवम् दिन अखंडता के प्रतीक के रूप में नवकार से बंधन कर संसार से बंधन मुक्त होने के रूप में मनाया गया। आज पूर्णिमा अवसर पर पूर्णचन्द्र और गुरु की पावन सान्निध्यता का दिन था। ऊपर से चन्द्रमा का शीतल प्रकाश और सामने से गुरुदेव के आध्यात्मिक चांद की मधुर शीतलता प्राप्त हो रही थी। आज गुरुपद, वासक्षेप पूजन और आशीर्वाद प्राप्ति का अवसर था सौ प्रातः से ही उत्सुकता थी।

पूज्य गुरुदेव ने भक्तामर, उवस्सगहरम्, नवकार तथा अन्य मंत्रों से मंत्रित वासक्षेप अंगूठी तथा अन्य साधना सामग्रियों पर कर सभी आराधकों को प्रदान किया। नैल्लूर आराधना परिषद् ने चढ़ावा लेकर आज गुरुपूर्णिमा पर 'प्रथम गुरुपूजा' का लाभ एवं पुण्यार्जन किया। पश्चात् सभी आराधकों ने क्रमशः गच्छाधिपति, हृदयसम्राट, नवकार आराधक-साधक युग प्रभावक गुरुदेव श्रीमद्विजय जयतंसेन सूरिजी का वासक्षेप सिर पर प्राप्त किया।

आज की भावयात्रा में संघवी 'थिरपाल महाराजा' जिनके नाम से थराद नगर का नामकरण हुआ। जिसकी स्थापना संवत् 101 चैत्र सुदी 14, शनिवार को हुई थी। जिनके प्रताप से थराद की वृद्धि और विकास होता गया। हरखु बहन ने मंदिर बनवाया। भाई ने मामेरा में कुछ मांगने का प्रस्ताव रखा। बहन ने अन्य कुछ नहीं मांगा। भाई से कहा कुछ देना ही है तो ऐसा कुछ दीजिए जो इतिहास में अमर हो जाए। बहना ने कहा मेरा परिवार हमेशा भाणेज परिवार और आपका सेठ परिवार हमेशा 'मामा परिवार' रहे और ये रिश्ता हमेशा-हमेशा के लिए कायम रहे। इनके मध्य वैवाहिक संबंध नहीं हों। यह अजोड़ घटना ऐतिहासिक रूप से सतत् 2000 वर्षों से चली आ रही है। आज भी इन दो परिवार की गौत्र में मामा-भाणेज का रिश्ता कायम है।

आज थिरपाल महाराजा बनने का सौभाग्य भी धरु परिवार के वंशज - गुरुदेव के सांसारिक परिवार के श्री चिमनलाल भायचन्द्र भाई धरु पेपराल-तरफे श्री रमेशचन्द्र बच्चुलाल धरु पेपराल (अध्यक्ष श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् मुंबई)ने लिया। सम्पूर्ण धरु परिवार एवं आराधकगण गुरुदेव के जन्मस्थल पहुँचा। जहाँ से घोड़े पर थिरपाल महाराज

के रूप में रमेशभाई सवार हुए। नाचते-गाते ढोल-बाजों के साथ युद्ध कला का प्रदर्शन करते शोभायात्रा आराधना मंडप पहुंची। आज अंतिम पद 'पढमं हवई मंगलम् ' पद की भावयात्रा थी। भावयात्रा में परोली तीर्थ, ढंग गिरि और मंदसौर तीर्थों का समावेश हुआ।

आज के एकासने के लाभार्थी व्होरा चंदुलाल मफतलाल नागरदासभाई दुधवा थराद निवासी थे।

आज साध्वीजी श्री सोमप्रियाश्रीजी म.सा. के 30 एवं साध्वी श्री कुमुदप्रियीश्रीजी के 36 उपवास का पारणा था। पूज्य गुरुदेव श्री, श्रीसंघ के साथ उनके स्थिरता निवास पर पहुँचे। सांसारिक परिवार ने पद प्रक्षालन, गुरुपूजा का लाभ लिया। इस दिन श्री अमृतभाई माधवलाल दुधवा ने पेपराल में रथ तथा जयंतिलाल सरला बेन ने एम्बुलेंस -सोनीजी-तूफान गाड़ी पेढ़ी पर यात्रियों की सुविधा हेतु प्रदान की। ट्रस्ट की ओर से सभी आराधकों को अतीव सुंदर भगवान, तीर्थ, गुरु दर्शनार्थ पट तथा क्रिया हेतु किट भेंट स्वरूप प्रदान किए गए।

दिनांक : 30 अगस्त 2015

बिदाई दिवस

आज नवकार महामंत्र आराधना के आराधकों का बिदाई दिवस था। पूज्य गुरुदेव ने 'मिच्छामि दुक्कड़म्' क्षमा प्रक्रिया के साथ निष्कासन क्रिया सम्पन्न कराई। सभी आराधकों को मंत्रित वासक्षेप की पुड़िया प्रदान की गई। ट्रस्ट मंडल का बहुमान रजत अभिनंदन पत्र से आराधकों की ओर से श्री रमेशभाई धरु (अध्यक्ष परिषद्) ने किया।

आज कु. भूमि वेदलिया का मासक्षमण का पारणा था। गुरुदेवश्री पधारे थे। संगीतकार-राजुभाई-कैलाशभाई मधुकर संगीत मंडल की शानदार प्रस्तुति हुई। नवकार मंत्र आराधना के दौरान छात्रवृत्ति, शाश्वतधर्म, बहुमान, जीवदया सहित अन्य सेवाक्षेत्रों के लिए आराधकों ने खुलकर लक्ष्मी का सदुपयोग किया। सुरेशजी कोठारी टाण्डा द्वारा प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी चढ़ावे की बोली बोलकर आराधकों को प्रोत्साहित किया गया। भाई तिलोक कांकरिया ने विधि-विधान सम्पन्न कराया। अंत में आराधक परिषद् की ओर से अशोक श्रीश्रीमाल ने सभी से सभी की ओर से 'मिच्छामि दुक्कड़म्' से क्षमा याचना की और आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम के अंत में पूज्य साध्वी श्री

सुनंदाश्रीजी सहित त्रिस्तुतिक समुदाय के उन साधु-साध्वीजी भगवंतों का जो हमारे मध्य अब नहीं रहे हैं, साथ ही उन आराधकों, समाजजनों का भी जो पिछले वर्ष में दिवंगत हुए हैं, उनके प्रति श्रद्धासुमन अर्पित किए गए। सभी एक विशाल शोभायात्रा के रूप में गुरु जन्मभूमि पहुँचे। वंदन आदि कर पारणा कर बाद में अगले वर्ष पुनः मिलने के वादे के साथ सभी ने बिदाई ली।

आज के पारणे के लाभार्थी -वीरवाडिया चंपाबेन भोगीलाल, देवचन्द्र भाई परिवार जेतड़ा डीसा ने तथा धारणा वोरा शान्ताबेन शामजीभाई परिवार अहमदाबाद वालों ने लिया।

गुरुदेवश्री की पावन निश्रा में पेपराल में श्रमण-श्रमणी की तपाराधना

सिद्धी तप - मुनिश्री निपुणरत्न विजयजी म.सा., मुनिश्री तारकरत्न विजयजी म.सा.

ग्यारह उपवास - मुनिश्री प्रत्यक्षरत्न विजयजी म.सा.

सिद्धी तप- साध्वीश्री अविचलदृष्टा श्रीजी म.सा., साध्वीश्री अमितदृष्टाश्रीजी, साध्वी श्री मैत्रीकलाश्रीजी, साध्वी श्री रश्मिप्रभाश्रीजी, साध्वी श्री आगमकलाश्रीजी, साध्वी श्री शाश्वतप्रियाश्रीजी, साध्वी श्री विरागनिधि श्रीजी, साध्वी श्री सिद्धान्तरसा श्रीजी, साध्वी श्रीविरागदृष्टा श्रीजी, साध्वी श्री विबुधप्रिया श्रीजी, साध्वी श्री परार्थप्रियाश्रीजी, साध्वी श्री सुव्रतप्रिया श्रीजी, साध्वी श्री सत्वप्रियाश्रीजी, साध्वी श्री शुभनिधि श्रीजी म.सा.

साध्वी श्री निरुपमकलाश्रीजी म.सा. (108 अट्ठम), साध्वी श्री अर्हत् प्रियाश्रीजी म.सा.(चत्तारी, अट्ठ-दस-दोय), साध्वी श्री अमृतरसा श्रीजी म.सा. (आठ अट्ठाई), साध्वी श्री कुमुदप्रिया श्रीजी म.सा. (36 उपवास), साध्वी श्री ध्यानदृष्टाश्रीजी म.सा. (30 उपवास), साध्वी श्री वीरनिधि श्रीजी म.सा. (21 उपवास), साध्वी श्री सोहमप्रियाश्रीजी म.सा. (30 उपवास), साध्वीश्री अर्पणप्रियाश्रीजी म.सा. (30 उपवास), साध्वी श्री विज्ञानलताश्रीजी म.सा. (अट्ठाई), साध्वी श्री संवरलताश्रीजी म.सा. (अट्ठाई), साध्वी श्री भक्तिरसाश्रीजी म. (गुरुतप)।

पूज्य गुरुदेव की पावन निश्रा में पेपराल में वर्धमान तप तथा ओली में संलग्न श्रमण-श्रमणी भगवंत

मुनिराजश्री विनयरत्न विजयजी म.सा., मुनिराजश्री विनितरत्न विजयजी म.सा., मुनिराज श्री वीररत्न विजयजी म.सा., मुनिराज श्री जिनागमरत्न विजयजी म.सा., साध्वी श्री दर्शनकलाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री निरंजनकलाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री अक्षयकलाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री चिरागकलाश्रीजी,, साध्वी श्री अपूर्वकलाश्रीजी, साध्वी श्री निर्वेदकलाश्रीजी, साध्वी श्री संवेगप्रिया श्रीजी, साध्वी श्री सुमनकला श्रीजी, साध्वी श्री सौरभकलाश्रीजी, साध्वी श्री आशानिधि श्रीजी, साध्वी श्री ऋजुप्रिया श्रीजी, साध्वी श्री चित्तप्रिया श्रीजी, साध्वी श्री धैर्यकला श्रीजी, साध्वी श्री मौनदृष्टा श्रीजी, साध्वी श्री स्मितप्रिया श्रीजी, साध्वी श्री मंत्रकला श्रीजी, साध्वी श्री आज्ञानिधि श्रीजी, साध्वी श्री मेघनिधि श्रीजी, साध्वी श्री मंगल निधि श्रीजी, साध्वी श्री मेरूनिधि श्रीजी, साध्वी श्री रिद्धिनिधि श्रीजी, साध्वी श्री सुपार्श्वनिधि श्रीजी, साध्वी श्री श्रेयांसनिधि श्रीजी म.सा.।

2015 नवकार आराधना पेपराल

साध्वी श्री सुनंदा श्रीजी म.सा., श्री वर्धमानजी राठौर बड़नगर, श्री शांतिलालजी बाणियाँ टाण्डा, श्री शांतिलालजी मामा इन्दौर, श्रीमती मधुकांता मामा इन्दौर, श्री आनंदीलालजी मामा इन्दौर, श्रीमती कंचनबेन लोढ़ा मन्दसौर, श्री इंदरमलजी खाबिया बालोदावाले बड़नगर, श्री जवाहर सेठ नागदा, श्री उम्मेदमल प्रतापजी, श्री मनोहरलालजी कावड़िया मेघनगर, श्री चांदमलजी जैन बागवाले इन्दौर, श्री राजमलजी जैन बागवाले इन्दौर (तारक), श्री कीर्तिभाई व्होरा (पूज्य चारित्ररत्न विजयजी म.सा.के पिताजी), श्री समीरमलजी लुणावत रिंगनोद (शशांक), श्री धनराज कोठारी पारा, श्रीमती कमलादेवी सागरमलजी शाजापुर, श्री त्रिलोकचंदजी अलिराजपुर, श्री श्रेणिकलालजी ओरा, श्रीमती शांताबाई बाबुलाल डुंगरवाल रिंगनोद, श्रीमती दाखाबाई शांतिलालजी बाग, श्रीमती राजीबाई चांदमलजी रिंगनोद इमली, श्री दिनेशकुमार कन्हैयालाल व्होरा धानेरा (हेमरत्न विजयजी), श्री जयंतिलालजी कोठारी झाबुआ, श्री विक्रमसिंह डोसी कुक्षी, श्रीमती मानकुंवर सराफ राजगढ़, श्रीमती धर्मपत्नि रमेशजी लुणावत महिदपुर, श्री समरथमलजी रुणवाल मेघनगर, श्रीमती नंदाबेन झंडापुर (साध्वी श्री

तत्वलताश्रीजी म. की सांसारिक माताश्री), श्री शीतलजी आलिराजपुर, श्री ऋषभ सेठ राणापुर (माताजी + बहना), श्रीमती सोहनबाई रतनलालजी जावरा (इंदरमलजी साफावाला), श्रीमती चंदरबाई पुराणिक कुक्षी (मनोहरलाल पुराणिक), श्री मानमलजी खाबिया मंदसौर (मंदसौर परिषद् अध्यक्ष के पिताश्री), श्रीमती सूरजबाई डूंगरवाल नयागांव, श्रीमती लीलादेवी मूणत बदनावर (अनिल मूणत अध्यक्ष), श्री सरदारमलजी मेहता-खाचरोद, श्री शांतिलालजी मेहता जावरा, श्री शांतिलालजी पारेख कुक्षी-इन्दौर (परिषद् प्रचार मंत्री), श्री शांतिलालजी काकरिया राजगढ़, श्रीमती प्रेमबाई पगारिया इन्दौर, श्री सुमेरमलजी पांथेड़ी,श्री सुरेशकुमार हस्तीमल चोरड़िया (वाटिका+ मनमोहन), श्रीमती मदनदेवी वैद्य इन्दौर, श्री धनराजजी झीनवाला राजगढ़।

भव्य रथयात्रा एवं तपस्वी का बहुमान समारोह

जावरा। साध्वी श्री डॉ. प्रीतिदर्शनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा चार की प्रेरणा से चल रहे चातुर्मास के अंतर्गत 50 दिन के 78 पंच मेरूतप एवं 20 दिन के 32 यति धर्म तप व 36 अट्ठाई तप की तपस्या का पारणा व समापन समारोह दिनांक 20 सितंबर 2015 को संपन्न हुआ। प्रातः 7.30 बजे लाभार्थी कोलन परिवार द्वारा नवकारसी का आयोजन किया गया। प्रातः 9 बजे साध्वीजी म.सा. की निश्रा में विशाल वरघोड़ा निकाला गया जिसमें पंचमेरू तप यति धर्म तप एवं अट्ठाई तप के तपस्वी 5 घोड़े, 5 बग्गी, एक हाथी, भगवान का रथ, 11 मिनीडोर, 2 ट्रेक्टर ट्राली में सवार थे। महिला परिषद् की महिलाएं कलश लेकर चल रही थीं। 2 बेंड वरघोड़े की शोभा बढ़ा रहे थे। कार्यक्रम के अतिथि पारसजी जैन (स्कूल शिक्षामंत्री) रतलाम विधायक श्री चेतन्यजी कश्यप, पूर्व श्रीसंघ के राष्ट्रीय महामंत्री श्री मनोहरलालजी पौराणिक, बड़नगर श्रीसंघ अध्यक्ष श्री राजेन्द्रजी दंगवाड़ा, श्रीसंघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री शांतिलालजी दसेड़ा, न.पा. अध्यक्ष श्री अनिलजी दसेड़ा परिषद् के केन्द्रीय पर्यावरण मंत्री अतिथि के रूप में उपस्थित थे। प्रातः 11 बजे नगर के विभिन्न मार्गों से होता हुआ वरघोड़ा पीपली बाजार स्थित जैन मंदिर उपाश्रय पहुँचकर धर्मसभा में परिवर्तित

हुआ। जुलूस के दौरान जगह-जगह गवली की गई। रास्तों में अलग-अलग मंडलों द्वारा पानी एवं गुलाबजल द्वारा वरघोड़े का स्वागत किया गया। धर्मसभा में मंच पर सभी अतिथि, श्रीसंघ के उपाध्यक्ष श्री प्रवीणजी कोलन, चातुर्मास समिति के अध्यक्ष श्री तेजमलजी मेहता बोदीनावाला, श्रीसंघ महासचिव प्रदीप सिसोदिया, प्रकाश मोदी, विजय आंचलिया, शांतिलालजी कावड़िया, राजमलजी धाड़ीवाल, इंदरमलजी दसेड़ा, चातुर्मास समिति महासचिव हेमेन्द्रराजजी चौरड़िया मंच पर उपस्थित थे।

सर्वप्रथम गुरुदेव के चित्र पर माला, धूप-दीप प्रज्वलन किया गया। तत्पश्चात् स्वागत गीत श्रीमती वर्षा रुणवाल ने प्रस्तुत किया। बालिका परिषद् से संजोली मेहता एवं साथीगण द्वारा नवकार मंत्र पर आधारित नृत्य की प्रस्तुति दी गई। अतिथियों का स्वागत पुष्पमालाओं से श्रीसंघ, चातुर्मास समिति व परिषद् परिवार द्वारा किया गया। शांतिलालजी दसेड़ा द्वारा अपने उद्बोधन में पूज्य साध्वीजी म.सा. के प्रवेश से लेकर वर्तमान तक जारी और पूर्ण हुई तपस्याओं, आध्यात्मिक कार्यक्रमों, गुरुदेव के जन्म से लेकर देवलोक तक की जीवनी नाट्य रूप में प्रस्तुत की गई। जो जावरा श्रीसंघ के लिए ये ऐतिहासिक पल रहे। जबभी साध्वीजी म.सा. के दर्शन होंगे तब ये सारी बातें व चित्र याद आयेंगे।

श्री मनोहरजी पौराणिक ने अपने उद्बोधन में कहा कि क्रियोद्धार नगरी पर पूज्य गुरुदेव ने छड़ी चामर पालकी का त्यागकर संयम का मार्ग अपनाया था। पूज्य साध्वीजी म.सा. के बारे में कहा कि श्रीसंघ जावरा भाग्यशाली है जिसे ऐसी साध्वीजी म. सा. का चातुर्मास होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। श्री चेतन्यजी कश्यप ने कहा कि हमने पूज्य आचार्यश्री से विनती की है कि रतलाम में चातुर्मास हो, लेकिन अवसर प्राप्त नहीं हुआ। पूज्यश्री साध्वीजी म.सा. का अगले वर्ष रतलाम में चातुर्मास हो ऐसी विनती की है। हम भाग्यशाली रहेंगे यदि आपका चातुर्मास हमें मिले।

अतिथियों का बहुमान श्रीसंघ एवं चातुर्मास समिति के पदाधिकारियों द्वारा शाल, माला एवं श्रीफल से किया गया। पूज्य म.सा. जी ने अपनी वाणी में कहा कि जैन समाज में सर्वाधिक महत्व तप का है। तप बल के आधार पर ही भगवान आदिनाथ एवं महावीर

स्वामीजी ने साढ़े बारह वर्षों की तपस्या करके केवल ज्ञान पाया था। कर्मों की निर्झरा में जप व तप का विशेष महत्व है। जप के द्वारा व्यक्ति को शांति प्राप्त होती है वहीं तप के माध्यम से मानव अपनी आत्मा का शुद्धिकरण कर सकता है। मंत्र शुद्धि के साथ जप करने से गंभीर बीमारियों से मुक्ति भी मिल सकती है। पूज्य म.सा. ने कहा कि हम शरीर की शुद्धि के लिए ही प्रयास करते हैं जबकि ऐसे प्रयास आत्मा की शुद्धि के लिए भी होने चाहिए। आत्मा की शुद्धि तप के माध्यम से ही संभव है। जिस प्रकार स्वर्ण को तपाकर शुद्ध किया जाता है, उसी प्रकार तप के माध्यम से आत्मा की शुद्धि संभव है।

इस मौके पर बड़ी संख्या में समाजजन उपस्थित थे। संचालन डॉ. सुरेशजी मेहता एवं अजीतजी चत्तर ने किया। आभार हेमेन्द्राजजी चौरड़िया नानुभाई ने माना। कार्यक्रम का संपूर्ण लाभ लेने वाले लाभार्थी स्व. श्री बसंतीलालजी कोलन की स्मृति में धर्मपत्नी सोहनबाई कोलन, सुपुत्र अजीतकुमार-श्रीमती मीनादेवी, अभयकुमार-श्रीमती सरोज देवी, प्रवीणकुमार-श्रीमती चंदनबाला, पौत्रः दर्शन-श्रीमती सोनम, अर्पित, सुमित, रुचित, खुशबु, शिल्पा कोलन परिवार, जावरा फर्म : चाँदमल अजीतकुमार जावरा रहे। यह जानकारी चातुर्मास समिति प्रचार प्रसार सचिव सचिन चत्तर ने दी।

जावरा में भव्य रथयात्रा एवं तपस्वी के बहुमान समारोह की झलकियाँ

धर्मसभा को संबोधित करते हुए पूज्य साध्वीजी म.सा.

अतिथियों का शाल श्रीफल से श्रीसंघ द्वारा बहुमान

अतिथियों द्वारा पत्रिका का विमोचन

धर्मसभा में उपस्थित समाजजन

वरघोड़े में शामिल हाथी पर विराजित लाभार्थी परिवार

वरघोड़े में आचार्य श्री का फोटो पालकी में ले जाते हुए समाजजन

गुन्टूर। धर्मनगरी गुन्टूर नगर की धन्यधरा पर सांवत्सरिक क्षमापना एवं विविध आराधनाओं की अनुमोदना हेतु दिनांक 28.09.2015 से दिनांक 02.10.2015 तक पंचान्हिका महोत्सव का आयोजन साध्वीश्री आत्मदर्शनाश्रीजी आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। चातुर्मास अन्तर्गत अट्ठाई पारने 8 अट्ठाई के दो, 36 उपवास के 1, मासक्षमण के 1, सिद्धी तप के आठ, 16 उपवास एवं ऊपर के तीन, 9 से 15 उपवास के ग्यारह सहित अनेक तपस्वियों ने भाग लिया।

श्री अभिधान राजेन्द्र कोष जीवंत ज्ञानतीर्थ है-मुनि वैभवरत्नजी

हिन्दी में अनुवादित प्रथम भाग का लोकार्पण सम्पन्न

पीएचडी करने पर मुनिश्री डॉ. की उपाधि से सम्मानित

अमृतसर। आज नहीं युगों-युगों से इस सत्य को कोई झुठला नहीं सका है कि हिन्दुस्तान की संस्कृति प्राचीन ऋषि-मुनियों, संतों, तपस्वियों के गहन चिंतन पर आधारित है। किसी भी समाज, धर्म या देश के विकास का श्रेय सबसे पहले देश में विद्यमान गुरु भगवंतों, संत मंडल को जाता है जिनकी प्रेरणा अथवा मार्गदर्शन से समस्त कार्य सफल हो जाते हैं। समाज में बुराई न बढ़े, व्यसन न बढ़े इस हेतु

भी हमारे देश के समस्त संत मंडल सदैव तत्पर रहते हैं। किसी भी धर्म, संस्कृति का त्यौहार सच्चे अर्थों में धर्मगुरुओं के कारण ही सार्थक उत्सव रूप बनता है, चाहे पुण्यात्मा हो या धर्म से भटका साधारण व्यक्ति, उन्हें सद्मार्ग दिखा परमात्मा के द्वार के करीब पहुँचाने का कार्य संत ही करते हैं।

उक्त आशय के विचार राष्ट्रसंत आचार्यश्री जयंतसेन सूरिश्वरजी के

शिष्यरत्न मुनिश्री डॉ. वैभवरत्न विजयजी म.सा. ने जैनाचार्य श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरिश्वरजी म.सा. द्वारा रचित श्री अभिधान राजेन्द्र कोष ग्रंथ पर चर्चा एवं ग्रंथ के हिन्दी में अनुवादित प्रथम भाग 'शब्दों के शिखर' के विमोचन पर व्यक्त किए। मुनिश्री ने बताया कि जैन समाज के आधारभूत महा चमत्कारिक पुरूष पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरिश्वरजी का जन्म आज से 2 सदी पहले हिंदुस्तान की पावन भूमि भरतपुर नगरी में हुआ था। जैन धर्म की श्रमण परंपरा से जुड़कर विशिष्ट व्यक्तित्व के धनी श्री आचार्य गुरुदेव ने बाल्यकाल में ही संसार त्याग कर विशेष शक्ति को धारण किया। ज्ञान, ध्यान और तपोबल से 83 साल की उम्र तक भारत की पुण्यधरा पर हजारों किलोमीटर की यात्रा की। जैन धर्म के कड़क नीति नियमों का पालन करते स्वयं उनका जीवन एक मिसाल बन गया। गाँवों से लेकर नगरों तक मानवसेवा के अनेक कार्य किए। उत्कृष्ट जीवन व्यतीत करते हुए सर्वोच्च विचारों को लेकर हजारों सदियों तक जीवंत रहे, ऐसे ज्ञानतीर्थ का निर्माण किया, जिसकी पहचान 'श्री अभिधान राजेन्द्र कोष' नाम रूप में प्रचलित है।

गुरुदेव राजेन्द्रसूरिश्वरजी ने इस ग्रंथ की शुरूआत 63 साल की उम्र में की थी। लगभग साढ़े तेरह साल तक ज्ञान संयोजन का यह विशाल कार्य जारी रहा। इस ग्रंथ की रचना के पीछे उद्देश्य विस्तृत साहित्य निधि सागर को गागर में समाहित करना था। अल्प होकर भी ग्रंथ में लगभग साढ़े चार लाख श्लोकों का समावेश है। इस ग्रंथराज की महिमा 125 साल से प्रज्ञावान पुरुष सुन रहे हैं। संस्कृत-प्राकृत का यह ग्रंथ दिल्ली पार्लियामेंट में जैन आचार्य देवेश श्री जयंतसेनसूरिश्वरजी म.सा. से तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम ने स्वीकारा था। जैनाचार्य श्रीमद् विजयराजेन्द्रसूरिश्वरजी म.सा. की समाधि मध्यप्रदेश के राजगढ़ के समीप स्थित मोहनखेड़ा तीर्थ में है जो विश्वप्रसिद्ध है। जैन-अजैन सभी धर्म के अनुयायी हजारों की संख्या में प्रतिदिन यहाँ आते हैं।

मुनिश्री ने कहा कि अभिधान राजेन्द्र कोष का विशाल साहित्य नई पीढ़ी तक पहुँचे इसीलिए उसका हिन्दी अनुवाद हो रहा है। इस अनुवादित संस्करण से भी भारतीय ज्ञान साहित्य में नया शंखनाद होगा।

मंच पर मौजूद मुंबई मेयर श्रीमती

शेनल अम्बेकर ने कहा कि यह हमारा सौभाग्य है कि आज हमें ऐसे महान संत का सान्निध्य मिला और मुनिश्री डॉ. वैभवरत्न विजयजी द्वारा ऐतिहासिक ग्रन्थ 'श्री अभिधान राजेन्द्र कोष' के हिन्दी में अनुवादित 'शब्दों के शिखर' प्रथम भाग का विमोचन आप सभी महानुभावों की मौजदूगी में किया जा रहा है। हिन्दी में अनुवादित रचना से आमजन को इसे समझने में अत्यन्त सुविधा होगी। इस अवसर पर केन्या के साविली इंस्टीट्यूट से मुनिश्री द्वारा जैन बॉयोलाजी में पीएचडी करने पर उपाधि प्रदान करते हुए डॉ.सुब्रह्मण्यम ने कहा कि यह मेरा सौभाग्य है कि आज मैं मुनिश्री को पीएचडी की डिग्री के साथ डॉ.की उपाधि प्रदान कर रहा हूँ। मुनिश्री के आशीर्वाद की कामना करते हुए आपने प्रभु से उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। समारोह में बीएमसी निर्देशक श्री लक्ष्मण वाटकर, अतिरिक्त टेक्सटाइल मिनिस्टर श्री के. बालाराजू, मीरा–भायंदर मेयर श्रीमती गीता जैन, विधायक नरेन्द्र मेहता, देशभर से उपस्थित विभिन्न आईएएस, आईपीएस आधिकारियों के साथ मुंबई के जैन समाज के वरिष्ठ समाजजन एवं उद्योगपति मौजूद थे।

विनम्रता महान गुण

- लोगों से कभी गलत व्यवहार न करें। सदैव विनम्रता से पेश आएं।
- दूसरों की समस्याओं को ध्यान से सुनें। यदि आप उन समस्याओं का समाधान कर सकते हैं, तो अवश्य मदद करें। यदि नहीं कर सकते हों, तो उनका मजाक न उड़ायें।
- मदद करें तो खुश होकर करें।
- स्वयं कम बोलें, दूसरों को बोलने का पूरा अवसर दें।
- यदि आप किसी को कुछ सिखा रहे हैं तो गुस्से को अपने ऊपर हावी न होने दें। प्यार से सिखायें।
- गलती होने पर क्षमा मांगने से न कतरायें।
- घर आये मेहमानों का दिल से स्वागत करें, उन्हें बोझ न समझें।
- मेहमानों के आगे घर का रोना न रोयें। ऐसा करने से उनकी नजरों में आपकी छवि धूमिल ही होगी। अपनी गरीबी को सबके सामने उजागर न करें, न ही अपनी अमीरी का घमंड दिखायें।
- बहस, विवादों से स्वयं को दूर रखें।
- किसी से सहयोग लेते समय नम्रता से बात करें। कृतज्ञता ज्ञापित करें।
- परिवार में मिल-जुलकर रहें। सबकी खुशी में साथ दें।
- एकांत में बैठकर अपने दोषों को परखें और प्रयास करें कि अपने दोषों को पुनः न दोहरायें।
- जिन्हें आप पसंद नहीं करते उन्हें अपमानित भी नहीं करें।

संघ की राष्ट्रीय बैठक सम्पन्न

राष्ट्रसंत सा. का सान्निध्य; श्री वाघजीभाई वोरा ने की अध्यक्षता

पेपराल। परमपूज्य सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत जैनाचार्य, संघ एकता के शिल्पी डॉ.श्रीमद् विजयजयंत सेन सूरिश्वरजी म.सा. के पावन सान्निध्य में अ.भा.श्री सौधर्म वृहत्तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक संघ की बैठक दिनांक 6 अक्टूबर 2015 को समाज के समस्त वरिष्ठजनों एवं पदाधिकारियों की उपस्थिति में सम्पन्न हुई। आरंभ में श्रीसंघ के राष्ट्रीय परामर्शदाता श्री चैतन्यजी कश्यप, म.प्र. के स्कूल शिक्षामंत्री श्री पारसजी जैन, अध्यक्ष श्री वाघजी भाई वोरा, महामंत्री श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा, उपाध्यक्ष श्री शांतिलालजी रामानी एवं अन्य पदाधिकारियों ने दादा गुरुदेव के चित्र के सम्मुख दीप प्रज्वलित किया।

इसके बाद सभी उपस्थित पदाधिकारियों ने पूज्य गुरुदेव का सामूहिक गुरुवंदन किया। गुरुवंदन वरिष्ठ मुनिराज श्री नित्यानंदविजयजी म.सा. ने करवाया। गुरुदेव के मंगलाचरण के पश्चात् बैठक की कार्यवाही आरंभ हुई। पूज्य गुरुदेव ने फरमाया कि वर्षों के बाद भारत के समस्त प्रांतों से बड़ी संख्या में पधारे पदाधिकारियों को देखकर प्रसन्नता हो रही है। आपने फरमाया कि सभी समाजजन, कार्यकारिणी के सदस्य सुसंगठित रहें ताकि हर परिस्थिति का सामना कर सकें। हमें यह तय कर लेना है कि संघ में ऐसी किसी भी मानसिकता का निर्माण नहीं होने देंगे जिससे समाज को नुकसान हो। वर्तमान समय में सबके मन में समाज की शांति, समाज के उच्च गौरव, समाज के प्रति आस्था और समर्पण का जो भाव है, वह निरंतर बना रहना चाहिए। कभी भी किसी भी स्तर पर छोटी से छोटी दुविधा भी यदि हो तो सब मिलकर उसका निराकरण करें। समाज को संगठित रखें। समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझकर पूर्ण समर्पण भाव से पूरी निष्ठा से कार्य करें।

बैठक का संचालन कर रहे राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा ने बैठक के विषय से अवगत कराते हुए

आगे बताया कि हम लोग समाज, संघ एवं उनकी प्रवृत्तियों और गतिविधियों पर विचार हेतु एकत्रित हुए हैं। इसी प्रकार संगठित रहते हुए समाज एवं संघ की आंतरिक भावना के अनुरूप कार्य करते हुए समाज को सुदृढ़ बनाने की आवश्यकता है।

राष्ट्रीय अर्थ संयोजक श्री शांतिलालजी रामाणी (राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष) ने अपनी भावनाएं व्यक्त करते हुए कहा कि हम बैठक में संकल्प लें कि हमारे दिलों में हमेशा राष्ट्रसंत साहेब का नाम रहेगा। गुरुदेव का नाम पूरे विश्व में फैले। हम सब एक हैं और चाहते हैं कि श्रीसंघ की एकता बनी रहे। हमें गांव-गांव जाकर बैठक कर लोगों के दिलों में व्याप्त भ्रम को निकालना होगा।

म.प्र. के शिक्षामंत्री तथा परिषद् के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री पारसजी जैन ने कहा कि मैं आज जो भी हूँ वह गुरुदेव की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से हूँ। मेरा समस्त समाजजनों से निवेदन है कि गुरुदेव के स्वास्थ्य के प्रति सजगता रखें। जहाँ भी गुरुदेव का चौमासा या विहार आदि हो वहाँ गुरुदेव के स्वास्थ्य की अनुकूलता को देखकर ही उनके दर्शन, धर्मचर्चा आदि का निर्धारण करें। एक अकेला व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता परन्तु जब सब मिलकर कार्य करते हैं तो असंभव कार्य भी पूर्ण हो जाता है। हमें समाज की आखिरी पंक्ति के व्यक्ति को भी सहयोग एवं सद्भाव से साथ लेकर चलना है।

राष्ट्रीय परामर्शदाता श्री चेतन्यजी कश्यप ने अपने उद्बोधन में कहा कि संघ के साथ जुड़कर एवं आचार्य गुरुदेव के आशीर्वाद से हर कार्य संभव है। श्रीसंघ की स्थापना दादा गुरुदेव ने समाज की विसंगतियों को दूर करने, समाज के बिखरे हुए भक्तों को एकसूत्र में पिरोने हेतु की। तरुण परिषद्, नवयुवक परिषद् आदि संगठन अपने स्तर पर कार्य करें। श्रीसंघ सदैव उनके साथ रहेगा। पूज्य गुरुदेव के सतत भ्रमण एवं एकता के प्रयासों से ही आज संघ एक है। हम हमेशा सही दिशा में आगे बढ़ें जिससे साधु-साध्वी व समाज का गौरव निरंतर बढ़ता रहे। हमारा कार्य समाज को अनुशासित रखने के साथ विभिन्न स्थानीय संघों को समर्थन देना है।

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री ओ.सी. जैन ने कहा कि हम श्रीसंघ को और भी संगठित स्वरूप और मजबूती प्रदान करें। सब लोग विभिन्न प्रांतों से उग्र विहार करके यहाँ गुरुदेव के समक्ष

समाज के चिंतन के लिए उपस्थित हुए हैं। निश्चित ही हम समाज को उच्च शिखर पर ले जाएंगे।

परिषद् के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रमेशजी धाड़ीवाल ने कहा कि अल्प सूचना पर हम सभी यहाँ उपस्थित हुए हैं जो गुरुदेव एवं समाज के प्रति हमारी निष्ठा एवं समर्पण को दर्शाता है। गुरुदेव भी प्रतिक्षण स्वयं के स्वास्थ्य की चिंता किए बिना अपने भक्तों पर सदैव आशीर्वाद बरसाते हैं। हमारे पास ऊर्जा तो बहुत है परन्तु इसे किसी उद्देश्य पर केन्द्रीकृत करने की आवश्यकता है। ऐसे लोग जिनमें न तो निष्ठा होती है और न ही आस्था होती है, ऐसे लोगों से हमें भ्रमित होने से बचकर पूर्ण समर्पण भाव से कार्य करना है।

राष्ट्रीय मंत्री मनोहरलालजी पौराणिक ने कहा कि समाज एवं संघ के साथ गुरुदेव एवं समस्त मुनि भगवंतों के प्रति भी संघ का दायित्व है। गुरु की निंदा करने वाला कभी तर नहीं सकता। चाहे त्रिस्तुतिक संघ में लोग कम हों परन्तु गुरुदेव के आशीर्वाद से इसमें इतनी ऊर्जा व शक्ति है कि इस पर कोई दाग नहीं लग सकता। संगठन में वैर-विरोध का स्थान न हो। राष्ट्रसंत साहब के आशीर्वाद से ही श्रीसंघ की जाहोजहाली है और हमेशा रहेगी।

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सोहनलालजी पारिख ने अपने सुझाव में कहा कि पूज्य गुरुदेव के स्वास्थ्य के प्रति समाज का प्रत्येक व्यक्ति सजग रहे। व्यक्तिगत चर्चा, दर्शन आदि में गुरुदेव की अनुकूलता को देखते हुए निश्चित समय पर करें। राष्ट्रीय स्तर पर पत्र-व्यवहार आदि के माध्यम से एक-दूसरे से जुड़े रहें।

वरिष्ठ मुनिराज श्री नित्यानंद विजयजी म.सा. ने श्रीसंघ के पदाधिकारियों के निवेदन पर अपने आशीर्वचन में फरमाया कि मुनिमंडल की भावना को समझकर गुरुदेव ने जन्मधरा पेपराल पर चातुर्मास की स्वीकृति देकर बहुत कृपा बरसाई है। हमें गुरुदेव की जन्मस्थली पर उनकी सेवा करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। आपश्री ने श्रीसंघ को बिखरे मोतियों को बटोर कर पुनः माला रूप देने के लिए निर्देशित किया है। सभी पदाधिकारियों से यही कहना है कि आप जिस श्रद्धा से जुड़े हैं, उसमें कभी कमी नहीं आने दें। चाहे वह परिवार हो, समाज या संघ हो। यदि आपका संगठन मजबूत होगा तो श्रीसंघ पर कभी कोई विपत्ति नहीं आ सकती। गुरुदेव तो मलयागिरि के चंदन के समान हैं जो हमेशा सुगंध ही देते हैं।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री वाघजीभाई वोरा ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि पेपराल में चातुर्मास के दौरान हुई जलप्रलय की घटना ने सभी गुरुभक्तों को चिंतित कर दिया था किन्तु करुणासागर आचार्य श्री ने अपने तप एवं नवकार की शक्ति से स्वयं की चिंता किए बिना श्रीसंघ को आसपास के क्षेत्रों में राहत कार्य हेतु सजग किया। श्रीसंघ की एकता एवं समर्पण भाव का ही परिणाम था कि सम्पूर्ण स्थिति को सहज तरीके से सम्हाल लिया गया। हमें इसी तरह से हमेशा मिल-जुलकर कार्य करना है। श्रीसंघ या समाज की छोटी से छोटी समस्या का समाधान पूरे विवेक एवं आपसी भाईचारे के साथ करना है। हमारा यही संकल्प होना चाहिए कि आचार्यश्री के नाम से पूरे भारतवर्ष में श्रीसंघ का वैभव एवं ख्याति निरंतर बढ़ती रहे। समाज का कोई भी नागरिक किसी भी कारण या अभाव से पिछड़े नहीं।

समस्त पदाधिकारियों के उद्‌बोधन पश्चात् बैठक को अल्प विराम दिया गया। विश्राम पश्चात् दोपहर में पुनः बैठक आरंभ हुई जिसमें समस्त पदाधिकारियों ने खुलकर अपने विचार प्रस्तुत किए। संघ के संचालन विषयक कई सुझाव विचारार्थ सामने आए।

नवकार जाप संपन्न

0 झकनावदा (मनीष कुमट द्वारा)। मूर्ति पूजक जैन श्रीसंघ एवं अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन तरुण परिषद् इकाई द्वारा संत शिरोमणि वर्तमान आचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के स्वास्थ्य की मंगल कामना हेतु परिषद् परिवार द्वारा आचार्यश्री के फोटो के सामने एकत्रित होकर नवकार जाप कर गुरुदेवश्री के मंगल स्वास्थ्य की कामना की। परिषद् अध्यक्ष श्री मनीष कुमठ, श्री मनोहरलाल कटकानी, श्री मोनु सेठिया व श्री बबलु पिपाड़ा ने पेपराल पहुँचकर पूज्य आचार्यश्री के दर्शन, वंदन कर आचार्यश्री से सुख-साता पूछते हुए आशीर्वाद प्राप्त किया। आचार्यश्री से श्री केशरियानाथ जैन मंदिर की प्रतिष्ठा पूर्ण करवाने की विनती भी की।

श्रद्धांजलि अर्पित

झकनावदा। पद्मश्री सहित अनेक पुरस्कारों से सम्मानित जैन समाज के गौरव, संगीत सम्राट श्री रविन्द्रजी जैन के निधन पर झकनावदा राजेन्द्र जैन तरुण परिषद् परिवार, परिषद् अध्यक्ष श्री मनीष कुमट, श्री मनोहर कटकानी, श्री मोनू सेठिया, श्री अर्जुन सेठिया ने भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

पर्युषण पर्व
धूमधाम से मनाया गया

खाचरौद। नगर में पर्वाधिराज पर्युषण पर्व बड़ी ही धूमधाम एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। नूतन श्री राजराजेन्द्र सूरि जैन पौषधशाला में प्रतिदिन शास्त्र वाचन के साथ अन्य कार्यक्रम आयोजित किए गए। प्रथम दिवस शास्त्र की बोली सरदारमलजी राजमलजी वनवट परिवार द्वारा बोली गई। शास्त्र वाचन के पश्चात् कल्पसूत्र की बोली लगाई गई। चैत्य परिपाटी बैंड बाजों एवं ढोल-ढमाकों के साथ निकाली गई। नगर के 10 मंदिर में दर्शन करते हुए पौषधशाला में इसका समापन हुआ।

पर्युषण पर्व के दूसरे दिन 11 सितंबर को अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन महिला परिषद् द्वारा दोपहर में नवकार मंत्र जाप का आयोजन किया गया। पर्व के तीसरे दिन 12 नवंबर को कल्पसूत्रजी का चल समारोह पौषधशाला से बैंड-बाजों के साथ निकाला गया जो नगर के प्रमुख मार्गों से होता हुआ कल्पसूत्रजी की बोली लगाने के लाभार्थी श्री कांतिलालजी गेलड़ा के निवास स्थान पर पहुंचकर विसर्जित हुआ। श्री गेलड़ा के निवास स्थान पर रात्रि में रंगारंग भक्ति का आयोजन किया गया।

चतुर्थ दिवस 13 सितंबर को कल्पसूत्रजी का वाचन किया गया। पंचम दिवस 14 सितंबर को दोपहर में भगवान महावीर के जन्मोत्सव का कार्यक्रम पौषधशाला में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर माता त्रिशला को आए 14 स्वप्न, पालनाजी, कल्पवृक्ष, अष्टप्रकारी पूजन, गुरुदेवजी की आरती आदि की बोली लगाई गई जिसमें समाजजनों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया। अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् ने केसर के छापे लगाने की बोली का लाभ लेकर संघ के समस्त सदस्यों को छापे लगाये। इसके पश्चात् बैंड बाजों व ढोल-ढमाकों के साथ नगर के सभी जिन मंदिरों में चल समारोह के रूप में पहुंचकर जन्मोत्सव मनाया गया।

पर्व के षष्टम दिवस 15 सितंबर को समीपस्थ ग्राम धानासुता स्थित श्री शांतिनाथजी मंदिर में जन्मोत्सव मनाया गया। नगर के तीन जैन मंदिरों श्री चिंतामण पार्श्वनाथ जैन मंदिर रावला, श्री आदिनाथ मंदिर भटेवरा समाज रावला एवं श्री आदेश्वर जैन मंदिर आदिश्वर गली में धूमधाम से जन्मोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर अ.भा.श्री राजेन्द्र नवयुवक परिषद् द्वारा प्रश्न मंच का आयोजन भी किया गया।

पर्व के सातवें दिवस 16 सितंबर

को नगर के दो जैन मंदिरों नागदा रोड स्थित श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ मंदिर एवं जावरा रोड स्थित श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जैन दादावाड़ी मंदिर में जन्मोत्सव मनाया गया। जन्मोत्सव अन्तर्गत रात्रि में भक्ति संध्या का आयोजन भी मंदिर परिसरों में किया गया। पर्व के आठवें एवं अंतिम दिवस संवत्सरी महापर्व अवसर पर 17 सितंबर को प्रातः से ही श्री राजेन्द्र सूरी जैन पौषधशाला के प्रांगण में श्रावक-श्राविकाओं सहित समाजजन बड़ी संख्या में प्रवचन हाल में उपस्थित हुए। लगभग 160 पुरुषों एवं महिलाओं द्वारा पौषध किया गया। इनमें छोटे बच्चों की संख्या लगभग 15 थी। प्रवचन पश्चात् चैत्य परिपाटी बैंड बाजों व ढोल ढमाकों के साथ पौषधशाला से निकाली गई। बड़ी संख्या में समाजजनों ने चैत्यपरिपाटी में भाग लिया। नगर के समस्त जैन मंदिरों में दर्शन कर पुनः पौषधशाला पहुंची जहाँ समापन हुआ। शाम को पौषधशाला में संवत्सरी महापर्व पर प्रतिक्रमण का आयोजन किया गया जिसमें संघ के समस्त सदस्यों ने एक-दूसरे से क्षमायाचना की।

पर्युषण पर्व के दौरान प्रतिदिन शास्त्र वाचन एवं पर्यूषण पर्व की आराधना परम गुरुभक्त श्री राजेश जी सेठिया द्वारा सम्पन्न कराई गई। उनके साथ उनके सहयोगी के रूप में संदीप मांडोत एवं पुनित मेहता द्वारा भी शास्त्र वाचन किया गया । प्रतिदिन कार्यक्रम का संचालन श्री धरमचंद नांदेचा ने किया।

पर्युषण पर्व समाप्ति के अगले दिन दिनांक 18 सितंबर को प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी आदिनाथ ग्रुप द्वारा श्रीसंघ के सामूहिक पारणे का आयोजन मोरसली धर्मशाला में रखा गया। इसमें तेले (तीन उपवास) से अधिक तपस्या करने वाले समाजजनों के पारणे की बैठक व्यवस्था अलग से रखी गई। पर्युषण पर्व काल में समाज के लगभग 60 महानुभवों द्वारा तेले (3 उपवास) की एवं 10 महानुभावों द्वारा अट्ठाई (8 उपवास) की तपस्या की गई।

ठाणे (के.के.संघवी)। 225 पदयात्रियों के साथ शांतिदल चैत्य परिपाटी ने तीर्थ मानपाड़ा की 7121 वीं पदयात्रा हेतु ठाणे तीर्थ के 5 जिनालय व ठाणे में विराजित सभी आचार्य भगवत, पू.साधु व साध्वी भगवंत म.सा. के दर्शन, वंदन हेतु 2 सितंबर 2015, शुक्रवार प्रातः 6 बजे पू. आचार्य अजितशेखर सूरिश्वरजी म.सा. के मांगलिक श्रवण कर प्रस्थान किया।

प्रातः 9.30 बजे थाने तीर्थ में नवकारसी, संघपूजन व तपस्वियों का अभिनंदन किया गया। चैत्य परिपाटी का संपूर्ण लाभ संघवी कुंदनमल भुताजी परिवार आहोरवालों ने लिया। सभी संघों ने संघवी परिवार का तिलक, माल्यार्पण, शाल से बहुमान किया। पदयात्रा संयोजक के.के.संघवी ने आभार प्रकट किया।

31 उपवास की तपस्या पूर्ण

भाटपचलाना। परमपूज्य राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के शुभाशीर्वाद और पूज्य मुनि श्री विद्वदरत्न विजयजी म.सा. की पावन प्रेरणा से श्री जैन श्वेतांबर मंदिर तीर्थ रूनिजा के अध्यक्ष श्री मांगीलालजी सकलेचा की पौत्रवधु श्रीमती कीर्ति –आशीषजी सकलेचा के महामृत्युंजय तप (31 उपवास) की तपस्या पूर्ण होने के प्रसंग में 22 सितंबर 2015 को प्रातः भव्य वरघोड़ा निवास स्थान से प्रारंभ होकर नगर भ्रमण करते हुए जैन मंदिर पहुंचा। यहाँ पधारे अतिथियों द्वारा तपस्वी का बहुमान किया गया। इस अवसर पर स्वामी वात्सल्य का लाभ सकलेचा परिवार द्वारा लिया गया।

परतुर नगर। करीब 7 वर्ष पूर्व दीर्घदृष्टा आचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. ने परतूर नगर में श्रीसंघ की स्थापना की थी। श्री बाबुलालजी अरविंदकुमार जी बैंगलोर वालों ने मंदिर बनवाकर इसी वर्ष श्री शीतलनाथ जी भगवान, श्री मुनि सुव्रत स्वामीजी, श्री पार्श्वनाथजी, श्री आदिनाथजी , प्रभु महावीर स्वामीजी की सुन्दर प्रतिमाओं के साथ अनंत लब्धि निधान श्री गौतमस्वामीजी एवं कलिकाल कल्पतरु श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरिश्वरजी म.सा. की प्रथम प्रतिमा की मुनिद्वय डॉ.सिद्धरत्नविजयजी एवं श्री विद्वद्रत्न विजयजी म.सा. द्वारा प्रतिष्ठा करवाई गई थी।

यहां पर्व की आराधना करवाने के लिए पूज्य गुरुदेव के आदेश से टांडा निवासी श्री जिनेन्द्रकुमार जी बाठियां पधारे थे। जिन्होंने प्रथम दिन अष्ठान्हिका पर सुन्दर सरल शब्दों में व्याख्यान दिया। इससे प्रेरणा पाकर कई आराधकों ने तप, आराधन, नियमित प्रभु दर्शन, पूजन करने के नियम ग्रहण किए। गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरिश्वरजी म.सा. की अष्टप्रकारी पूजन पढ़ाई गई। कल्पसूत्र का वाचन किया गया जिसका समाज के आबाल वृद्ध सहित जैनेत्तर लोगों ने भी श्रवण कर भगवान श्री महावीर स्वामी का जन्मवाचन समारोह मनाया। चढ़ावे बोले गए। 'माँ' पर हुए प्रवचन में बच्चों को माँ की सेवा करने का संकल्प दिलाया गया। एक कार्यक्रम 'प्रभु मिलन–प्रभु से बातचीत' पर रखा गया था जिसे सभी लोगों ने भाव–विभोर होकर सुना। पश्चात् प्रभु आरती उतारी गई।

सामायिक क्यों और कैसे? विषय पर प्रवचन से प्रभावित होकर श्रावक–श्राविकाओं ने वर्षभर में पांच हजार सामायिक करने का संकल्प लिया। प्रतिदिन प्रभु की सुन्दर अंगरचना पुजारीजी एवं नगर की महिलाओं द्वारा की जाती थी। देर रात तक प्रभु भक्ति के कार्यक्रम चले।

सरदारमलजी मेहता नहीं रहे

खाचरौद। गुरुदेव राष्ट्र संत आचार्यदेव श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के परम भक्त, दशरथ मेहता , इंदौर परिषद् के अध्यक्ष दिनेश मेहता, दिलीप मेहता के पिताजी, स्थानीय मूर्ति पूजक संघ अध्यक्ष सुरेश मेहता के काका सा. श्री सरदारमलजी मेहता का स्वर्गवास दिनांक 2 अगस्त 2015 को हो गया। श्री मेहता अपने सम्पूर्ण जीवन में समाज सेवा, गुरु भक्ति में सदैव तत्पर रहे। 2 वर्ष पूर्व मेहता परिवार द्वारा आचार्यश्री की पावन निश्रा में खाचरौद से नागेश्वर तीर्थ छः री पालित संघ में अनुमोदनीय भूमिका रही। श्री मेहता ऋषभदेव टेकचंद न्यास के पूर्व ट्रस्टी भी रहे। श्री मेहता की अंतिम यात्रा में बड़ी संख्या में समाजजनों ने उपस्थित होकर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। श्रद्धांजलि सभा को क्षेत्रीय विधायक दिलीपसिंह शेखावत, विजय चौहान, अनोखीलाल भंडारी, स्थानकवासी संघ अध्यक्ष ऋतुराज बुड़ावनवाला, राजेश बनवट, परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री अशोक श्रीश्रीमाल, केन्द्रीय शिक्षामंत्री नीरज सुराणा, यतीन्द्र भवन पालीताणा के न्यासी वीरेन्द्र राठौर, सुरेश छाजेड़ आदि ने संबोधित करते हुए श्रद्धासुमन अर्पित किए। संचालन धर्मचंद नांदेचा ने किया।

तप आराधना की झड़ी

रतलाम। राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के आशीर्वाद से नीमवाला उपाश्रय में चातुर्मासिक अनुष्ठान आराधना उपासना महोत्सव में भाग लेने वाले साधकों ने चातुर्मास के प्रथम दो माह में जाप, पौषध, सामायिक व प्रतिक्रमण में तप-आराधना की झड़ी लगा दी।

महोत्सव संयोजक श्री पारसमल खेड़ावाला ने जानकारी देते हुए बताया कि अगस्त व सितंबर माह में महोत्सव तपाराधना के अन्तर्गत 351 पौषध, 18 लाख जाप, 900 सामायिक, 1800 प्रतिक्रमण, 8 अतिथि संविभाग व्रत की तप आराधना हुई। 68 दिवसीय प्रभु शांतिनाथजी भगवान का जाप किया गया। 8 अक्टूबर से श्री विमलनाथ भगवान के 24 दिवसीय जाप हुए। महामहोत्सव में भाग लेने वाले साधकों के अलावा श्रावक-श्राविकाओं द्वारा संवत्सरी प्रतिक्रमण को मिलाकर लगभग तीन हजार प्रतिक्रमण तथा 9 सौ से अधिक अतिरिक्त सामायिक हुई। नवकार आराधना, दीपक एकासणा, गुप्त एकासणा, अतिथि संविभाग एकासणा में दो सौ से अधिक साधकों ने भाग लिया। पर्यूषण पर्व के दौरान साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म.सा. की

आज्ञानुवर्ती साध्वीजी द्वारा हुए प्रवचन में समाजजनों की भारी उपस्थिति उत्साहवर्द्धक रही। इस अवधि में तीन, पांच, व आठ उपवास की तपस्याएं भी हुईं।

प्रभु विमलनाथ स्वामी के 24 दिवसीय जाप निरंतर

रतलाम। चातुर्मासिक 'अनुष्ठान आराधना उपासना महोत्सव' नीमवाला उपाश्रय पर बुधवार 7 अक्टूबर को श्री प्रभु शांतिनाथ भगवान के 68 दिवसीय जाप का समापन हुआ। इसमें नियमित एवं अन्य साधकों द्वारा 18 लाख से अधिक जाप हुए। गुरुवार 8 अक्टूबर से प्रभु विमलनाथ भगवान के 24 दिवसीय जाप शुरू हुए हैं।

महोत्सव प्रभारी श्रीमती ममता धनसुख भंडारी ने जानकारी में बताया कि 8 अक्टूबर को प्रातः 10.30 बजे से आरंभ हुए 24 दिवसीय प्रभु विमलनाथ स्वामी के जाप में प्रत्येक साधक को 'ऊँ ह्रीअर्हम् श्री विमलनाथ स्वामी ने नमः' की 20 माला अर्थात् 210 जाप प्रतिदिन करना होंगे। जाप आरंभ होने के पूर्व श्रीसंघ अध्यक्ष डॉ.ओ.सी.जैन, वरिष्ठ श्रावक सोहनलाल मूणत, संयोजक पारसमल खेड़ावाला, प्रभारी ममता धनसुख भंडारी ने भगवान विमलनाथ स्वामी की स्थापना कर माल्यार्पण किया। जाप का समापन 31 अक्टूबर को हुआ। महोत्सव अंतर्गत श्री शांतिनाथ प्रभु के जाप तथा अतिथि संविभाग की तपस्या पूर्ण हुई। इसके अतिरिक्त 108 सामायिक, 108 प्रतिक्रमण तथा पौषध की लड़ी में श्रावक-श्राविकाओं द्वारा नियमित तपस्याएं की गईं।

स्केटिंग में स्वर्णपदक हासिल करने पर अभिनंदन

खाचरौद। स्थानीय श्री राज राजेन्द्र जयंतसेन विद्यापीठ विद्यालय के छात्र चयन पिता अजय नांदेचा ने अ.भा.स्तर पर ओपन स्केटिंग की राष्ट्रीय स्पर्धा में भाग लेकर 12 से 14 वर्ष की आयु वर्ग में स्वर्ण पदक प्राप्त कर विद्यालय एवं नगर का नाम गौरवान्वित किया। विद्यार्थी को स्मृति चिन्ह एवं मेडल प्रदान किया गया। इस अवसर पर संस्था अध्यक्ष ज्ञानचंद मेहता, धर्मचंद नांदेचा, प्रदीप छाजेड़, सुनील वागरेचा, अनिल वागरेचा, प्राचार्य श्रीमती शैफाली आर.ओझा सहित समस्त स्टॉफ उपस्थित था। छात्र का एक चल समारोह ढोल-ढमाकों के साथ नगर के मुख्य मार्गों से निकाला गया।

महामंत्र नवकार का सामूहिक जाप सम्पन्न

रतलाम। राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना से नीमवाला उपाश्रय पर महामंत्र नवकार का सामूहिक जाप किया गया। आराधना उपासना महोत्सव में सामायिक, प्रतिक्रमण व पौषध के साथ 24 दिवसीय श्री विमलनाथ स्वामी के जाप किए गए।

महोत्सव संयोजक पारसमल खेड़ावाला ने जानकारी में बताया कि पूज्य गुरुदेव चातुर्मास हेतु पेपराल (गुज.) में विराजित हैं। उनके अच्छे स्वास्थ्य की मंगल कामना से उपाश्रय पर सामूहिक नवकार जाप किया गया। इस अवसर पर श्रीसंघ अध्यक्ष डॉ.ओ.सी. जैन, सर्वश्री कांतिलाल सरसीवाला, सोहनलाल मूणत, गेंदालाल सकलेचा, सुरेशचन्द्र बोराना, मणिलाल सुराना, सुनील गांधी, राकेश घोचा, टेकचंद पितलिया, प्रदीप कटारिया, अभय संघवी, अभय बरबोटा, निलेश लोढ़ा, प्रवीण संघवी, विनय सुराना, नितेश तलेरा सहित बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित थे। सचिव अनोखीलाल भटेवरा ने गुरुभक्ति का मार्मिक गीत प्रस्तुत किया। डॉ.ओ.सी.जैन ने आभार व्यक्त किया।

एक अन्य जानकारी में महोत्सव प्रभारी श्रीमती ममता धनसुख भंडारी ने बताया कि उपाश्रय पर 24 दिवसीय श्री विमलनाथ स्वामीजी के जाप किए गए। प्रत्येक साधक द्वारा 2160 जाप प्रतिदिन किए गए। महोत्सव में जाप के अतिरिक्त सामायिक, प्रतिक्रमण, पौषध की तपस्याएं भी की गईं। इसमें चंदनबाला खेड़ावाला, श्यामा नांदेचा, मोनिका खिमेसरा, संतोष सोनी, प्रेमलता कटारिया, राजकुमारी सकलेचा, कुसुम भंडारी, संध्या गुगलिया, निर्मला पगारिया, ज्योति कटलेचा, यशवंत नांदेचा, राजल सकलेचा, पुष्पा ओरा, सुभद्रा गंग, विमला चौपड़ा, रमिला कोचर, चंद्रकांता खिमेसरा, मधु गंग, शशि संघवी, शांतिलाल सोनी आदि ने भाग लिया।

विद्यार्थी-राज्य क्रीडा स्पर्धा में चयनित

खाचरौद। स्थानीय श्री राज राजेन्द्र विद्या मंदिर हायर सेकेण्डरी के छात्र-छात्राओं ने संभागीय क्रीडा प्रतियोगिताओं में शानदार खेल का प्रदर्शन किया। राज्य स्तरीय प्रतियोगिता हेतु चयनित होकर विद्यालय व शहर का नाम गौरवान्वित किया है।

खो-खो बालिका जूनियर वर्ग में विद्यालय की कु. मनाली सागित्रा, प्राची त्रिवेदी, भूमिका घोचा व जागृति सिंह का नीमच संभागीय प्रतियोगिता हेतु दल में चयन हुआ है। इसी तरह कु. उर्मिला नंदेड़ा का चयन खो-खो मिनी बालिका वर्ग में राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिए उज्जैन संभागीय दल में हुआ है।

विद्यार्थियों की इस सफलता पर प्राचार्य श्री जितेन्द्र जैन, शिक्षण समिति अध्यक्ष श्री ज्ञानचंद मेहता, श्री अनिल वागरेचा, श्री सुनील खेमसरा, श्री माणकलाल चौहान आदि ने हर्ष प्रकट कर अपनी शुभकामनाएं व्यक्त की हैं।

बधाई हो... बधाई हो... बधाई हो...

सुविशाल गच्छाधिपति, राष्ट्रसंत, युग प्रभावक, डॉ. आचार्य देवेश श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के शिष्य मुनिराज श्री संयमरत्न विजयजी म.सा. के पी.एच.डी. कोर्स 'वर्क इन फिलोसॉफी' की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर हार्दिक बधाई। आपने 200 में से 154 याने 77 प्रतिशत अंक प्राप्त कर विक्रम यूनिवर्सिटी उज्जैन में प्रथम स्थान अर्जित कर समाज का गौरव बढ़ाया है।

पू. मुनिराज की इस अनुपम उपलब्धि पर बहुत-बहुत बधाई, बहुत-बहुत अनुमोदना ....

अभिनंदन प्रस्तुतकर्ता

अ.भा.श्रीसौधर्म वृहत्तपोगच्छीय जैन श्वेताम्बर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ,
अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन महिला/नवयुवक/बहु/तरुण एवं
बालिका परिषद् शाजापुर (म.प्र.)

परिषद प्रांगण से

'सब खेलो सब जीतो भक्ति के संग' प्रतियोगिता सम्पन्न

जावरा। साध्वी डॉ.प्रीतदर्शनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 4 की निश्रा में जावरा नगर में चल रहे चातुर्मास अन्तर्गत पर्युषण महापर्व में अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् शाखा जावरा द्वारा 'सब खेलो सब जीतो भक्ति के संग' प्रतियोगिता वृहद स्तर पर आयोजित की गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सुरेशजी पगारिया (अध्यक्ष जैन सोश्यल ग्रुप सेन्ट्रल) ने की। मुख्य अतिथि श्री अजीत जी चत्तर (पूर्व पार्षद एवं महामंत्री मंडी व्यापारी संघ), श्री प्रकाशजी जैन पटवारी सा. (अध्यक्ष श्री जैन श्वेताम्बर सोश्यल ग्रुप) एवं श्री प्रवीणजी मोदी (प्रदेश महामंत्री श्री जैन श्वेताम्बर सोश्यल ग्रुप) थे। उनके साथ मंच पर संघ के महासचिव श्री प्रदीपजी सिसोदिया, चातुर्मास समिति के अध्यक्ष श्री तेजमलजी मेहता बोदिनावाले एवं महामंत्री श्री हेमेन्द्रराज जी चोरड़िया उपस्थित थे।

कार्यक्रम के आरंभ में अतिथियों द्वारा गुरुदेव के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन किया गया। इसके पश्चात् परिषद् साथी श्री अशोकजी नवलक्खा ने मंगलाचरण से प्रतियोगिता का शुभारंभ किया।

परिषद् के सभी पदाधिकारियों व कार्यकारिणी सदस्यों ने अतिथियों का माला से स्वागत किया। इसके पश्चात् 4-4 टीमों को मंच पर बुलाकर उनके बीच प्रश्नोत्तरी कर सही जवाब देने वाली एक टीम को एक खेल खेलने के लिए आमंत्रित किया गया। खेल निश्चित समय में पूर्ण करने वालों को नगद पुरस्कार से सम्मानित किया गया। अंत में बंपर राऊंड हुआ। यह राऊंड सारिका जी कोलन, ज्योतिजी कांठेड़ एवं किरणजी सुराणा ने जीता।

कार्यक्रम के संयोजक अरविंदजी मोदी एवं रूपेशजी सिसोदिया थे। प्रतियोगिता के निर्णायक श्री प्रवीणजी कोलन एवं रमणीक मेहता थे। कार्यक्रम का सफल संचालन अशोकजी नवलक्खा, पारसजी सकलेचा, सचिन चत्तर, जितेन्द्र मेहता, प्रवीण वन्याक्या, निलेश दसेड़ा, पंकज के सहयोग से संजय धारीवाल एवं रूपेश सिसोदिया ने किया। सभी अतिथियों व समाजजनों का आभार परिषद् अध्यक्ष श्री यशवंत चोरड़िया ने व्यक्त किया। श्रीसंघ के सभी वरिष्ठजनों, बच्चों, महिलाओं व पुरुषों ने कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। यह जानकारी परिषद् के प्रचार सचिव श्री मुकेश चोरड़िया ने दी।

एक ट्रक चारा भेंट किया

हुबली। अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् हुबली शाखा एवं श्री जैन मरूधर संघ के तत्वावधान में पर्युषण महापर्व के उपलक्ष में जीवदया के लिए 'एक मुट्ठी अनाज' कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के तहत लोगों से एकत्रित अनाज शहर के अलग-अलग कबूतरखानों में वितरित किया गया। इसी तरह शहर के पूणे-बैंगलूर हाइवे पर स्थित करुणा मंदिर गौशाला में गायों को लापसी बनाकर खिलाई गई। परिषद् द्वारा गौशाला को एक ट्रक चारा भी भेंट किया गया। गौशाला अध्यक्ष श्री भेरुलालजी जैन ने परिषद् के सेवाकार्यों की सराहना की। इस अवसर पर श्री जैन मरूधर संघ के ट्रस्टी श्री चम्पालाल जैन, परिषद् अध्यक्ष श्री ललित जैन एवं सभी सदस्यगण उपस्थित थे। परिषद् सचिव श्री निलेश जैन ने बताया कि कैलाश जैन, गुणवंत कांकरिया, किरण जैन, संजय सेठ के प्रयत्न सराहनीय रहे।

महिला परिषद

रतलाम। महिला परिषद् रतलाम द्वारा संवत्सरी पर्व पर यहाँ विराजित गुरुजनों, साधु-साध्वी भगवंतों से क्षमायाचना की गई। पश्चात् दर्शनार्थ मोहनखेड़ा, अमेझरा, भक्ताम्बर तीर्थ की यात्रा की।

साधु भगवंत में गुजराती उपाश्रय में खरतरगच्छ मरुधर ज्योति मणिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा, आराधना भवन में वीररत्न विजयजी म.सा. आदि ठाणा, धर्मदास श्रावक संघ भवन में मुक्तिप्रभ सूरिजी, वर्धमान श्रावक संघ नीमचौक पर विराजित साध्वीश्री निखिलाश्रीजी म.सा., साधु मार्गी जैन संघ समता सदन में साध्वीजी ज्ञानकुंवरजी म.सा. आदि ठाणा को मिच्छामि दुक्कड़म् कर उनसे क्षमायाचना की गई। तीर्थयात्रा में भाग लेने वाली महिला परिषद् की सदस्याओं में अध्यक्ष ममता भंडारी, श्रद्धा लुणावत, मंजु मेहता, रेखा लुणावत, रमिला सकलेचा, संध्या ओरा, विमला बाफना, सरोज कांसवा, शशि संघवी, ज्योति कटलेचा, दीपा पुँजावत, सारिका डुंगरवाल, रिता कोठारी आदि सम्मिलित थीं।

साध्वीश्री कोमललताश्रीजी म.सा. का कालधर्म

मुंबई (खेतबाडी) मातृहृदया साध्वीजी कोमललताश्रीजी म.सा. चातुर्मासार्थ विराजमान थे । आपके सान्निध्य में जोरदार धर्मप्रभावना निरंतर थी। साध्वीश्री कोमललताश्रीजी का कालधर्म संक्षिप्त रुग्णता के बाद अरिहंत स्मरण करते हुए हो गया। श्री संघ में शोक छा गया। आपकी चकडोल निकाली गई तथा शवयात्रा में हजारों नरनारियों ने भाग लिया। अ.भा. श्री सौधर्मबृहत्पोगच्छीय त्रिस्तुतिक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री वाघजीभाई वोरा ने भी अंतिम संस्कार में भाग लिया। श्री संघ द्वारा शोकसभा की गई तथा आपकी स्मृति में महोत्सव भी किया गया। विस्तृत समाचारों के प्रतीक्षा है।

पर्युषण पर्व धार्मिक आयोजनों के साथ धूमधाम से मना

उज्जैन। पर्युषण पर्व आराधना अन्तर्गत श्री राजेन्द्र सूरि जैन ज्ञान मंदिर नमक मंडी में अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन बहु परिषद् के तत्वावधान में धार्मिक वेशभूषा पर आधारित फेन्सी ड्रेस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। छोटे बच्चों ने मनमोहक वेशभूषाओं में प्रभु की भक्ति की।

इसी तरह श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् द्वारा रंगमहल धर्मशाला में भव्य म्यूजिकल कार्यक्रम 'अक्षयनिधि' का कार्यक्रम हुआ। केबिनेट मंत्री श्री पारस जैन के मुख्य आतिथ्य में आयोजित गरिमामय आयोजन में जैन समाज के उभरते गायक राजेन्द्र पटवा व विकास पगारिया ने धार्मिक स्तवन व भजन प्रस्तुत किए। इस अवसर पर हजारों की संख्या में श्रद्धालुजन उपस्थित थे।

जानकारी में वीरेन्द्र गोलेचा ने बताया कि संगीतमयी संध्या का आयोजन रितेश खाबिया, अभिषेक सेठिया, दीपक डागरिया, नितेश नाहटा, डॉ.संजीव जैन, संजय गिरिया के सकल संयोजन में किया गया। प्रथम पुरस्कार श्रीमती कुसुम नाहर को रु.18351, द्वितीय पुरस्कार के रूप में रु. 12351 रु. श्रीमती अनवेशा डड्डा एवं तृतीय पुरस्कार के रूप में वाशिंग मशीन आरव गाँग को प्रदान की गई। हजारों के अन्य पुरस्कार वितरित किए गए।

जन्मोत्सव मनाया :- पाँचवे दिन भगवान महावीर का जन्मोत्सव मनाया गया। श्री राजेन्द्र सूरि जैन ज्ञान मंदिर में त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ नमकमंडी के तत्वावधान में प्रातः कल्पसूत्र का वाचन किया गया। दोपहर श्रद्धालुओं से खचाखच भरे मंदिर में भगवान महावीर की माता त्रिशला द्वारा भगवान के जन्म के पूर्व देखे गए चौदह सपनों की प्रतिरूप चांदी की प्रतिमाओं को क्रमशः एक-एक प्रदर्शित कर दर्शन एवं पूजन किया गया। अहमदाबाद से पधारे गुरुभक्तों द्वारा भगवान का जन्मवाचन किया गया। जन्मोत्सव की घोषणा होते ही सभी ने एक दूसरे को खोपरा खिलाकर एवं केशर के छापे लगाकर खुशियां मनाईं। भगवान को पालनाजी में विराजित कर पूजन किया गया। संजय कोठारी, मदनलाल रूनवाल, दीपक डागरिया द्वारा संचालित जन्मवाचन में विभिन्न बोलियां बोली

गईं। गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरिश्वरजी की आरती की बोली का लाभ श्रीमती कंचनबाई सुशीलादेवी कोठारी हस्ते संजय कोठारी परिवार ने, भगवान की आरती की बोली का लाभ श्री प्रकाश शैलेन्द्र तलेरा परिवार ने, लक्ष्मीजी के सपने की बोली का लाभ श्री प्रेमकुमार पारसचंद्र तलेरा परिवार ने एवं भगवान को पालनाजी के साथ घर ले जाकर भक्ति करने का लाभ श्री राजमलजी समरथमलजी कोठारी परिवार ने लिया।

जानकारी देते हुए वीरेन्द्र गोलेचा ने बताया कि सभा में म.प्र. के शिक्षामंत्री श्री पारसचंद्र जैन, श्रीसंघ अध्यक्ष राजबहादुर मेहता, गुणमाला बेन नाहर, परिषद् अध्यक्ष अभिषेक सेठिया, नितेश नाहटा आदि उपस्थित थे। जन्मवाचन के पश्चात् भगवान एवं गुरु महाराज की आरती की गई। भगवान के पालनाजी एवं चौदह सपनों की प्रतिरूप चांदी की मूर्तियों के साथ जुलूस निकाला गया। रात्रि जागरण के साथ भक्ति की गई।

बहु परिषद् द्वारा सौलह सतियों का परिचय नाटकीय मंचन से किया गया। परिषद् की सदस्याओं द्वारा क्रमशः सतियों का संक्षिप्त परिचय, संयम जीवन की महिमा को प्रस्तुत किया गया। भावना कांकरेचा द्वारा संयोजित इस कार्यक्रम में लाभार्थी परिवार श्री पारसचन्द्र त्रिलोकचंद गोलेचा, कार्यक्रम अतिथि महिला परिषद् की राष्ट्रीय महामंत्री गुणमाला बेन नाहर, राष्ट्रीय सहमंत्री सरलाबेन मेहता, शाखा अध्यक्ष शांतिबेन मेहता द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए। आभार बहु परिषद् की जूली गोलेचा ने व्यक्त किया।

इसी क्रम में तरुण परिषद् के तत्वावधान में भव्य स्तवन प्रतियोगिता आयोजित की गई। विकास पगारिया के संचालन में आयोजित संगीतमयी संध्या में 'मेरे घर के आगे दादा तेरा मंदिर बन जाये', 'दीवाना तेरा आया', 'जब कोई नहीं आता मेरे दादा आते हैं' जैसे भजनों से गूंज उठा। दिनेश सोलंकी, राजेन्द्र तरवेचा, मयूरी जैन एवं राजेन्द्र पटवा की निर्णायक समिति ने दो आयु वर्गों में प्रतियोगियों का चयन पुरस्कार हेतु किया। प्रथम सीमा गिरिया, जयेश संचेती, प्रदीप रूनवाल, द्वितीय प्रदीप रूनवाल, सुहानी नाहटा, तृतीय दिनेश जैन, दीक्षा खाबिया चयनित हुए जिन्हें कार्यक्रम के लाभार्थी अंकित गारमेन्ट्स एवं भैरव सिल्वर परिवार ने पुरस्कृत किया।

पर्युषण पर्व का समापन दिवस संवत्सरी महापर्व के रूप में मनाया गया।

श्री राजेन्द्र सूरि जैन ज्ञान मंदिर नमक मंडी में अहमदाबाद से पधारे गुरुभक्तों द्वारा प्रातः बारसा सूत्र का वाचन किया गया। श्रीसंघ द्वारा तपस्या के लिए सुधीर मेहता, छाया मेहता, शीतल कोठारी, पीस्ता तांतेड़ का बहुमान किया गया। भव्य चैत्य परिपाटी जुलूस निकाला गया जिसमें शहर के प्रमुख जैन मंदिरों के दर्शन कर वंदन किया गया। म.प्र. शिक्षा मंत्री श्री पारस जैन ने भी पूरे जुलूस में पैदल यात्रा की। श्रीसंघ अध्यक्ष राजबहादुर मेहता, मदनलाल रूनवाल, माणकलाल गिरिया, शांतिलाल रुनवाल, संजय कोठारी, हुकुमचंद चौरड़िया, रजत मेहता भी उपस्थित थे। अवंति पार्श्वनाथ तीर्थ पर राकेश वनवट द्वारा सामूहिक चैत्यवंदन करवाया गया। संध्या को संवत्सरी प्रतिक्रमण किया गया जिसमें समस्त जीव योनियों से उनके प्रति जाने-अनजाने हुए अपराधों के लिए क्षमायाचना की गई।

इसी श्रृंखला में श्री राजेन्द्र सूरि जैन नवयुवक परिषद् द्वारा प्रश्नमंच का आयोजन किया गया। अभयकुमार शांतिलाल सेठिया परिवार द्वारा प्रायोजित व वीरेन्द्र गोलेचा द्वारा संयोजित ज्ञानवर्द्धक कार्यक्रम में जयंतीलाल कोठारी एवं अभिषेक सेठिया द्वारा 50 प्रतियोगियों को

निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर आयोजित

अलीराजपुर। अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् शाखा अलीराजपुर द्वारा धीरज हास्पिटल पिपरिया के साथ मिलकर निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में मरीजों की निःशुल्क जांच, स्वल्पाहार एवं दवाइयों की व्यवस्था की गई। विशेष बीमारी से पीड़ित मरीजों की विशेष देखभाल के लिए अलीराजपुर से पिपरिया ले जाया गया। उल्लेखनीय है कि अभी तक शाखा द्वारा चार केंप आयोजित किये जा चुके हैं।

संस्था द्वारा मानव सेवा के किए जा रहे कार्य में शाखा द्वारा ग्राम बड़ावदा में पहली से आठवीं तक पढ़ने वाले आदिवासी बच्चों को स्कूल बेग का निःशुल्क वितरण किया गया। परिषद् की चारों इकाइयों द्वारा गर्मी के मौसम में निःशुल्क प्याऊ का संचालन भी किया गया। उल्लेखनीय है कि सेवा कार्यों को दृष्टिगत रखते हुए गत वर्ष शाखा को श्रेष्ठता के पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

उज्जैन में पर्युषण पर्व के दौरान किए गए कार्यक्रमों की झलकियाँ

धार्मिक फैन्सी ड्रेस प्रतियोगिता में भाग लेते बच्चे

बहु परिषद द्वारा सतियों का नाटकीय रूपांतरण

स्तवन प्रतियोगिता में प्रस्तुति देती नन्हीं बालिका

नवयुवक परिषद द्वारा पुरस्कार वितरण

प्रश्न मंच में उपस्थित परिषद के सदस्यगण

जैन विश्व

- श्री जीरावला महातीर्थ में ऐतिहासिक प्राण प्रतिष्ठा महा महोत्सव दिनांक 09 फरवरी 2016, ?????? (2017) गुरुवार को श्रीमद् विजय जयघोष सूरिश्वरजी म.सा. की निश्रा में होगी। प्रवेशोत्सव, संकुल उद्घाटन एवं जाजम चढ़ावे दिनांक 10 दिसम्बर 2015 रविवार को होंगे जिसमें समस्त जैन संघ सादर आमंत्रित है।

- समग्र जैन समाज के चारों संप्रदायों (श्वेतांबर मूर्तिपूजक, स्थानकवासी, तेरापंथी एवं दिगंबर सम्प्रदाय) के 16008 जैन मुनिराजों एवं साध्वियों के सन् 2015 के चातुर्मासों की एकमात्र पूर्ण एवं प्रामाणिक 'समग्र जैन चातुर्मास सूची 2015' पृष्ठ 516 का विमोचन श्वे.स्था.छ कोटी लींबड़ी अजरामर संप्रदाय के गच्छाधिपति आचार्य प.पू. श्री भावचंद्रजी म.सा. की पावन निश्रा एवं श्री अजरामर स्थानकवासी छ कोटि जैन संघ थाणा (प.) के तत्वावधान में संपन्न हुआ।

–बाबूलाल जैन 'उज्वल'

- श्री कस्तूरधाम पालीताणा में श्रीमद् विजयरत्नसेन सूरिश्वरजी म.सा. की निश्रा में श्री भद्रंकर परिवार द्वारा आयोजित द्विमासिक आराधना का समापन 19 सितंबर 2015 को हुआ जिसमें विभिन्न आराधकों ने अनेक तपाराधनाएं की।

  भगवान महावीर के पश्चात् जैन इतिहास में प्रथम बार सांगली नगर की सुश्राविका ज्योतिबेन रणजीतभाई शहा द्वारा गुणरत्न संवत्सर तप किया गया जिसमें उन्होंने 494 दिन में 439 उपवास की उग्र तपस्या की।

- खार मुम्बई। पंजाब जैन भातृसभा के तत्वावधान में द्वितीय चरम मंगल अधिवेशन का त्रिदिवसीय आयोजन हर्षोल्लास से सम्पन्न हुआ। जिसमें साध्वीश्री वैभवश्री 'आत्मा' जी ने निश्रा प्रदान की।

नहीं रहे संगीतरत्न रविन्द्र जैन

हिन्दी सिनेमा जगत के महान संगीतकार अपने शब्दों और संगीत को हमेशा के लिए अमर कर चल दिए। स्व. श्री रविन्द्र जैन सम्पूर्ण देश और संगीत जगत के लिए अमूल्य रत्न थे। भारत सरकार द्वारा कई पुरस्कारों से सम्मानित श्री रविन्द्र जैन की ख्याति देश ही नहीं समूचे विश्व में थी। उनके निधन से समाज एवं देश को भारी क्षति हुई है।

शाश्वत धर्म के संरक्षक

- शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया-सुरा निवासी।
- शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी।
- कटारिया संघवी भवरलाल, उगमचंद, वीरेन्द्र कुमार, राजेन्द्रकुमार, आशीष, गौरव पुत्र पौत्र-तोलाजी, धाणसा निवासी (फर्म-मेन्स एवेन्यु-बाई मिलन, बैंगलौर)
- शा. तिलोकचंद, नरसिंगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, पुत्र, पौत्र प्रतापचंदजी सूरत निवासी।
- संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हीरालाल, शांतिलाल, दिलीपकुमार जैन, पुत्र-पौत्र कन्नाजी कटारिया-जाखल नि.
- नैनावा श्री जैन श्वेताम्बर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा।
- श्री समकितगच्छीय जैन श्वे. संघ-धानेरा।
- स्व. मायाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपुत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जड़ावबेन कातरेला बोहरा-आहोर निवासी।
- मेहता तेजराज, जयन्तीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, पुत्र पौत्र रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी।
- मोरखिया चंदुलाल, बाबूलाल, रसिकलाल, महेशकुमार, परेशकुमार अल्पेशकुमार, रूपेश कुमार, पुत्र-पौत्र स्व. मौरखिया नानचंद मूलचंद थाई-थराद निवासी।
- स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ढेलीबाई सुपुत्र बाबूलाल, सुमेरमल, अशोक कुमार, रमणिया निवासी।
- स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतिलाल, किशोरकुमार पुत्र-पौत्र खुशालजी रामाणी, गुडा बालोवान (फर्म-सूर्यलोक ज्वेलर्स, नैल्लोर)
- श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, चैन्नई।
- शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेश कुमार, किशोर कुमार, कमलेश कुमार, अरविन्द कुमार पुत्र, पौत्र साकलचंद जेरूपजी भैंसवाडा नि.फर्म-गोल्डन ज्वेलर्स, नेल्लोर।
- स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र-कांतिलाल, प्रपोत्र-रमेशकुमार बागरा निवासी।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ चौराऊ।
- श्री श्वेताम्बर जैन संघ, सियाणा।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, थराद।
- दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी हस्ते-गुमानमल सांवलजी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई।
- सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांश कुमार, श्रेणिक कुमार पुत्र पौत्र बेचरदासजी छाजेड़, नैनावा निवासी हाल मु.सांचोर, राज.
- श्री गोडी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढ़ी, सोनारी, सेरी थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा।
- स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में, चंदनमल, कैलाशचंद हंसराज, शीतलकुमार, अश्विन कुमार परिवार, बागरा निवासी (राजस्थान फायनेन्स कॉरपोरेशन काकीनाडा)
- श्री विमलनाथ जैन दोशी देहेरासर, थराद।
- श्री सौधर्म बृहत्तपागच्छ जैन संघ, आनन्द (गुजरात)
- श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक श्री संघ थलवाड (राजस्थान)
- श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय जैन संघ जावरा (म.प.)
- श्री सौधर्म बृहत्पोगच्छीय जैन संघ वासणा (गुजरात)
- श्री महाविदेह तीर्थधाम नवागाम, सूरत (गुजरात)
- आहोर निवासी संघवी जुगराज, कांतिलाल, महेन्द्र, सुरेन्द्र, दिलीप, धीरज, संदीप, राज, जैनम पुत्र पौत्र शा. कुन्दनलालजी भुताजी श्रीमाल वर्धमान गोत्रिय परिवार-थाणे (महा.)
- श्री जैन श्वेताम्बर संघ-सामलकोट।
- श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, सूर्यरावपेटा-काकीनाडा (आन्ध्र प्रदेश)
- श्री सिमंधर राजेन्द्र जैन श्वे. मंदिर, मामुलपेट, बेंगलोर।
- श्री मुनिसुव्रत - राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर मंदिर, (एवेन्यु रोड बैंगलोर)

- श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- शा. अनराजजी छोगालालजी बुरड, सांचोरा वाला,फर्म-सोनू स्टील, सिकन्दराबाद, आ.प्र.
- शा. उत्तम, रमेश, हरीश, खुशालचंदजी, गेबाजी डामराणी, मैंगलवा वाला, फर्म पाक्षाल पावर किंग इलेक्ट्रीकल, हैदाराबाद (आ.प्र.)
- श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरिजी जैन ट्रस्ट, गुंटूर
- कोशिलाव निवासी शा. भूनतमलजी, मगराजजी ललवाणी फर्म-पारस एजेन्सीज, हैदराबाद
- बागरा निवासी शा. शेषमलजी, गुलाबचंदजी फर्म जैन एण्ड कं., एलुर
- शा.अम्बालाल, दलीचन्द, बाबूलाल, शांतिलाल, प्रकाशचंद, नैनमल, उत्तमचंद, रमेशकुमार पुत्र पौत्र चमनाजी बुगामवाला-सुरापुर (कर्नाटका)
- शा. शांतिलालजी देवीचंदजी भंडारी, फर्म-स्वस्तिक ट्रेडिंग कं., हैदराबाद (आ.प्र.)
- स्व. कबदी हेमराजजी पूनमचंदजी की स्मृति में पुत्र नरेन्द्रकुमार दिलीपकुमार, पौत्र विनोद, अमीत, जसवंत, लोकेश और हरेश सायला निवासी, फर्म प्लायवुड सेन्टर, विजयवाड़ा
- मातुश्री सजनबाई स्व. श्री राजमलजी वीरचंदजी सेक्रेटरी पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र शाह दिलीपकुमार, सचिनकुमार, सर्वेषकुमार, हार्दिक कुमार, रोशनकुमार, समस्त सेक्रेटरी परिवार कुक्षी (म.प्र.) फर्म- पक्षाल प्रोडक्ट, मूनलाईट रिचार्जेबल टॉर्च के निर्माता।
- जैन संघ - लाखणी
- भीनमाल निवासी श्री शोभालालजी भागचंदजी धोकड़ के पुत्र राजेन्द्रकुमार, पौत्र विक्रम, अभिषेक, परेश द्वारा,फर्म गौतम वस्त्र भंडार, गणेश चौक, भीनमाल जालोर (राज.)
- धाणसा निवासी संघवी स्व. सुखराजजी पिताजी की स्मृति में धर्मपत्नि-शांतिदेवी, पुत्र-सुमेरमल, अशोककुमार श्रीपाल, संजय, आकाश, अमृत
- कटारिया परिवार,फर्म शा. सुखराज पिताजी, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- सौधर्मवृहद तपोगच्छीय जैन श्वे. त्रि. श्री जैन संघ दाधाल
- आहोर निवासी संघवी मोहनलाल, तेजराज, प्रवीणकुमार, यतीन्द्र, राजेन्द्र, आशीष पुत्र-पौत्र वक्तावरमलजी हीराचन्दजी कुहाड़ परिवार आहोर नि. फर्म-राजेन्द्र पेपर्स, बैंगलौर
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. दरजमलजी, स्व. उकचन्दजी, स्व. हस्तीमलजी, स्व. तगराजजी की स्मृति में : हिराणी परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. शा. भारतमलजी भगाजी एवं धर्मपत्नी पातीबाई, पुत्र-मांगीलाल, गणपतराज, रमेशकुमार, कैलाशकुमार एवं समस्त संघवी वेदमुथा परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी संघवी पारसमल, नेमीचन्द, जितेन्द्र, संजय, रितेश, वेदमुथा परिवार
- थराद निवासी थरू फूलचंद, पानाचंद परिवार द्वारा आचार्यश्री जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के चातुर्मास निमित्त
- स्व. मुनिराज श्री हरिशचंद्रविजयजी म.सा. की पुण्य स्मृति में आहोर नि.मुकेशकुमार गौतम गुलेच्छा, पुत्र पौत्र मोहनलालजी हिम्मतलालजी फर्म-अरविन्द टेक्सटाईल, राजमुद्री
- रेवतड़ा निवासी संघवी सोकलचंद, कानराज, अशोककुमार, अरविन्दकुमार, चन्द्रकान्त, अखिलकुमार पुत्र-पौत्र शा. इन्द्रमलजी भगाजी परिवार

  फर्म:शा. इन्द्रमलजी सुखराजजी, बैंगलोर
- उज्जैन निवासी शा. श्री चांदमलजी, नवीनकुमार, मुकेशकुमार, अंकितकुमार पुत्र-पौत्र श्री सेवारामजी बाफणा परिवार
- यतीन्द्र भवन जैन धर्मशाला-पालिताणा
- स्व. मातुश्री अमीयाबाई एवं स्व. भाई ओटमलजी की स्मृति में पुत्रवधु प्रसन्नदेवी पुत्र हेमराज पौत्र रोहित, मितेश चत्तरगोत्रा हस्तीमलजी धनाजी परिवार चौराऊ निवासी फर्म-पद्मावती मार्केटिंग-बेंगलौर (कर्नाटक)
- श्री सौधर्म वृहद तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ, सूरत

कीर्ति स्तंभ के साथ ही मोहनखेड़ा तीर्थ पर निर्मित

श्री जयन्तसेन म्युजियम

कश्मीर से कन्याकुमारी तक परिभ्रमण करने वाली
गुरु राजेन्द्र शताब्दि अखण्ड ज्योत यात्रा
रथ में विराजित दादा गुरुदेव

श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

की परम प्रभावशाली प्रतिमा
इस म्युजियम में स्थापित है....
त्रिस्तुतिक संघ के प्रत्येक गांव से स्पर्शित एवं
लाखों गुरुभक्तों द्वारा पुजित इस भव्य प्रतिमा के
दर्शन मात्र से निश्चित आनन्द की अनुभूति होती है।
दर्शनार्थ अवश्य पधारें...

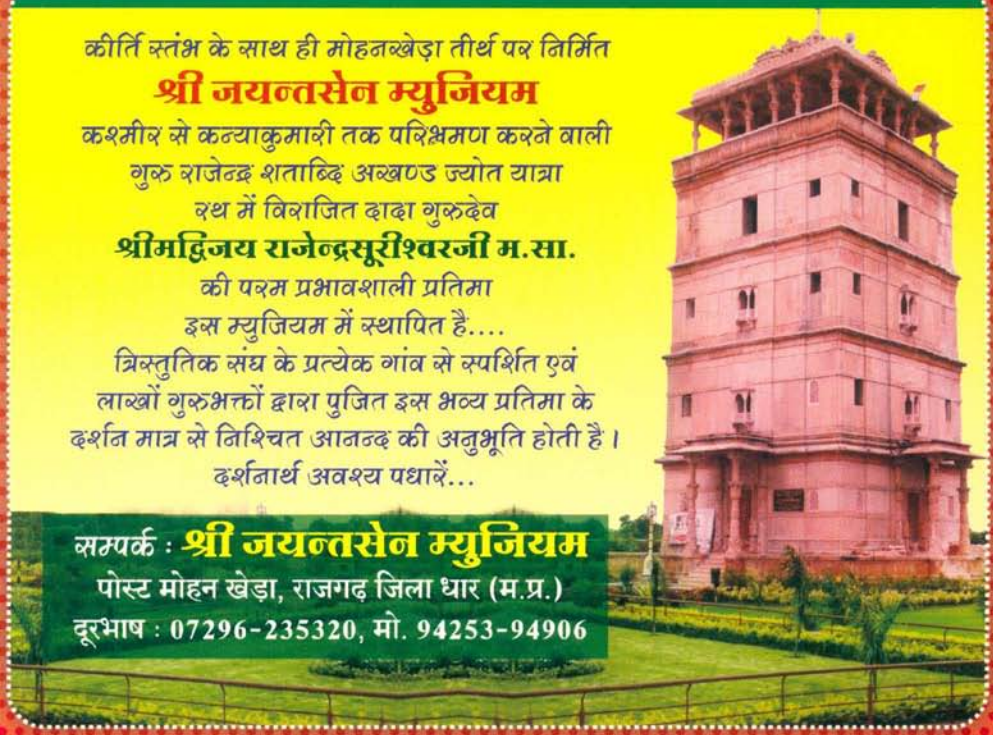

सम्पर्क : **श्री जयन्तसेन म्युजियम**
पोस्ट मोहन खेड़ा, राजगढ़ जिला धार (म.प्र.)
दूरभाष : 07296-235320, मो. 94253-94906

गुरु जन्मभूमि हमारी तीर्थभूमि..... दर्शनार्थ अवश्य पधारिये.....

राष्ट्रसंत, शासन सम्राट, सुविशाल गच्छाधिपति, वचनसिद्ध आचार्यदेव
श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. जन्म भूमि पेपराल महातीर्थ में दर्शनार्थ अवश्य पधारिये...

तीर्थ प्रेरक

शासन सम्राट आचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न मुनिराजश्री नित्यानंद विजयजी म.सा.

साथ ही आप करेंगे मूलनायक मधुकर महावीरस्वामी भगवान की ६१ इंची विशाल प्रतिमाजी आदि जिनबिम्ब की मनोहारी प्रतिमाजी, दादा गुरुदेव की विशाल ५१ इंची प्रतिमाजी आदि गुरु परंपरा एवं आचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की जीवित प्रतिमा जी के दर्शन। विश्व का प्रथम ऐसा मंदिर जिसकी स्पर्शना हेतु सीढी नहीं रेम्प के माध्यम से पहुँचा जा सकता है। सिद्धार्थ-त्रिशला, ऋषभ-केशरी एवं स्वरूप-पार्वती मातृ स्मृति मंदिर के दर्शन का लाभ।

तीर्थ परिसर में निर्माण हो चुका है....

साधु भगवंतों के ठहरने का उपाश्रय
श्री जयन्तसेनसूरि चैतन्य आराधना भवन
आचार्यश्री जन्मभूमि स्थित कुटिया पर विशाल स्मारक
जामराणी चबूतरा

तीर्थ परिसर में निर्माणाधीन है....

- मधुकर शान्ति यात्रिक भवन
- मधुकर उत्तम आराधना भवन
- मधुकर यतीन्द्र आराधना भवन

निवेदक : गुरु जयन्तसेनसूरि जन्मभूमि जैन शासन प्रभावक ट्रस्ट पेपराल (गुज.)

भारत सरकार पंजीयण क्रमांक 13067/57
Regd. News Paper Under Regn. No. CPMG KA/BG (S) 2005/2006-08
एल/RNP/MP/MANDSAUR/113/15-17
Posting Date at Mandsour on 3rd Day of Every Month. कुल पृष्ठ कवर सहित 128

दुनिया से सहारा क्या लेना, तेरा एक सहारा काफी हैं ।
देखूं तो क्या देखूं गुरुदेव, तेरा एक नजारा काफी हैं ।।

सुविशाल गच्छाधिपति, जैनाचार्य, परिषद् प्रेरणापुंज
राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.
के चरण कमलों में संघवी शेषमलजी रामाणी परिवार का
कोटी - कोटी वंदना

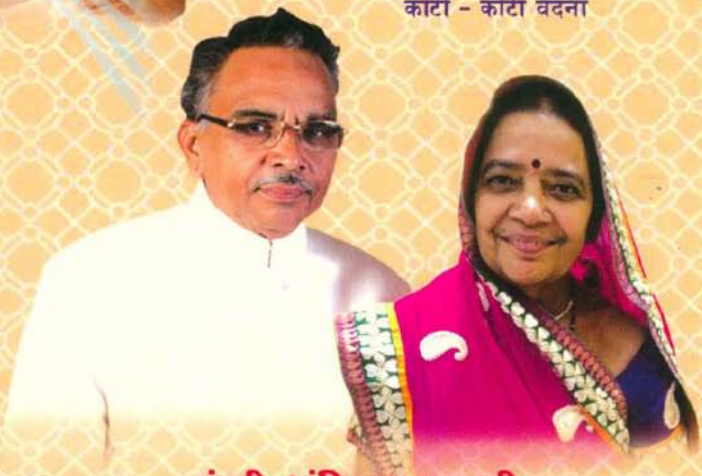

संघवी शांतिलाल रामाणी

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष	:	अ.भा. श्री सौधर्म वृहत्तपोगच्छीय जैन श्वेतांबर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ
राष्ट्रीय परामर्शदाता	:	अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्
राष्ट्रीय संयोजक	:	शाश्वत धर्म
मुख्य संयोजक	:	आन्ध्र प्रदेश बुलियन एंड डायमंड मर्चन्ट्स एसोसिऐशन
शाश्वत अध्यक्ष	:	नेल्लोर डिस्ट्रीक्ट बुलियन एंड डायमंड मर्चन्ट्स एसोसिऐशन
अध्यक्ष	:	श्री जैन श्वेताम्बर मूर्ति पूजक संघ - नेल्लोर

SHANTILAL & SONS
JEWELLERS
DIAMONDS • GOLD • SILVER
Jewel Junction, Achari Street,
Nellore - 524 001 (A.P)
Ph.: 0861-6611777, 2328185,
e-mail:shantilalramani@rediffmail.com